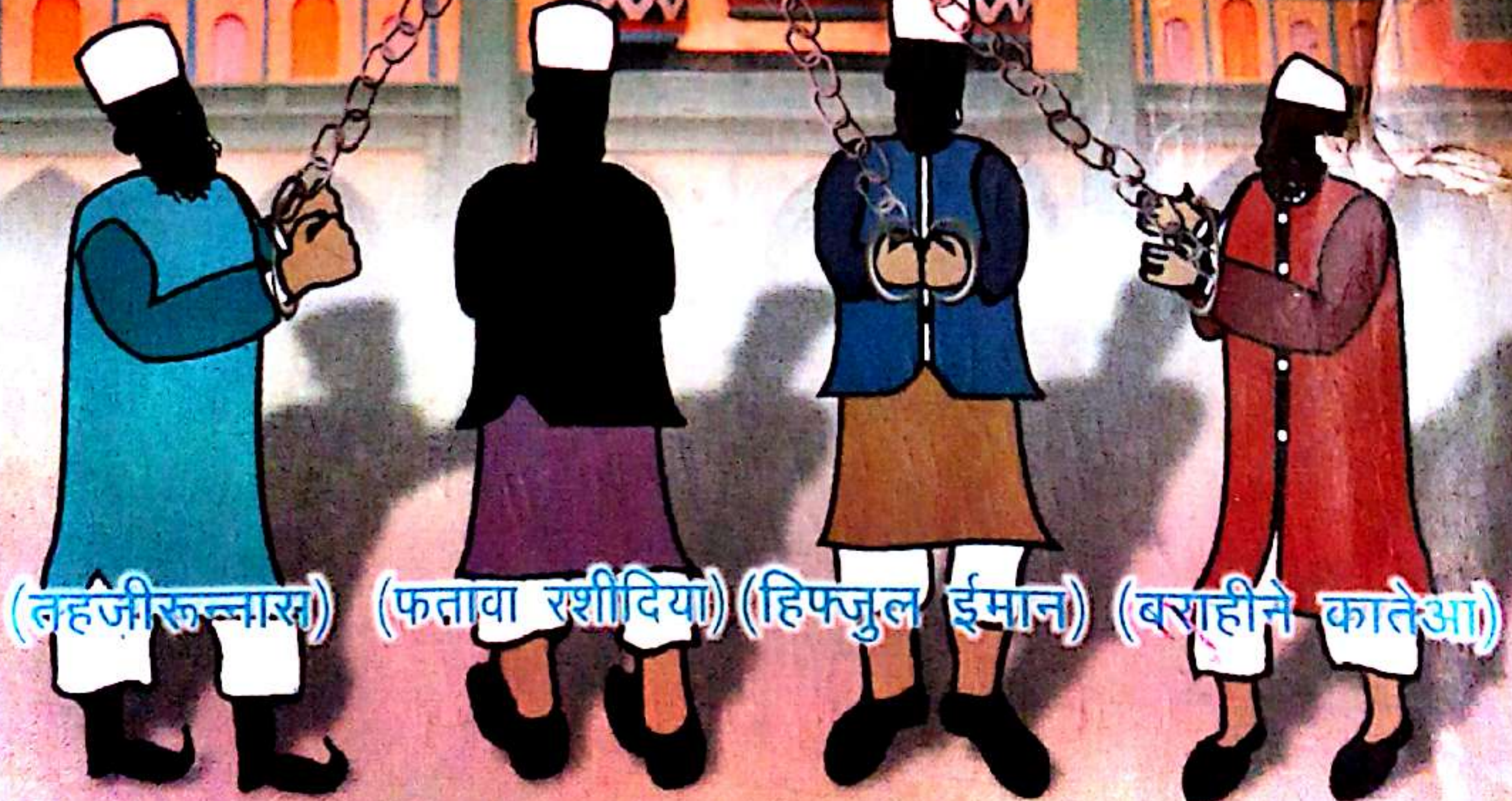


गुलोगुलची का गेला बुलबुले खुश लेहजा न कर।

तू गिरफ्तार हुई अपनी सदा के वाइस॥

मुजारिम अदालत में

मौलाना
सिराजुल क़ादरी
बहराइची



गाज़ी किताब घर
गंगवल बाज़ार बहराइच (युपी)

786/92

गुल व गुलची का गिला बुल बुले खुश लहजा न कर
तू गिरिफ्तार हुई अपनी सदा के बाइस

और तुम पर मेरे आका की इनायत न सही

नजदियो कलेमा पढ़ाने का भी एहसान गया

मुजारीम अदालत में



मौलाना शिराजुल कादरी बहराइची

स्वतीब व इमाम मुस्ताफिर खाना मस्जिद

पाक मोडया स्ट्रीट 33, बोहरी मुहल्ला, मुंबई 3

मोब० 9870742302

नाशिर

गाजी किताब घर साबरी यतीम खाना

जामेआ सरकार आला हजरत

गंगवल बाजार, बहराइच शरीफ (यूपी) भारत

जुमला हुक्कूक बहक्के नाशिर महफूज़ हैं
नाम किताब: मुजरिम अदालत में
मुसन्निफ़: हज़रत मौलाना सिराजुल कादरी बहराइची
तसहीह: हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद अशरफ़ रज़
साहिब किबला नूरी मुफ़्ती ए महाराष्ट्र
सन्ने इशअत: 2008

तादाद: 1000

हदयह: पचास रुपये Rs.60/=

मिलने के पते

न्यु सिल्वर बुक एजैन्सी: मो0 अली रोड मुंबई 3

नाज़ बुक डिपो: —————> मो0 अली रोड मुंबई 3

इकरा बुक डिपो: —————> मो0 अली रोड मुंबई 3

मकतबा इसमाईल हबीब मस्जिद: —————> मुंबई 3

मकतबा जामे नूर: देहली

मकतबा नईमया: देहली

रज़ा बुक डिपो: देहली

फ़ारुक़या बुक डिपो: देहली

जसीम बुक डिपो: देहली

रज़वी किताब घर: देहली

ताज बुक डिपो: नागपुर

ताज बुक हाउस: हैदराबाद

हनीफ़ बुक डिपो: नागपुर

लतीफ़िया बुक डिपो: नागपुर

जावेद बुक डिपो: कोलकाता

रहीमया बुक डिपो: पूना

नय्यर बुक सेलर: इलाहाबाद

नाज़ बुक डिपो: कोलकाता



फ़ेहरिस्त

तकरीज	A	देवबंदी मुल्लाओं की.....	45
किताब और साहिबेकिताब के.....	02	अल्लाह और रसूल.....	49
तअस्सुरात	08	अकाबिरीने देवबंद.....	50
पेशेनविशत	09	चे निसबत खाक रा	52
शर्फ़ इंतेसाब	12	लक़ब रहमतुल्लिलआलमीन	54
नज़रान ए अकीदत	13	ज़ाते आफ़ताबे रिसालत.....	55
नज़रे अकीदत	13	फ़हेश हिकायात व इरतिकाब	56
इज़हारे हकीक़त	14	अकाबिरीने देवबंद का ज़ौके....	63
बुरा मानगए	18	फ़हेश मिसालें और फ़हेश.....	65
इल्मे ग़ैब	19	तफ़रीहे तबअे देवबंद	69
मोल्वी ख़लीलअहमद.....	19	तवाइफ़ और अकाबिरीने.....	70
मोल्वी इस्माईल देहलवी	20	लाहोला वला कुव्वता इल्लाह...	72
मोल्वी रशीद अहमद गंगोही	20	तबरूकात	74
अकाबिर उलमा ए देवबंद	21	नजिस तबीअतैं	78
माँ के पेट में क्या है	22	मज़ारात पर हाज़री	82
सुबूते इल्मेग़ैब	23	मुनाफ़िक़ते देवबंदियत	84
नमाज़ में नबी का ख़याल	29	कव्वा खानेका जवाज़	86
ख़यालाते फ़ासिदह	30	उम्र भर शौक़ से	87
अंबिया व औलिया को.....	32	शिरक़ फ़िल अस्मा	89
झूट ही झूट	34	अल्काबे किब्ला व काबा.....	90
दिलके वसवसों पर	37	बिदअतों के परचम तले	92
मरनेका हाल वक़्त.....	40	मुनाफ़िक़ों की निशान देही	95
हयात बादे मौत	42		

फेहरिस्त

गुमराह कुन किताबें	98	बुल हवस.....	146
शरीअत में तबीअत	99	मआखिज	153
मनी आरडर के अदमे जवाज	100	हदिय ए तशक्कुर	154
करंसी नोट के मुतअल्लिक	102	एक अहेम हुजारिश	155
मसनदे इफ़ता का ग़लत.....	103	मैं गुसताख़े रसूल था	156
उलमा ए देवबंद को खाने.....	105		
पेट के पुजारी बेचारे वहाबी	113		
अशरफ़ अली का नया कलेमा	117		
शुतरे बे मुहार	119		
ईदैन का मुसाफ़ह व मुआनिकह	121		
सुन्नत को बिदअत	122		
मोहर्रम की सबील हिंदू.....	124		
यज़ीद के मुतअल्लिक उमदह.....	125		
बिही ख़वहाने यज़ीदियत	126		
हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के व़ालिदैन करीमैन.....	128		
उलमा ए देवबंद की स्याह.....	128		
अल्लाह तआला की शान के.....	130		
तनकीसे ज़ाते इलाहियाह	131		
अपना मसलक	133		
लक़ब आला हज़रत का.....	135		
सय्याद जाल में फंस गया	138		
नबी के ईमान से इंकार	141		
मीलाद व क़याम पर	142		

किताब और साहिब किताब के बारे में

अजः नब्बाजे फितरत खतीबे एहले सून्नत हज़रत अल्लामा मूफ़ती
मोहम्मद सूलतान रज़ा साहिब किबला बहराइची

نحن عباد محمد صل عليه وسلم

الله رب محمد صل عليه وسلم

हिन्दुस्तान का सूबा उत्तर प्रदेश इल्म व फज़ल का गहवारा रहा है इल्मेदीन जिस क़दर इस सूबे से परवान चढ़ा है किसी कि नज़रों से पोशीदा नहीं है—इल्म व फज़ल कि एक से एक मा ए नाज़ हस्तियाँ यहाँ पैदा हुयीं जिन्होंने अपने इल्म व फज़ल का खिराजे तहसीन पूरी दुनिया से वसूल किया इसी उत्तरी भारत में एक तारीख़ी बसती ज़िला बहराइच शरीफ है जहाँ फातहे आजमे हिन्द हुज़ूर सय्यद सालार मसऊद गाज़ी शहीद अलैहिरहमा का मज़ारे मुक़द्दस आज भी मरजए खलाइक व मम्ब ए फुयूज़ व बराकात व सरचश्मए करामत है जिनकी देहलीज़ से मादर ज़ाद अन्धों को आँखें कोढ़ियों को काया महरुमुल किस्मत बाँझों कि गोद भरती है ये साहिबे मज़ार की वोह करामात हैं जिनको सिर्फ़ किताबों में पढ़ा ही नहीं जा सकता बल्कि हरसाल उनके मेले के दिन माथे कि नंगी आँखों से देखा भी जा सकता है इसी महबूते अनवारे ऐज़दी व काशिफे असरारे सरमदी सय्येदिना सालार मसऊद गाज़ी क़ुद्दसा सिरों हूल क़वी के दयारे पाक में और इसी ज़िले में एक बस्ती गंगवल बाज़ार के नाम से मौसूम है ये बस्ती छोटी मगर बहुत खूब सूरत है फाज़िले गिरामी वक़ार हज़रत मौलाना सिराज अहमद मोहम्मद सिराजुल क़ादरी साहिब इसी बस्ती में बतारीख़ 1 जुलाई 1968 ई० में पैदा हुए इब्तेदाई तालीम अपने घर के करीब एक मक़तब में मोल्वी अब्दुल शक़ूर व मोल्वी मन्सूर अली से हासिल की बिरादरे कबीर जनाब यार मोहम्मद साहिब ने 8 साल कि उम्र में मदरसा उस्मानिया नियाजुल उलूम बड़ का गाँव में दाखिल कर दिया, जहाँ से 1978 ई० में हिफज़े कुरआन की तकमील की, बादहू यतीम खाना सफ़ विख्या करनैल गंज गोड़ा में 1980 ई० तक चश्मए इल्म से सैराब होते रहे, फिर हुसूले इल्म के जौके सलीम और वालिदैन की तमन्ना ने 1981 ई० में जामिआ

अरबिया अनवारुल करआन बलराम पुर ,गोंडा पहुँचा दिया ।

मौलाना ने बड़ी दिलजमजी व दिल लगी से तौलीम हासिल कि और 1988ई0में नियाबते रसूल की सनद हासिल की और उस वक्त से लेकर अब तक खिदमते दीन में मसरूफ हैं । मौलाना का हुल्ला कुछ इस तरह है । गोल चेहरा, चौड़ी पेशानी, बड़ी और सियाह आँखें तीखी नाक, मुतबस्सिम होंट भारी मगर मुतरन्निम आवाज, सर पर मखमली टोपी, आँखों पर चशमा, कली दार कुर्ता शलवार, गुदाज जिस्म, मुतवस्सित कद । ये हैं मौलाना मोहम्मद सिराजुल कादरी मददा जिल्लुहुल आली

5/ मुहर्रमुल हराम 1423 हिजरी की वोह तारीख जब सिलसिला ए बकाइया के एक मर्दे कलन्दर सूफी सेठ मकबूल अहमद साहिब बकाई मुरीदे खास पीर रोशन जमीर वली ए कामिल हजरत सूफी मो० शरीफ साहिब बकाई मददाजिल्लुहुल आली ने काजी पुरा मुंबई में मौलाना मोहतरम से तअरुफ कराया । जिस वक्त राकिमुल हुरूफ मोहतरम से शरफे लिका हासिल कर रहा था उस वक्त उन के हाथ में एक किताब का मुसव्विदा था मेरी तरफ बढ़ाते हुए मौलाना ने फरमाया ज़रा इस को आप देखें मैंने किताब लेते हुए देखा सरे वर्क पर किताब का नाम जली कलम से रक़म था मुजरिम अदालत में मैंने कहा वाह मौलाना आप ने नाम तो बहुत उम्दा तजवीज़ किया है ताहम ये तो बताइये कि कौन कौन से मुजरिमों को आप ने अदालत में पेश किया है आया वोह मुजरिम चोर हैं या डाकू राह ज़न कज़्ज़ाक हैं या बद अमल वो बद किरदार वो बद अखलाक इन्सान और फिर किसकी अदालत में पेश किया है मौलाना ने जवाबन कहा नहीं नहीं मज़कूरा बाला फेहरिस्त में से कोई मुजरिम नहीं तो मैंने गुज़ारिश की कि फिर कौन हैं वोह मुजरिम जवाब देते हुए फरमाया वोह ऐसे मुजरिम हैं जो रुकू वो सजदा करने वाले क़याम वो कुऊद में रहने वाले तिलावते कुरआन वो तसबीह पढ़ने वाले छोटी टोपी लम्बा कुर्ता ऊँचा पाजामा जेब तन करने वाले सर्दी वो गर्मी की परवाह किये बगैर जमाअत लेकर बिलाद वो क़रयात कोह वो जबल दश्त वो

सेहरा में बादया पैमाई करने वाले लोग हैं मैंने कहा मौलाना आप लोग भी फसाद की बात करते हो! जो इतनी खूबियों का मुतहम्मिल हो भला बताओ कि वह मुजरिम क्यों कर होगा. फिर हम देखते हैं उन बेचारों को कि फरिशता सिफत बनकर तबलीग़ कि खातिर घर बार छोड़कर, बीवी बच्चों को खैरबाद कहकर कारोबार छोड़ कर 40,40 दिन 90,90 दिन तक दुनिया से बेज़ार हो कर दूर दराज़ का सफर करते हैं बोलो वह मुजरिम कैसे? फिर ये कि कलेमा व कलाम में, रोज़ह व नमाज़ में हज व ज़कात, वहदानियत व रिसालत में वह आप के मसावी हैं! कुरआन व हदीस, फिकह व कलाम में वही किताबें जो आपके यहाँ हैं वही वह भी पढ़ते हैं, हैअत, सूरत व शकल लिबासे इसलामी में वह आपके शरीक, फिर वह मुजरिम कैसे और उनका जुर्म कैसा? मस्जिद के गोशे में रात की तारीकी या दिन के उजाले में उन्होंने ने कौन सा जुर्म किया है जिसकी बिना पर आप ने उस अल्लाह वाली जमाअत को मुजरिम करार दिया है? मैंने कहा डाक्टर इक़बाल ने सच कहा है!

मन फेअत एक है इस क़ौम की नुक़सान भी एक
एक ही सब का नबी दीन भी ईमान भी एक
हरमे पाक भी अल्लाह भी कुरआन भी एक
किया बड़ी बात थी होते जाँ मुसलमान भी एक

जब मेरी तीखी गुफ्तगू देखी तो मौलाना सिराजुल कादरी साहिब कुछ नरम पड़े मगर उनके हाथों में किताब का एक बंडल था जिसमें उस फरिशता सिफत जमाअत कि ढेरसारी किताबें थीं, राकिमुल हुरुफ की तरफ बढ़ाते हुऐ फरमाया, ज़रा इस कलेमा गो तौहीद के मतवाले तवहहुब परस्त ज़ाहिदाने खुशक के वह अक़ाइदे बातिला व अक़वाले कुफरिया मुलाहेज़ा फरमायें।

जो उनके बुजुर्गों की किताबों से ज़ाहिर हैं, जिस पर पूरी वहाबी बिरादरी का ईमान व अक़ीदा है मैंने कहा मौलाना आप ही पढ़कर सुनाइये मैं यह ढेर सारी किताबों में कब तक आँखें फोड़ता रहूँगा. फिर मौलाना कादरी साहिब ने किताबों के औराक़ पलटने शुरू किये और इबारतें इस तरह पढ़ना शुरू कीं।

(1) ये हिफजुल ईमान है इसके मुसन्निफ वहाबी जमाअत के बहुत बड़े आलिम जनाब मौलाना अशरफ अली थान्वी साहिब हैं, इस में उन्होंने नें हुजुरे अकरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्म को बच्चों, पागलों, जानवरों, दरिन्दों के बराबर माना है!

(मआज़ल्लाहे रब्बिलआलामीन)

(2) ये तहजीरुन्नास है इसके मुसन्निफ खुद साख़ता बानी दारुल उलूम देवबंद मौलाना कासिम नानोतवी हैं इसमें उन्होंने नें हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को खातमुन्नबियीन होने से इनकार किया है!

(3) ये अलजुहदुल मुकिल है इसके मुसन्निफ मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी हैं! इसमें उन्होंने ने अल्लाह तआला को झूटा लिखा है और यह लिखा कि जो गन्दे धिनो नें काम बन्दा कर सकता है वह खुदा भी कर सकता है! (मआज़ल्लाही रब्बिलआलामीन)

(4) ये तकवि यतुल ईमान है इसके मुसन्निफ मोलवी इसमाईल देहलवी नें लिखा है कि नबी हो या वली, अल्लाह की शान के आगे चमार से ज़्यादा ज़लील है! (मआज़ल्लाहे रब्बिलआलामीन)

(5) ये फतावा रशीदिया है जिसके मुसन्निफ मुफ़्ती मौलाना रशीद अहमद गंगाही हैं! इसमें उन्होंने नें लिखा है कि काला कच्चा खाना सवाब है!

(6) ये रिसाला अल इमदाद है जिसके मुसन्निफ व मुरत्तिब मौलाना अशरफ अली थानवी हैं! जिसमें उन्होंने नें

لا اله الا الله اشرف على رسول الله

सही और दुरुस्त बताया गोया अपना कलेमा पढ़वाया !

जिस वक़्त मौलाना इबाराते उलमा ए देवबंद सुना रहे थे, मैं बहरे हैरत व इसतेजाब में मुसतगरक़ था ये इस्लामी लिबादे में इस्लामी जमाअत नहीं बल्कि शैतानी जमाअत है ये जमाअत खुदा परस्त नहीं बल्कि तवहहुब परस्त है जिसकी ज़बान व कलम से बुजुर्गाने दीन अंबिया व मुरसलीन की अक़ीदत व मोहब्बत का खून हो रहा है हक़ तो ये है कि हक़ व सदाक़त और इन्साफ़ का खून हो रहा है तअज्जुब तो ये है कि इल्मे ग़ैबे नबी, इख़तियाराते नबी, हयातुन्नबी, शफ़ाअते नबी के मज़बूत

व मन्सूस किले पर राकिट दागने वाले कोई और नहीं बल्कि अपनी ही शक्ल व सूरत वाले लोग हैं—जियाब सियाब में शिकार कर रहे हैं और भोली उम्मत उनके केद व दज्जल से बे खबर है—सच फरमाया आला हजरत मुजद्दिदे आजमे दीन व मिल्लत अलैहिर रहमा ने

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है
सोना पास है सूना बन है सोना जहेर है उठ प्यारे
तू कहता है मीठी नींद है तेरी मत ही निराली है
आँखें मलना झुंझुला पड़ना लाख जमाही अंगड़ाई
नाम पर उठने के लड़ता है उठना भी कोई गाली है

जब ये हालत मारे आस्तीन की देखी तो मैंने कहा कि यह जमाअत खुदा परस्त नहीं बल्कि तवहहुब परस्त है फिर ना चीज राकेमुल हुरुफ ने किताब का मुसव्विदा लिया ,अपने साथ कयाम गाह पर लाया रातों रात तकरीबन पूरी किताब देखी अपनी नौइय्यत की ये एक अनोखी और निराली किताब है जो हजरत अल्लामा फाजिले गिरामी वकार मौलाना सिराजुल कादरी साहिब बहराइची की अनथक मेहनतों व काविशों का नतीजा है मौसूफ ने अपनी पूरी सलाहिय्यतों को बरू ए कार लाकर एक अजीम सरमाया कौम व मिल्लत को अता किया है राकेमुल हुरुफ तो ये कहता है कि मुजरिम अदालत में ये किताब है या आसमाने कहर व गजब की बरके साइका जो खिरमने वहाबियत को यक्सर भशम करती नजर आयेगी जमाते वहाबिया के तखरीबी अनासिर व खौफ नाक साजिश का दामे हमा रंग इस किताब की ज़रबे वाहिद ही से तारे अन्कबूत की तरह बिखर ता नजर आएगा —ये किताब बद अकीदगी व बद मजहबी के तेज व तुंद तूफान में रोशनी का बुलंद मीनार साबित होगी जिसकी तजल्लियात तारीकियों का सीना चीर कर गुमराही के गरदाब व तलातुम में फंसे इन्सानों को हिदायत की शाहराह पर गामजन कर देगी मुझे इस किताब पर लिखते हुए कल्बी मसररत व शाद मानी फरहत व इंबिसात हासिल हो रहा है जो अपने अंदाजे बयान में दिल फरेब असलोब निगारिश में अनोखी और

शुकूक व शुबहात के रद में निहायत बेबाक जिसका दामन कवी दलाइल से पुर है जिसमें वहाबियों देवबंदियों नजदियों की एक हौलनाक साजिश को बे नकाब किया गया है जिसके तार व पौद को इन्तिहाई महारत और अजीब सुबुक दस्ती से बुना गया था जिस पर कमाले महारत से नमाज रोजे का नजर फरेब और दिलकश मलम्मा किया गया था मेरी मुराद फिरक ए वहाबियत है जो मिल्लत को दीमक की तरह अन्दर से खोख्ला बना रही है और जिसने अपनी बद अकीदगी, बदचलनी कजरवी व गुमराही से इस्लाम में फसाद बरपा कर दिया है राकिमुल हुरुफ साजिशे वहाबियत को वाशिगाफ करने पर फाजिले मुहक्कि क को कल्ब की गैहराईय्यों से मुबारक बाद पेश करता है मौसूफ की ये मुजाहिदाना कोशिश मुस्तहिक्के तहसीन है इस किताब में उन्होंने वहाबियत जैसे मोहलिक मर्ज का कामयाब इलाज करने की निहायत सई ए जमील की है उनके इस काम पर रश्क करने वालों को रश्क करना चाहिये !

राकिमुल हुरुफ की यही आरजू और यही दुआ है ।

खुदा ऐसी कुव्वत दे इनके कलम में

कि बदमजहबों को सुधारा करें यह

وصلی اللہ تعالیٰ علی حبیبہ الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ واکمل التسلیم

मोहम्मद सुलतान रज़ा नूरी बहराइची
बानी— दारुल उलूम मुफति ए आजमे हिंद
गजाधर पुर, बहराइच शरीफ यू पी



तअस्सुर

फाजिले माकूलात व मन्कूलात
हज़रत अल्लामा कारी सगीर अहमद साहिब किबला बहराइची
हर दौर में उठते हैं यजीदी फितने
हरदौर में शब्बीर जन्म लेते हैं।

आज के इस पुर आशोब दौर में जिस तरह कलेमा, नमाज़ वगैरह की आड़ में भोले भाले मुसलमानों को गुमराह किया जा रहा है इस से बचना हर आदमी के बस की बात नहीं लिहाज़ा ऐसे लोगों की पहचान के लिए फाजिले मुसन्निफ मुजाहिदे सुन्नियत अलम्बरदारे मसलके आला हज़रत मौलाना सिराजुल कादरी बहराइची ने कलम उठाया तो उनकी बे बहा तसनीफ "मुजरिम अदालत में" सामने आई जिस में फाजिले मुसन्निफ ने एहकाके हक व इबताले बातिल का खूब मुजाहेरह किया है जिस को पढ़कर हर मुसलमान उन गुमराह गरो के अकाईदे बातिलह व अफकारे कासिदह व नज़रयाते फासिदह से भरपूर वाकिफ हो सकता है यँ तो इस सिलसिले में बहुत सी किताबें दूसरे मुसन्निफीन की मंज़रे आम पर आई हैं लेकिन ये किताब अपनी मिसाल आप है अज़ी कब्ल फाजिले मुसन्निफ की निहायत ही मारकतुलआरा तसनीफात में "इसलामी हीरे, बनाम सुन्नी कोइज़, गुस्ताख कलम, अनवारे कुरआनी बर्क वेहदत, बर्क रज़वियत, पयामे रहमत दशते करबला, तोहफ ए रमज़ान, आदाबे जिन्दगी, मोजिज़ ए लुआबे दहन," वगैरह मंज़रे आम पर आकर लोगों से खिराजे तहसीन वसूल कर रही हैं इन तसनीफात से ही अंदाज़ा लग रहा है कि मौसूफ किस कदर फुआल व मुतहरिक हैं और सुन्नियत का काम कर रहे हैं दुआ करता हूँ कि मौला तआला इस किताब को मकबूले खास वो आम फरमाए और मौसूफ को तवानाइ ए सिकन्दरी अता फरमाए और ज़ियादा से ज़ियादा खिदमते दीने मतीन की तौफीक अता फरमाए —आमीन
बिजाहे सय्यदुल मुरसलीन सलवातुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन

अहकरूल इबाद

सगीर अहमद बहराइची

खादिम जामिआ गाज़िया फैजुल उलूम
बख़शी पुरा दरगाह रोड़ बहराइच शरीफ यू पी

पेशे नविशत

इस्लामी हीरे के तअल्लुक से कुछ मजामीन की तराहीह की गरज से ब हमराह अलम बरदारे मसलके आला हजरत हजरत अल्लामा नूर मोहम्मद साहिब किबला नूरी, अशरफुल फुकहा हजरत अल्लामा मुफ्ती अशरफ रजा साहिब किबला कादरी मुफ्ति ए महाराष्ट्रा की बारगाह में हाजरी का शर्फ हासिल किया ढेर सारी दुआओं से नवाजने के बाद फर माया कि मौलाना आप नजदी व वहाबी भेड़ियों के सारे गुस्ताखाना मजामीन यक जा कर डालये और जलालत व नजदियत के सियाह खाने में उन दरिन्दों को सर फोड़ने पर मजबूर कर दीजिये चूँकी मुफ्ती साहिब किबलह की वह जात है जो खुर्द नवाजी में अपनी मिसाल आप हैं हर चंद न चाहते हुए भी सर खमीदह होकर हुक्म के बमोजिब कमर बस्ता होकर तलाश व जुसतजू में लग गया।

“अनवारे कुरआनी” और “गुस्ताख कलम की किताबत के सिलसिले में दफ्तरे अफकारे रजा जाना हुवा अफकारे रजा के मुदीरे आला इज्जत मआब मोहम्मद जुबेर कादरी जिन्होंने सेह माही अफकारे रजा के जरिये अकाईद व ईमान, इल्म व इरफान व आगही का एक जहाँ आबाद कर रखा है और हर सिम्त इमाम अहमद रजा के अफकार व नजरयात की ठंडी ठंडी छाओं और रोशनी बेखेर ने और उस की शुआओं से जमाते ऐहले सुन्नत को मुसतफीज करने में सुबहो शाम मुसतगरक रहते हैं मैंने मुफ्ती साहिब किबलह के हवाले से मशवेरतन अर्ज किया और परेशानियों से आगाह किया यकीन जानिये जुबेर भाई खुशायों से उछल पड़े और बर मला कहने लगे ये काम आप कर सकते हैं और मैं अपनी खिदमात पेश कर रहा हूँ उसी वक्त नामूसे मसलके आला हजरत हजरत अल्लामा अब्दुल सत्तर हम्दानी साहिब किबलह के मुसव्वेदात और अपनी लाइबरेरी से चंद नायाब नुसखे अता कर दिये जिस की वजह से काम आसान से आसान तर हो गया !

जब कि हकीकत यही है कि मेरी हैसियते इल्मी दीनी मआमिलात

में मिस्ल तालिबे इल्म है, और मुतालअ व मालूमात बहुत ही महदूद है हुरूफ का जोड़ना, अलफाज के पैकर में ढालना, नोके कलम को संवार ना, खूबसूरती का जामा पहना कर उनके सही इस्तेमाल का शऊर इन सब में बिल्कुल ना बलद हूँ अपनी तलब व जुरातजु जौक व शौक और बुजुर्गों की करम फरमाइयों ने जो गामूली सलीका व मताए शऊर, बख्शा है अहबाब के सता इ शी खुतूत और उनके लुत्फ व इनायात ने ऐसी राह पर डाल दिया है जहाँ से जाए रफतन दुशवार हो गया है वस इसी सबब से सरकारे गौसे आजम रजियलल्लाहो अन्हो के रुहानी फुयूज व बराकात और इमामे इश्क व मोहब्बत के बातनी इनायात व करम का सहारा लेकर, बद दयानत व दरीदह दहन मोल्वियों की जामा तलाशी के लिये कमर बस्ता हो गया मैंने अपनी इस किताब की तरतीब में नंगे वतन व नंगे असलाफ और नंगे इस्लाम के मुजरिमों को अक्ल व शऊर और इश्के मुसतफा से सर शार गुलामाने मुस्तफा की अदालत में बरहना खड़ा करके मुन्सिफी का हक आपके हवाले कर दिया है अस्ल इबारतें उनकी किताबों से नक्ल करके सफा नम्बर की निशान देही कर दी गई है !

देखना ये है कि इन इबारतों को पढ़ने के बाद किस राह का इनतेखाब होता है एक तरफ मोहब्बत के फूल बिखरे हैं तो दूसरी जानिब शाह राहे आम पर काँटे ही काँटे नज़र आ रहे हैं! एक तरफ अनीसे बेकसाँ चारह साजे दर्द मन्दाँ से मोहब्बत असहाबे रसूल से मुहब्बत आले रसूल से मुहब्बत, उलामाए हक और मशाएखीने किराम से मुहब्बत का दर्स व पैग़ाम है और दूसरी जानिब गद्दाराने अंबिया व औलिया की जहेर अफशानियाँ हैं जहाँ हलाकत खेज तबाही उन जैसे अकाईद के लोगों की मुनतज़िर है फैसला आपके हाथ में है क्योंकि

इश्क से हो जाए मुमकिन है वगर न अक्ल से

किया मक़ामे मुस्तफ़ा है फैसला दुशवार है

महबूबे रब्बुल आलमीन से हमारा तअल्लुक किसी फल्सफी, मुफक्किर, मुदब्बिर, उस्ताज़ व हाकिम व महकूम आम शाह व गदा,

आका व गुलाम का नहीं है ये एक नबी और उम्मत की का मुआमेला है सरकार सलल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुन्नी मुसलमानों के तअल्लुक की बुनयाद ही इश्क पर है और खुद इखतियारी है पैमान ए अक्ल व खिरद जाहिल व आलिम की बराबरी गवारा नहीं करता तो इश्क व मुहब्बत का पैमाना नबी और उम्मत की बराबरी कैसे कुबूल कर सकता है इसदौरे हवादिस में न जाने कितने उलमा, मुतअदिद गुरूप से रिश्ता रखने वाले, नमाजी भी हैं, हाजी भी हैं और खुद साख्ता गाजी भी हैं जो अपनी अक्ल व दानिस्त के मुताबिक तनकीद व तनकीसे अंबिया व गुस्ताखिए औलिया में खूब दलाइल व बराहीन पेश करते हैं जिनकी तजाद बयानी और गलत तावीलात से बिला शक व शुबा एक खिलकत गुमराही के रास्ते पर चल पड़ी है सच और झूट में बातिल परस्त के दावेदारों के माबैन इमाम अहमद रजा फाजिले बरेल्वी ने अपने मानने वालों की जमाअत तैयार की है जिसके सरखेल उलमा अपनी जिम्मेदारी और फराइजे मनसबी से बड़ी दयानत दारी और सदाकत व रास्त बाजी से ओहदा बरआ होकर दीने हक और इस्लाम व सुन्नियत की खिदमात तुन दही के साथ अनजाम दिये हैं और दे रहे हैं उनहीं बुजुर्गों के नकशे कदम को निशाने मंजिल बना कर मुझ कम्तर व नाचीज ने हकाइक से परदा उठाने की भरपूर कोशिश की है ताकि अकाइद व आमाल की गलत तालीमात से अजाबे इलाही से करीब होने वालों को सिराते मुस्तकीम का पता बता कर बचाया जासके साहिबे कलम और ऐहले इल्म व बसीरत की इसलाही तनकीद और नेक मशविरों की तवक्को रखते हुऐ तालिबे दुआ के साथ ही दुआ गोहूँ कि रब्बे कदीर अज्जावजल अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदाके व तुफैल में हर सुन्नी मुसलमान को बुजुर्गों की रविश और इस्लामी उसूलों पर चलने व अमल करने की तौफीके रफीक बखशे! (आमीन)

गदाए कूचए मसऊद गाजी
सिराजुल कादरी बहराइची

शरफे इन्तिसाब

उस पैकरे इश्क व मुहब्बत के नाम जिन्होंने अपने नोके कलम की जर्ब से सियाह बख्तों की लाशों के अंबार लगा दिये और जिनके तजदीदी कार नामों ने दुनिया ए इस्लाम के हसीन चहरे पर डाली जाने वाली दबीज चादर को तार तार करके इश्क़े रसूल की नूरानी ताबानियों से मुनव्वर कर दिया जिसकी ज़ियाबार किरनें सुबहे कयामत तक पूरी दुनिया को मुस्तफ़ीज़ करती रहेंगी जिनका मुबारक व मुक़द्दस नाम सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हक़ परस्त हक़ गो तबक़े का संगे मील बन गया है इश्क़ व यकीन के उस ताक़त और अज़ीम सरमाय को रासिखुलअक़ीदा मुसलमान मुजद्दिदे दीन व मिल्लत सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेल्वी के नाम से जानते हैं और ऐहले ईमान अपनी अक़ीदतों का ख़िराज यूँ पेश करते हैं!

डालदी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा
सय्यदी आला हज़रत पे लाखें सलाम

कफ़श बरदार उलमा
सिराजुल कादरी बहराइची

जरूरी मालूमात और तवारीख़े इस्लामी पर मुशतमिल
हवाले के साथ अनमोल ख़ज़ान और कीमती सरमाया
इस्लामी हीरे यानी सुन्नी कोइज़ घर के हर फ़र्द के लिए
मुताला करना जरूरी (Rs.150)



नज़रान ए अकीदत

शहज़ाद ए आला हज़रत जानशीने मुफ़्ति ए आजम हिन्द ताजे शरीअत मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ कादरी बरकाती (हुज़ूर अज़हरी मियाँ) साहिब किबला दामत बरकातुहुमुल कुदसिया की बारगाह में तमाम गुल बूटे निसार जिनकी ज़बाने फ़ैज़े तरजुमान से निकली हुई दुआ मुस्तज़ाब का दरजा रखती है।

मुझ जैसे ना जाने कितने अफ़राद कास ए ग़दाई लिए हाज़िर होकर दुआओं की दरख़्वास्त करते हैं और करम की भीक पाकर सुरख़ुरू व निहाल हो ते हैं

अल्लाह जल्ला शानुहू अपने हबीब दोनो आलम के तबीब सल्ललला हो अलैहे वसल्लम के सड़के व तुफ़ैल में मेरे मुर्शिदे बरहक़ को सिहत व तन्दरुस्ती के साथ उम्रे ख़िज़्र अता फ़रमाए (आमीन)

मुहताजे करम
सिराजुल कादरी बहराइची

नज़रे अकीदत

वालिदैन करीमैन के हुज़ूर जिन्होंने ज़िन्दगी के हर मरहले पर मेरे शऊर की सही राह नुमाई की है 6 साल की उम्रे क़लील ही में मक़तब में दाख़िल करके मेरे ज़हेनो फ़िक़्र को कुरआन व सुन्नत में ढालने के लिए वक्फ़ कर दिया था अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के सड़के में उनकी तुरबत पर सुबहो शाम रहमत व नूर का सावन भादों बरसाए और जन्नतुल फिरदोस में जग़हअता फ़रमाकर उनके दरजात बलंद फ़रमाए आमीन

दुआगो
सिराजुल कादरी बहराइची

इज़हारे हक्कीकत

रसूले गिरामी वकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि सबसे बड़ा जिहाद ज़ालिम व जाबिर हुक्मरों के सामने कलेम ए हक़ बलंद करना है हमारे असलाफ़े किराम इस हदीसे पाक की अमली तफ़सीर बनकर हर दौर में उठने वाले फ़ितनों को दबाने के लिए ज़ालिम व जाबिर सर बराहों और हुक्मरानों के सामने सीना सिपर होकर परचमे हक़ लहराते रहे चाहे वह फ़ितन ए दीने इलाही हो या फ़ितन ए इस्तेदाद, नजदियत वहाबियत हो, खुवाह कादयानियत, लिसानी व कल्मी जिहाद के ज़रीये हर नौ इय्यत के फ़ितनों का सर कुचल कर पाकीज़ा नज़रियात की तरवीज व इशाअत और मसलके हक़ की नुसरत व हिमायत और पासबानी करते रहे नित नये फ़ितने और यावा गोई से इस्लाम के मान्ने वालों को आगाह करते हुए इस्लाह करते रहे, हमारे बुजुर्गों की मोमिनाना बसीरत और इसलाही कारनामों ने मुसलमानों को मज़हबी, सियासी और रूहानी सतेह पर गुनाँ गुं शऊर और इसतेह काम बख़्शा है चौदहवीं सदी हिजरी में सहारन पुर से देहली तक चिटिंग बाज़ों ने फ़ितना अंगेज़ी के लिए ऐसा ग़लीज़ माजून मुरक्कब तैयार किया था जिसकी बू ही से मशामे ईमान परा गन्दा हो जाता है बे हया अफ़राद ने उफ़के इस्लाम पर ऐसी ज़र्बे कारी लगाई जिससे पूरा आलम इस्लाम चीख़ उठा ख़ानिकाहें गिरया कुनाँ हो गई मदारिस व मसाजिद में सफ़े मातम बिछ गई, अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट के पालतू कुत्ते तौहीने अंबिया व औलिया के अलावा जाते बारी तआला की तनकीस से बाज़ ना रहे, जिससे हालात निहायत पेचीदा, नाजुक और हौसिला शिकन हो गए थे, ग़रीब सादा लौह मुसलमानों के मताए ईमान पर दिन दहाड़े डाका डाल रहे थे सरे आम मताए ईमान व इस्लाम को लूट रहे थे सरमाय ए हयात पर शबखून मार रहे थे बद अकीदगी और बदमज़हबी की हुक्मरानी थी हुर्मते इश्क़ के खिलाफ़ बेहंगम और ग़लीज़ ज़बानों का इस्तेमाल ऐहले हक़ के लिए सबसे बड़ी अजीयत थी मगर रब्बे कदीर की बे पायाँ रहमतों से मायूस ना थे ऐहले ईमान रब तबारका व तआला की बख़शिश व इनायात के

मुन्तजिर थे बिलआखिर मशीयते इलाही को जलाल आही गया ऐसे नाजुक वक्त और संगीन हालात में वह मर्दे आहन इस्लाम का बतले जलील आया, जो इस्तेकामत का पैकर था आयातुम मिन आयातिल्लाह था महबूबे दावर के मोजिजों में से एक मोजिजा था जो इश्के रसूल से सरशार था नामूसे रिसालत का मुहाफिज व पासबान था मदीने वाले आका सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का इन्तेखाब था गुसताखाने रसूल के लिए अशिददाउ अललकुप्फार की अमली तफसीर था और अपनों के लिए ,रुहामाउ बैनहुम ,का मजहर व मुसकुराती हुई नर्म व नाजुक कलयों के मिस्ल जिसके इल्म व फन की धमक अरब व अजम में महसूस की गई जब कलम उठाया लिखता चला गया बद मजहबों की लाशें सर बुरीदह हो कर बिखरती चली गयीं हवादिसाते जमाना से नबुर्द आजमा होकर कलेम ए हक बलंद करता चला गया पलट कर ये भी ना देखा कि खार शिगाफ सैफे कलम की जुद में कौन कौन आ रहा है बस एक लगन थी एक धुन थी एक सच्चा इश्क था कि जमाना रुठता है रुठ जाए मगर ना मूसे मुस्तफा पर हर्फ न आए यही वजह है कि इमाम अहमद रजा खान बरेलवी के कलमदाने इश्क की रोशनाई कभी खुश्क न हो सकी राहे इश्क की राहनुमाई इस तरह फरमाई कि जो भी उसकी देहलीज पर कास ए गदाई लेकर आया उसे मिमारे कौम और काइदे मिल्लत बना दिया गौस व ख्वाजा के नाम कि मिजाइलों और असलहों से सजाकर मैदाने कारजार का मुजाहिद और गाजी बना दिया कुफले तगाफुल और जुमूदगी को तोड़कर हरकते मुसलसल की दाइमी कुव्वतों से आशना कर दिया जिससे मिल्लत की शीराजह बन्दी हो गई गर्ज कि इमाम अहमद रजा ने हर कदम और हर मौके पर दुशमनाने इस्लाम का तअक्कुब करके अपनी खुदा दाद सलाहियतों की बुनियाद पर फितना गरों के दामे फरेब में फँसने ना दिया और कौम व मिल्लत को जलालत व गुमराही के कारे मजल्लत में गिरने से बचा लिया !

इमाम अहमद रजा खान का यही तुर ए इमतियाज वस्फ था जिसके मुतहरिक अफआला व अकवाल से हजार हा इन्किलाब आए

जिस में ततहीर का सामान था आक़ ए करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम से सच्ची मुहब्बत करने का शऊर था बद मज़हबों से अदावत और परहेज़ करने का पैग़ाम था गन्दुम नुमा जौ फरोश लोगों की नकाब कुशाई थी आक़ा ए निमत सरकारे आला हज़रत रजियल्लाहो अनहु जिस वक़्त बज़में इश्क़ में अपनी तमाम तर जलवा सामानियों के साथ जलवा गर हुये!

मसलेहतों के क़लम की रोशनाई खुश्क हो गई न जाने कितने बे ढंगे गुस्ताख़े रसूल ख़तीबों की ज़बानें गुंग हो के रह गई और देवबंद व नदवह के आवारह मुतहर्रिक क़लमों ने इनजिमाद की सूरत इख़तियार करली सरकारे आला हज़रत ने इश्क़ की आबरू लुटने से बचाली हक़ व बातिल के इम्तियाज़ में ग़ैरते वफ़ा को कुर्बान व दाग़दार ना होने दिया किसी भी किस्म की मसलेहतों के लिए कोई भी राज़ी न कर सका जब भी किसी गुस्ताख़ ने नामूसे मुस्तफ़ा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को चेलेंज किया तो आपकी ग़ैरत को जलाल आ गया और लब व लहजे में तलख़ी ही नहीं बल्कि तुग़यानी आ गई और बग़ैर किसी हील व हुज्जत के उस नाबकार के खिलाफ़ उठ खड़े हुए उन्हें इस हकीक़त पर मुकम्मल यक़ीन था कि जिस बद नसीब का रिश्ता सरवरे अंबिया से मुनक़ता हो जाए तो उसके लिए अरजो समा की वुसअतों में कहीं भी जाए पनाह नहीं आप फरमाते हैं।

बख़ुदा खुदा का यही है दर नहीं और कोई मफ़र मकर जो वहाँ से हो यहीं आके हो जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं।

हमारे बुजुर्गों ने इहकाके हक़ और इबताले बातिल में पूरी पूरी ज़िन्दगी सर्फ़ करदी फ़क़त इसलिए कि ग़रीब मुसलमान हकाइक़ से आशना हो कर ईमानी लुटेरों से अपने ईमान व अक़ीदे को महफूज़ रख सके हज़रत अल्लामा अबदुस्सत्तार हम्दानी दामत बरकातुहुमुल क़ुदसिया के मुसव्वेदात (जिसमें ग़लीज़ इबारतों की निशान देही की गई है।) जमा करके ज़रूरी तशरीहात के साथ किताबी सूरत में पेश करके मैंने कोई अहेम और बड़ा कारनामा

अन्जाम नहीं दिया है महेज अवाम व खवास के रु बरु देवबंदी मुल्लाओं के सियाह चेहरों को बे नकाब करने की अदना कोशिश की है मुझे उम्मीद है कि ऐहले ईमान और सुन्नी सहीहुल अकीदा मुसलमान “मुजरिम अदालत में” नामी किताब को जरूर पसंद फरमायेंगे मुनसिफ मिजाज दयानत दारी से मुताला करके जंग आलूद सियाह दिलों से अपनी बेजारी का ऐलान करेंगे दाद व दिहश, इन्आम व इकराम की ख्वाहिश नहीं इसके सिले में रसूले गिरामी वकार सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की रहमतों के चंद छींटे अता हो जाएं बस इसी में जिन्दगी की मेराज समझता हूँ।

परवरदिगारे आलम की बारगाह में दुआ है के रसूले करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के सदर्के में सदाए हक से हम सबके कान आशाना रहें (आमीन)

गुबारे राहे उलमा
सिराज अहमद सिराजुल कादरी बहराइची
4 / जमादियुल अव्वल 1424 हि0
मुत्ताबिक 5 / जूलाई 2003 ई0

लड़कियों को जहेज में देने के लिए बेहतरीन तोहफ़ा

इस्लामी हीरे (सुन्नी कोइज़)



बुरा मान गए

अज / मौलाना मोहम्मद अहमद माहिरुल कादरी

फातिहा हमने दिलाया तो बुरा मान गए
रब्बेसल्लिम जो पढ़ाया तो बुरा मान गए

फूल कुफ़ार की मरघट पे वो डालें तो दूरुस्त
हमने तुरबत पे चढ़ाया तो बुरा मान गए

खुद जनम दिन वह मनाएँ तो कोई बात नहीं
हमने मीलाद मनाया तो बुरा मान गए

उम्र भर शौक से खाते रहे काला कव्वा
हमने मुर्गा जो खिलाया तो बुरा मान गए

उनको जाइज है दीवाली की कचौड़ी पूरी
हमने शर्बत जो पिलाया तो बुरा मान गए

रात दिन खुद तो बगावत की पकाएँ खिचड़ी
हमने खिचड़ा जो पकाया तो बुरा मान गए

बज्मे इबलीस में जलती हैं हजारों शमएँ
एक दिया हमने जलाया तो बुरा मान गए

खुद चढ़ाई हुई चादर की बनाएँ पगड़ी
हमने कब्रों पे चढ़ाया तो बुरा मान गए

बज्मे मीलाद में उठकर कभी माहिर हमने
उनकी ताजीम मनाया तो बुरा मान गए

इल्मे गैब

और कोई गैब किया तुमसे निहाँ हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरुद
मुंदर्जा जेल इबारतों में इल्मे गैब की नफी की गई है।

(1) मोल्वी अशरफ अली थान्वी ने सरकारे दो आलम
सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे गैब को बच्चों पागलों और
जानवरों से तशबीह देते हुए लिखा है कि

“आपकी जाते मुकद्दसा पर इल्मे गैब से मुराद बाज गैब
है या कुल अगर बाज उलूमे गैबिया मुराद हैं तो इसमें
हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की ही क्या तखसीस है
ऐसा इल्मे गैब तो जैद व अमर बल्कि हर सिब्बी व मजनून
बल्कि जमी हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है

(मआजअल्लाह)

(हवाला: हिफजुल ईमान, दारुल किताब, देवबंद, स0,15)

मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी

(2) सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे
गैब को शैतान और मलकुल मौत के इल्मे गैब से कम बताते हुए आँ
जनाब रक़म तराज हैं कि

“अल हासिल गौर करना चाहिये कि शैतान और मलकुल
मौत का हाल देख कर इल्मे मुहीते ज़मीन का फख़रे आलम को
ख़िलाफ़े नुसूसे क़तइया के बिला दलील महेज़ क़यासे फ़ासेदा से
साबित करना शिर्क नहीं तो कौनसा ईमान का हिस्सा है, शैतान व
मलकुल मौत को ये वुसअत नस से साबित हुई फ़ख़रे आलम की
वुसअते इल्म की कौन सी नस्से क़तई है जिससे तमाम नुसूस को
रद कर के एक शिर्क साबित करता है (मआजअल्लाह)

(हवाला: बराहीने क़ातेआ, स0,55)



मोल्वी इसमार्शल देहलवी

- (3) हजरत जी, अबिया व औलिया के इल्मे गैब का साफ़ इन्कार करते हुए लिख रहे हैं कि। जो कोई ये कहे की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम या कोई इमाम या बुजुर्ग गैब की बात जानते थे और शरीअत के अदब से मुँह से न कहते थे वह बड़ा झूटा है क्योंकि गैब की बात अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है”
(हवाला न0 1:तकवियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 48)
(हवाला न0 2:तकवियतुल ईमान, कुतुबखाना मसऊदया देहली, स0 40)
- (4) किसी नबी, वली या इमाम व शहीद की जनाब में हरगिज ये अकीदा न रखे कि वह गैब की बात जानते थे बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में भीये एतेकाद न रखे
(हवाला न0 1:तकवियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 47)
(हवाला न0 2:तकवियतुल ईमान, कुतुब खाना मसऊदया देहली, स0 45)
- (5) और इसी तरह कुछ इस बात में भी उनको बड़ाई नहीं कि अल्लाह ने गैब दानी उनके इख्तियार में दे दी हो कि जिसके दिल का हाल जब चाहें मालूम कर लें या जिस गायब का हाल जब चाहें मालूम कर लें कि वह जिन्दा है या मर गया या किस शहर में है या किस हाल में है (वगैरा) इन बातों में बंदे बड़े हों या छोटे सब यकसाँ बेखबर और नादान हैं।
(हवाला न0 1:तकवियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 46)
(हवाला न0 2:तकवियतुल ईमान, कुतुब खाना मसऊदया देहली, स0 44)

मोल्वी रशीद अहमद गंगोही

- (6) मुल्लाजी ने लिखा है कि
“हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे गैब न था न कभी उसका दावा किया और कलामुल्लाह शरीफ और बहुत सी अहादीस में मौजूद है कि आप आलिमुल गैब न थे और ये अकीदा रखना कि आप को इल्मे गैब था सरीह शिर्क है।(मआज़अल्लाह)
(हवाला न0 1:फतावा रशीदया (मुबव्वब)1987 ई0 स0 103)
(हवाला न0 2:फतावा रशीदया (कदीम)1363 हि0 ,स0 141)
- (7) दूसरी जगह रक़म फरमाते है कि “इल्मे गैब खास्स ए हक़

तआला है इस लफ्ज को किसी तावील से दूसरे पर इतलाक करना इबहामे शिर्क से खाली नहीं।

(हवाला: न0 1:फतावा रशीदया (कदीम)1363 हि0,जि0 1, स0 20)

(8) मोल्वी खलील अहमद अंबेठवी शाह अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी की तरफ एक ग़लत इबारत मनसूब करते हुए लिखते हैं कि।

“और शैख अब्दुल हक रिवायत करते हैं कि मुझको दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं” (हवाला: न0 1:बराहीने कातेआ स0 55)

अकाबिर उलमा ए देवबंद का इल्मे ग़ैब

(1) मोल्वी कासिम नानोतवी लिखते हैं कि

“एक मरतबा मैंने गंगोही की खान्काह में रखे हुए बधने में कुंए से पानी भर कर पिया तो पानी कड़वा पाया मैंने रशीद अहमद गंगोही से कहा तो उन्होंने कहा कि कुंए का पानी तो मीठा है। लेकिन उन्होंने चखा तो पानी कड़वा था बाद नमाजे जोहर सब नमाजियों ने और खुद ने कलेमा तय्येबा पढ़ा फिर दुआ की फिर पानी पिया तो पानी मीठा था तब गंगोही ने कहा कि इस बधने की मिट्टी उस कब्र की है जिस पर अज़ाब हो रहा था अल हमदो लिल्लाह कलेमे की बरकत से अज़ाब रफा हो गया”।

(हवाला न01 तज्केरतुल रशीद जि0,2 स0 202)

(2) थान्वी ने ब हवाला मोल्वी अब्दुल्लाह रिवायत किया है कि

एक मोल्वी के इन्तेक़ाल की खबर आई उस पर मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने कहा कि “मोल्वी” का मुँह क़िबले से फिरा हुवा होगा जिसका जी चाहे कब्र खोलकर देख ले मैं देख रहा हूँ कि मुँह क़िबले से फिर गया है।

(हवाला:हसनुल अजीज़ जि0,4 कि0,10 स0164)

(3) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के इल्मे ग़ैब पर दलालत करने वाला एक वाक़ेआ मोल्वी आशिक़ इलाही मेरठी ने लिखा है कि :

“मुन्शी निसार अली और गौहर खाँ मुलाज़िम पलटन 65 रुख्सत लेकर बइराद ए बैअत लखनऊ से गंगोह खाना होने को तैयार हुए दरवाज़े पर सवारी तक आ खड़ी हुई इत्तिफ़ाक़ से किसी हाकिम की आमद का तार आया और ऐन वक़्त पर उनको अफसर के हुक्म

से रुकना पड़ा उस दिन के बाद फारिग होकर गंगोह पहुँचे तो हजरत यानी (गंगोही) ने साफ इरशाद फरमाया कि तुम दोनों साहब फलॉ दिन खाना होना चाहते थे मगर रोक लिये गए थे और जब खाना दस्तर खान पर आया तो फरमाने लगे कि आपके साथ दो टट्टू भी तो हैं आखिर वह भी मेरे महमान हैं अब्बल उनको घास दाना पहुँचाना चाहिए हालाँकि दोनों के टट्टू पर सवार हो कर आने की इत्तिला आपको किसी आदमी ने नहीं दी थी”

(हवाला : तजकेरतुल रशीद जि0,2 स0 224)

माँ के पेट में किया है

(1) मोल्वी इसमाईल देहलवी ने तकवियतुल ईमान में “अलइशाराको फिल इल्म ” की फस्ल में लिखा है कि ;

“ इसी तरह जो कुछ मादा के पेट में है उसको भी कोई नहीं जान सकता कि एक है या दो नर है या मादा कामिल है या नाकिस खूबसूरत है या बद सूरत ।

(हवाला न0 1:तकवियतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0 42)

(हवाला न0 2:तकवियतुल ईमान, कुतुब खाना मसऊदया देहली, स0 ,40)

(2) शाह अब्दुल रहीम विलायती के मुरीद अब्दुल्लाह खान जो कौम के राज पूत थे उनके पास अगर कोई अपने घर में हमल होता और तावीज लेने आता तो उसे अब्दुल्लाह बता दे ते थे कि तेरे घर में लड़की होगी या लड़का और जो अब्दुल्लाह बता दे ते थे वही होता था ।

(हवाला न0 1:हिकायतुल औलिया हिकायत न0,147, स0 184)

(हवाला न0 2:अरवाहे सलासा हिकायत न0,147,)

(3) पँजलासा (पँजाब) में शाह अब्दुल रहीम के खलीफा राओ अब्दुल रहमान के कश्फ की ये हालत थी कि कोई लड़की या लड़के के लिए तावीज माँगता तो बे तकल्लुफ कह देते कि तेरे घर लड़का या लड़की होगी लोगों ने अर्ज किया कि हजरत ये कैसे आप बता देते हैं फरमाया किया करूँ बे महाबा मौलूद की सूरत सामने आ जाती है ।

। (हवाला न0 1 :हिकायतुल औलिया हिकायत न0,254, स0 271)

(हवाला न0 2 :अरवाहे सलासा हिकायत न0,254)

(हवाला न0 3 :सवानेह कास्मी, जि0,8 स0,257,)

(4) हाफिज़ गुलाम मुर्तजा ने अशरफ अली थान्वी के पैदाइश से कबूल पेशीन गोई की कि थान्वी की वालिदह से दो लड़के तवल्लुद होंगे एक का नाम अशरफ अली रखना और दूसरे का नाम अकबर अली रखना और ये भी बता दिया कि हाफिज़ व मोल्वी होगा और दूसरा दुनिया दार होगा बकौल सवानेह निगार ये सब पैशीन गोईयाँ हर्फ बा हर्फ रास्त निकलीं।

(हवाला न0 1:अशरफुस्सवानिह जि0,1 स0,17)

(5) थान्वी ने कहा कि मैं गुलाम मुर्तजा मज जूब की दुआ से पैदा हुआ हूँ वालिदह की औलाद जिन्दा नहीं रह ती थी क्योंकि बाप फारुकी और वालिदह अल्वी थीं उमर और अली की खींचा तानी में टूट जाती है गुलाम मुर्तजा ने कहा कि अली के नाम से निस्वत करने से औलाद जिन्दा रहे गी चुनाँचे हम दोनो भाईयों के नाम अशरफ अली और अकबर अली भी बता दिये और ये भी बता दिया कि दो लड़के होंगे।

(हवाला:न01:अलइफाजातुल योमिया(देवबंद)जि0,3,किस्त0,16मल0,11,स0,14)

(हवाला न02:अल इफाजातुल योमिया जि0,1किस्त0 6,मल0,152 स0 78)

(हवाला न03:अशरफुस्सवानिह जि0,1 ,स0 164)

(हवाला न04:अशरफुस्सवानिह जि0,1 ,स0 7)

सुबूते इल्मे ग़ैब

मुंदरजा बाला इबारतों में देवबंदी उलमा ने अपने अकाबेरीन के इल्मे ग़ैब को साबित किया है और अंबिया व औलिया के तअल्लुक से इल्मे ग़ैब का इन्कार किया है ये बात इन्तिहाई ना काबिले फहेम है कि इन ज़ालिमों ने अपने नबि ए बरहक ग़ैब दाँ पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ाते वाला सिफ़ात को तनकीद व तनकीस का हदफ बनाया जब की सच तो ये है कि बग़ैर हुब्बे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दीन व इस्लाम का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात व सिफ़ात को हर ए़ैब व नक्स से साफ़ व शफ़ाफ़ तसलीम करने वाला ही मोमिन होगा रिश्ते दारी , क़राबत दारी, ग़र्जे कि सारे रिश्तों नातों पर सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निसबत मुक़द्दम है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कोई भी ज़ाँ

निसार इन गुस्ताख और दरीदा दहन देवबंदी वहाबी मोल्वियों के गलीज कलेमात को सुनकर खामोश नहीं रह सकता जब जब गुसताखियाँ की जायेंगी या की हुई गुसतखियों का तजकरेह होगा, गुलामाने आला ज़रत सीना सिपर होकर आला हज़रत की ज़बान व कलम बनकर एलान करते रहेंगे।

वह रज़ा के नेजे की मार है कि अदू के सीने में गार है।

किसे चारह जोई कावार है कि ये वार वार से पार है।

सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मुतअल्लिक कुरआन मजीद में रब तबारका व तआला ने ईरशाद फरमाया: وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ (तरजुमा) और अल्लाह की शान ये नहीं है कि ऐ आम लोगो तुम्हें ग़ैब का इल्म दे हों अल्लाह चुन लेता है अपने रसुलों में से जिसे चाहे (कंजुल्मान, पा0,4 आले इमरान आय0,179)

दूसरी जगह इरशाद है कि ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता सिवाय अपने पसंदीदा रसुलों के (कंजुल्मान पा0,29, अलजिन आयत,27)

कौले बारी तआला का तेवर मुलाहेज़ा कीजिये रब तआला आम लोगों को ग़ैब पर मुत्तला नहीं फरमाता लेकिन जिन्हें ग़ैब का इल्म बताना चाहता है उनका इन्तेखाब करलेता है अब मैं मुन्किरीने इल्मे ग़ैब से पूछना चाह ताहूँ कि يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ के जुमरे में तुम्हारे नज़दीक किस का इन्तेखाब हुवा अगर जवाब नफी में है तो तुम्हारे तहेत फैसला हो चुका और अगर तुम्हारा जवाब इसबात में है तो मान्ने से इन्कार क्यों ?

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने मेरी सारी उम्मत को पैदाइश से पहले मुझ पर पेश फरमाया और मुझे इल्म दिया गया कि कौन मुझ पर ईमान लाएगा और कौन ईमान नहीं लाएगा जब ये बात मुनाफ़ेकीन ने सुनी जो दरे पर्दा इस्लाम की बेख़ कनी करते थे और बज़ाहिर इस्लामी शक़ल व सूरत से मुसलमान साबित करते कहने लगे ये तो बहुत बड़ा दावा है इसकी दलील भी होनी चाहिए आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ होकर इरशाद फरमाया आज से क़यामत कायम होने तक सारे अहवाल वाक़ेआत

में से जो चाहो पूछ लो जाँ निसार सहाबा में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सैहमी रज़ियल्लाहो अन्हो खड़े हो जाते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मेरा बाप कौन है ग़ैब दाँ नबी ने इरशाद फ़रमाया तुम्हारा बाप हुज़ाफ़ा सैहमी है (मुनाफ़ेकीन उनके नसब को मशकूक बताते हुए हिजो करते थे) अब मुनाफ़ेकीन के चहरे का जुग़रा फियह बदलने लगा और यके बाद दीगरे राहे फ़रार इख़तियार करने पर मजबूर हो गए।

गौर करने का मुक़ाम है कि नसब की वज़ाहत वह पोशीदह ख़बर है जिसका इल्म माँ के अलावा किसी को नहीं होता लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसे भी जानते हैं और उसकी ख़बरें भी देरहे हैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की साहिब जादी सय्यदह फ़ातेमा ज़हरा रज़ियल्लाहो अनहा जब उम्मीद से थीं तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की चची साहिबा हज़रत उम्मुल फ़ज़ल बिनते हारिस जौज ए हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो ने एक ख़्वाब देखा जो बड़ा भयानक और ख़ौफ़ नाक था डरते डरते सरकार की बारगाहे आली मर तबत में हाज़िर हुई सरकार के इसरार पर अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मैं ने देखा है कि आपके बदन का एक टुकड़ा काटा गया और मेरी गोद में रखा गया आपने इरशाद फ़रमाया कि चची जान ये तो बहुत मुबारक ख़्वाब है इंशाअल्लाह फ़ातेमा को लड़का पैदा होगा और तुम्हारी गोद में दिया जाएगा चुनानचे ऐसा ही हुवा इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो पैदा हुए आज जब कि साइन्सी दौर है तरक्की की मंज़िलों से इन्सान गुज़र रहा है मुन्किरीने इल्मे ग़ैब कह सकते हैं कि आज दाया और डाक्टर भी लड़की या लड़के की निशान देही कर देते हैं और मशीनों के ज़रीये से भी मालूम हो जाता है अगर हुज़ूर ने बताया तो कौन सा इल्मे ग़ैब साबित हुवा लेकिन ये उनकी बकवास समझी जाएगी मैं आप की तवज्जो किसरा के कँगन की जानिब मबज़ूल कराना चाहता हूँ सफ़रे हिज़रत के मौक़े पर आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि ऐ सुराका मैं तुम्हारे हाथों में किसरा का कँगन देख रहा हूँ ये पेशीन गोई दौरे फ़ारुकी में पूरी हुई सय्यदुना

उमर फारुक रजियल्लाहो अन्हो ने किसरा का कंगन जनाबे सुराका को पैहनाया।

उमर फारुक ने पैहना दिया कंगन सुराका को अज-शाकिरुलकादरी यही तो गैब दानी थी तुम्हारी या रसूलल्लाह। इन्दोर ऐम पी ये इल्मे गैब नहीं तो और किया हैं ? गजव ए खन्दक के मौके परआका ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के उस अजीम चटान के तोड़ने का वाक़ेआ भी इल्मे गैबे मुस्तफा को साबित कर रहा है जो खोदाई के वक्त निकल आई थी सिहाबा उसको तोड़ने में नाकाम हुए थे तो महबूबे किरदिगार ने अपनी तवानाई का बे मिसाल मुजाहिरा करते हुए उस चटान को तीन ज़रबों में पाश पाश कर दिया था और हर ज़र्ब पर गैब की ख़बर दे रहे थे मुझे मुल्के शाम दिया गया, मुझे मुल्के फ़ारस दिया गया यानी मेरी उम्मत शाम व फ़ारस को फ़तेह करेगी और ईरान को फ़तेह करले गी किया इन वाक़ेआत का तअल्लुक इल्मे गैब से नहीं है? आगे बढ़िये और इरशादे बारीतआला मुलाहेज़ा कीजिए : وَمَا خَرَجَ عَلَى الْغَيْبِ بَضِيئِينَ

और ये नबी गैब बताने में बख़ील नहीं (कंजुल ईमान प0 30, अत्तकवीर आयत, 42)

मजकूरह आयते करीमा से साफ़ वज़ाहत हो रही है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे गैब दिया गया दूसरे ये कि इस दिये गए इल्मे गैब से बहुत कुछ बता दिया बता देना सखावत की अलामत है और ना बताना बुख़ालत पर महमूल है सख़ी वही हो सकता है जिसके पास कुछ हो और लोगों को अता करता रहे अगर मेरे अका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्मे गैब न होता तो कैसे बता देते दूसरी आयतों की तफ़्सीरों से भी मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब को इल्मे गैब दिया और अपने सिहाब ए किराम को गैब की ख़बरों से आगाह फ़रमा दिया।

हज़रत सय्यदुना उमर फारुक रजियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमें इबतेदा ए मख़लुकात से लेकर एहले जन्नत के जन्नत और ऐहले नार के दोज़ख़ में दाख़िल होने तक की ख़बरों से आगाह फ़रमाया है।

इन अक्ल के दुश्मनों को कौन समझाए आमिना के लाल के इशारे

पर बादल आकर बरस्ते थे और इशारा पाते ही खुल जाते थे किया तारीख का वह सुनहेरा बाब याद नहीं है, जब एक जुमा को एक सहाबी ने बारिश न होने की वजह से अपनी परेशानियों का जिक्र किया था कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम चरागाहें खुशक हो चुकी हैं मवेशी परेशान हैं, दुआ फरमाईये आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने नूरानी हाथों को बलंद फरमाया अभी दुआ खत्म भी न हो पाई थी कि यका यक मूसला धार झमा झम बारिश शुरू हो गई, चमन लैह लहा उठे सर सब्जी व शादाबी से पूरे खित्ते का जुगराफिया बदल गया, आठ रोज तक मुसल सल बारिश होती रही दूसरे जुमा को वही सहाबी हाजिर हो कर बारिश से होने वाले नुकसानात का तजकिरा कर रहे हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अब तो बारिश की वजह से मकानात मुन्हदिम हो रहे हैं तबाही आ गई है अब बारिश बंद होनी चाहिये मेरे आका ने इशारह फरमा दिया कि हम पर न बरसे कुरबो जवार में बरस्ता रहे नतीजा ये हुवा कि बादल खुल गए अतराफ व जवानिब में उस वक्त तक बारिश होती रही जब तक खुदा को मन्जूर रहा बताइये ऐसे कुव्वत व तसरुफ वाले बइखतियार नबी की जात में ऐब तलाश किया जा रहा है खुदावंदे करीम इन मुन्किरीने इल्मे गैब और बे अक्ल नजदियों को शऊर व आगाही अता फरमाए (आमीन)

अक्ल होती तो खुदा से न लड़ाई लेते

ये घटायें उसे मंजूर बढ़ाना तेरा ॥

हजरते अम्मार बिन यासिर रजियल्लाहो अन्हो बड़े जाँ निसार वफा शिआर सहाबी गुजरे हैं एक दफा मदीना शरीफ में एक इमारत तामीर हो रही थी कि एक दीवार आप पर गिर गई हर तरफ शोर व गौगा था कि अम्मार बिन यासिर शहीद हो गए ये बात जब गैब दाँ पैगम्बर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम तक पहुँची तो आपने फरमाया हरगिज नहीं अम्मार को बाग्यों की एक जमातअ शहीद करेगी और वही हुवा जो आपने फरमाया था एक जंग में हजरत अकरमह बिन अबू जहल (जो उस वक्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) ने एक मुसलमान को शहीद कर दिया था सरकार को मालूम हुवा तो

फरमाया मैं कातिल व मकतूल दोनों को जन्नत में देख रहा हूँ
 सुबहानल्लाह सहाब ए किराम की हैरत उस वक्त जाती रही जब
 जनाब अकरमह इस्लाम की दौलते लाजवाल से सरशार हुए और
 आगे बढ़िये मुन्किरीने इल्मे ग़ैब आँखें बंद करके वहाबियत और
 देवबंदियत की गोली बगल में दबाकर मुनाफ़िक़त का माजून खा
 कर बुख़ारी व मुस्लिम का मुताला करते हैं और हवा में तीर चलाते
 हैं अगर इश्क़े रसूल की शमा सीने में फ़रोज़ाँ करके अहादीस का
 मुताला करते तो हरगिज़ गुमराह न होते मक़ामे बद्र में गिरिफ़्तार
 होने वालों में सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने
 चचा के ज़िम्मे तीन आदमियों का ज़रे फ़िदया मुक़र्रर फ़रमाया
 हज़रते अब्बास लगे बहाने करने कि मेरे पास इतना माल किधर से
 आएगा तो आपने हकीक़त के चहरे से नकाब उठा दिया इरशाद
 फ़रमाया, चचा जान आप जिस वक्त घर से चले थे चची साहेबा से
 क्या कह कर आए थे वह सोना किधर गया जो रात की सियाही में
 ये कह कर छोड़ आए थे कि मारा जाऊँ तो इतना फ़लों को देना
 इतना फ़लों को देना और अगर ज़िन्दा बच कर आ गया तो खुद ही
 हिसाब कर दूँगा इतना सुन्ना था कि हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहो
 अन्हो बे करार होकर अर्ज करते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो
 अलैहे वसल्लम रात की तारीकी और भयानक सन्नाटे में जिस वक्त
 मैंने अपनी अहलिया के सपुर्द सोना किया था कोई तीसरा मौजूद न
 था शबे दैजूर में होने वाली गुफ़्तगू की ख़बर रखना आपके बर हक़
 होने की सच्ची अलामत और रोशन दलील है आप गवाह हो जायें मैं
 इस्लाम में दाख़िल हो रहा हूँ मोहतरम हज़रात देखा आपने हज़रते
 अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हो ने सरकार की ग़ैब दानी से मुतअस्सिर
 होकर इस्लाम का इज़हार फ़रमाया तअज्जुब है उन तबलीगी,
 नदवी, देवबंदी, मौदूदी वग़ैरहुम के नाकिस इल्म और कज फहमी
 पर जो इल्मे ग़ैब का इन्कार कर रहे हैं रब तआला उन ना समझों
 को सच्ची समझ अता फ़रमाए (आमीन)

कुन्जी तुम्हें दी अपने ख़ज़ानों की खुदाने
 महबूब क्या मालिक व मुख़्तार बनाया।

तसव्वुर रै तबी का ख्याल

नमाज में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहे अलैहे वसल्लम का ख्याल आना, उस के मुतअल्लिक इसमाईल देहलवी रकम तराज हैं:

(1) " नमाज में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख्याल आना जिना के वसवसे से अपनी बीवी की मुजामेअत का ख्याल बेहतर है और शैख या उसी जैसे और बुजुर्ग की तरफ खुवाह रिसालत मआब ही हों अपनी हिम्मत लगा देना अपने बैल और गधे की सूरत में मुस्तगरक होने से बुरा है " (मआजअल्लाह)

(हवाला: सिराते मुस्तकीम उर्दू इदारतुल रशीद देवबंद स0 118)

मुन्दरजा बाला इबारतों की वजाहत करते हुए आँ जनाब लिखते हैं चूँकि हुजूर और शैख का ख्याल उन की बुजुर्गी के साथ दिल में चिमट जाती है और बैल व गधे या बीवी से मुजामेअत या वसवस ए जिना से ऐसा नहीं होता है।

(2) एक तालिबे इल्म ने थानवी को लिखा कि खुशू के लिए नमाज में आप का ख्याल करता हूँ :जवाब लिखा नमाज में कसदन न किया जावे— (हवाला: अशरफुस्सवानेह जि0,2 स0,125)

(3) ऐसे में नमाजे तहज्जुद और जिक्र में वाहियात ख्यालात महसूस करने वाले को आँजहानी थानवी जी ने लिखा कि अपने शैख का तसव्वुर उन परेशान ख्यालात का दाफे होगा:

(हवाला: अशरफुस्सवानेह जि02,स0, 131)

(4) एक शख्स ने थानवी को लिखा कि नमाज में बावजूद बार बार तवज्जो करने के वसाविस का हुजूम रहता है जवाब में थानवी साहिब ने लिखा कि शैखे कामिल या और किसी ऐसी ही चीज का तसव्वुर तजवीज करके उसका इस्तेमाल करें।

(5) एक शख्स ने थानवी को लिखा कि अगर आपकी सूरत का तसव्वुर करलूँ तो नमाज में जी लगता है। जवाब इनायत किया जाइज है मगर दो शर्त हैं एक ये कि एतेकाद में मुझे हाजिर व नाजिर न समझे और दूसरी शर्त ये है कि उसकी किसी को इत्तेला नदे ये तसव्वुरात खतरात के दरजे में है।

(हवाला: अलकलामुल हसन, हिस्सा, 1 मलफूज, 298 स0, 140)

(6) थानवी के बकौल: नमाज़ में बिला ज़रूरत ग़ैरे नमाज़ का ख्याल न लाना चाहिये, हाँ अगर किसी ज़रूरत की वजह से मशरू या मबाह अर्म का ख्याल लाए और उसको क़सदन बाकी रखे तो उसमें मवाख़िज़ा नहीं।

(हवाला: कमालाते अशरफिया 1995 बाब, 1 मलफूज़, 425 स0, 101)

ख्यालाते फ़ासिदा

मआजअल्लाह सद बार मआजअल्लाह मज़कूरा बाला इबारते किस क़दर अख़लाक़ सोज़ और गुमराह कुन हैं उम्मती अपने नबी के बारे में ख्यालाते फ़ासेदा रखे ये ज़हनी अय्यारी और शकावते क़ल्बी के अलावा किया हो सकता है रब फरमाता है : नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़्यादा मालिक है। (कंजुलईमान प0, 21 अल अहज़ाब अ0, 9) इस आयत में लफ़्ज़े औला पर गौर कीजिए: ज़्यादा मालिक, ज़्यादा करीब ज़ियादा हक़ दार मालूम हुवा की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर मोमिन के दिल में जलवह गर हैं हाज़िर व नाज़िर हैं क्योंकि वह हमारे सबसे ज़्यादा मालिक हैं और हमारी जानों से ज़्यादा राहत व सुकून व क़रार पहुँचाने वाले हैं:

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुहब्बत सब पर मुक़द्दम है आप खुद ही इरशाद फ़रमाते हैं तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे माँ और बाप औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब और प्यारा न हो जाऊँ इस से ज़ाहिर हुवा की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से तबई मुहब्बत करनी चाहिए न कि सिर्फ़ अक्ली और ज़बानी जमा ख़र्च रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ऐसी मुहब्बत होनी चाहिए जैसी मुहब्बत अल्लाह तआला से होती है क्योंकि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुहब्बत रुकने ईमान है आप जाने ईमान हैं नबी का नमाज़ में ख्याल न आना ईमान की अलामत नहीं और न नमाज़ी की पहचान है इसमाईल देहलवी के नज़दीक वह नमाज़ बातिल है जिसमें नबी का ख्याल आए और अशरफ़ अली थानवी ऐसी नमाज़ों को कामिल बताते हुए अमल पैरा होने का

नुस्खा भी अपने मुरीद व मुतवसिलीन को बता रहे हैं हर सुन्नी मुसलमान का यही अकीदा है कि जिस नमाज में हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख्याल न आए और आपकी मुहब्बत शामिल न हो वह इबादत ही फुजूल है ऐ मुनाफ़िको तुमहें वह नमाजें मुबारक हों हम तो अदा ए मुस्तफ़ा शुमार करते हैं वही नमाजें पढ़ेंगे जिसे अबू बक्र व उमर ने पढ़ीं जिस पर तमाम सिहाबा व औलिया व बुजुरगाने दीन का अमल रहा है ऐ नादान! जब तक महबूब की अदाओं पर जान कुर्बान न करेगा इश्क की तकमील ग़ैर मुम्किन है और उसकी बात ही निराली है जो महबूबे रब्बुल आलमीन है ना कोई उनके मिसल है और ना कोई उन की मिसाल रब फ़रमाता है कि मेरे महबूब के होंट उस वक्त हिलते हैं जब हमारी वही आती है गोया नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी ख़्वाहिश से लब भी नहीं हिलाते खुद हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी ज़बाने हक़ तर्जुमान से फ़रमाते हैं, मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ:

ताजदारे ऐहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं ।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब में नहीं मेरा तेरा

कलामे इलाही के तअल्लुक से मुख़्तसर,
मगर जामे मालुमात का ज़ख़ीरा

“अन्वारे कुरआनी”

का मुताला ज़रूर किजिये

हदया 15 रुपये

अंबिया व औलिया को बन्द ए आजिज़ ज़र् ए
नाचीज़ से कम तर वगैरह कहना

(और अकाबिरीने देवबंद की तारीफ़ में गुलू करना)

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने लिखा है: "हर मखलूक बड़ी हो या छोटी वह अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज्यादा जलील है। (मआजअल्लाह)

(हवाला 1: तकवीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुम्बई, स0,30)

(हवाला 2: तकवीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,27)

(2) "अल्लाह की शान बहुत बड़ी है सब अंबिया व औलिया उसके सामने ज़र् ए नाचीज़ से भी कमतर हैं" (मआजअल्लाह)

(हवाला 1: तकवीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुम्बई, स0,92)

(हवाला 2: तकवीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,92)

(3) "औलिया, अंबिया, व इमाम ज़ादा, पीर, व शहीद यानी जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं वह सब इन्सान ही हैं और आजिज़ बन्दे हैं और हमारे बड़े भाई हैं, मगर अल्लाह ने उनको बड़ाई दी वह हमारे बड़े भाई हैं हम उनके छोटे भाई हैं हमको उनकी फ़रमाँ बरदारी का हुक्म है उन की ताज़ीम इन्सानों की सी करनी चाहिये न की अल्लाह की तरह" (मआजअल्लाह)

(हवाला 1: तकवीयतुल ईमान, दारुस्सलफ़िया मुम्बई, स0,99)

(हवाला 2: तकवीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,99)

(4) "जैसा हर कौम का चौधरी और गांव का ज़मीन्दार, सो इन मानों कर हर पैग़म्बर अपनी उम्मत का सरदार है और हर इमाम अपने वक्त के लोगों का और हर मुजतहिद अपने ताबेओं का"

(हवाला 1: तकवीयतुल ईमान, कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली, स0,105)

(5) मोलवी अशरफ़ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही और कासिम नानोतवी के दादा हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की के पीर व मुर्शिद मियाँ जी नूर मोहम्मद के मुतअल्लिक थानवी ने कहा:

"मियाँ जी नूर मोहम्मद सरापा नूर ही नूर थे"

(हवाला 1: हसनुल अजीज़, जि0,2 हिस्सा, 1 मल्फूज़, 84 स0,217)

(6) बकौल थानवी, गंगोही (रशीद अहमद) "हर पहलू में कामिल थे मैंने किसी शख्स को ऐसे आदात व सिफ़ात का नहीं देखा"

(हवाला 1: जिल्द, 1 हिस्सा, 1 मल्फूज़, 97 स0,101)

- (7) बकौल थानवी, "डेढ़ दोसो वर्ष से हाजी इमदादुल्लाह जैसा मुहकक्कि पैदा नहीं हुवा वह फन्ने तसव्वुफ के मुजतहिद थे"
(हवाला 1: हसनुल अजीज, जिल्द, 1 हिस्सा, 1 मल्फूज, 2 स0, 36)
- (8) मोहतमिम दारुल उलूम देवबंद मोलवी रफी उद्दीन के कौल के मुताबिक मोलवी कासिम नानोतवी की खिदमत में, 25 वर्ष तक मैं बे वजू नहीं गया (अल अयाजु बिल्लाह)
(हवाला 1: हिकायातुल औलिया हिकायत न0, 242 स0, 259)
(हवाला 2: अरवाहे सलासा हिकायत न0, 242 स0, 240)
(हवाला 3: सवानेह कासमी जिल्द न0, 1 स0, 130)
- (9) बकौल थानवी "हाजी इमदादुल्लाह हुज्जतुल्लाहे फिल अर्ज और जिल्लुललाहे फिल अर्ज थे"
(हवाला 1: खातिमतुस्सवानेह स0, 128)
- (10) मोलवी इसमाईल देहलवी के पीर व मुर्शिद सय्यद अहमद राय बरेलवी के लिए मछलियाँ, चूंटियाँ दुआ करती थीं और उसको जानवर और दरख्त पहचानते थे। (मअजअल्लाह)
(हवाला 1: हिकायातुल औलिया हिकायत न0, 117 स0, 151)
(हवाला 2: अरवाहे सलासा हिकायत न0, 117 स0, 131)
- (11) खलील अहमद अंबेठवी ने गंगोही को मलजा मावा रहमतुल लिलआलमीन, गौस व गयास वगैरह अल्काबात लिखे हैं।
(हवाला 1: तजकिरतुल रशीद जिल्द न0, 1 स0, 149)
- (12) गंगोही अपने जमाने के औलिया अल्लाह का सरदार था व नीज नाइबीने रसूल के गिरोह कि सियादत उसके हवाले थी वह पेशवायाने खल्फ का इमाम व पेशवा था।
(हवाला 1: तजकेरतुल रशीद जिल्द न0, 2 स0, 16)
- (13) बकौल थानवी, "हाजी इमदादुल्लाह की बदौलत ही हक वाजेह हुवा :
(हवाला: 1 हसनुल अजीज, जि0, 1, हिस्सा, 2, किस्त, 17, मल्फूज, 239 स0, 237)
- (14) बकौल थानवी, " हाजी इमदादुल्लाह मुजरस्सम रहमत थे।
(हवाला 1: हसनुल अजीज, जि0, 1, हिस्सा, 1, मल्फूज, 70 स0, 72)
- (15) काजी सना उल्लाह बेहकी थे बकौल थानवी बहवाला शाह अब्दुल अजीज।
(हवाला: 1 हसनुल अजीज, जि0, 1, हिस्सा, 1, किस्त, 17, मल्फूज, 237 स0, 336)
- (16) थानवी ने अपने खलीफा ख्वाजा अजीजुल हसन से कहा कि आपका लिखा हुवा किरामन कातेबीन से भी ज्यादा जामे होगा।

(हवाला 1: हसनूल अजीज, जि 0, 1, हिस्सा 2, किस्त 17, मल्फूज़, 237 स 0, 304)

(17) बकौल रशीद अहमद गंगोही हाजी इमदादुल्लाह की मौजूदगी में हम हज़रते जुनेद की तरफ़ इलतिफ़ात भी ना करें।

(हवाला 1: हसनूल अजीज, जि 0, 1, हिस्सा 3, किस्त 18, मल 0, 339 स 0, 304)

झूट ही झूट

कारिईने किराम! आपने मुंदरजा बाला इक़तिबासात बग़ौर पढ़ लिया होगा, एक तरफ़ निफ़ाक़ व गुमराही की गंगा बह रही है और रसूल दुशमनी का हक़ अदा किया जा रहा है और दूसरी जानिब अकीदत व मुहब्बत के गुल्दस्ते में अकाबेरीने देवबंद के लिये गुल बूटे सजाये जा रहे हैं आप खुद ही फ़ैसला करें कि ऐसे घिनाओं ने अकाइद के हामिल अफ़राद किया मुसलमान कहलाने के हक़दार हैं? ऐसा अकीदह रखने वाले काफ़िर व मुरतद के सिवा और किया हो सकते हैं उलमा ए देवबंद नबी को अपने जैसा बशर समझते और अपना बड़ा भाई कहते हैं गाँव के चौधरियों जैसा मक़ाम दे रहे हैं जब कि मख़लूक़ात में नबी को बशर कहने वाला सब से पहले शैतान है उसने सब से पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बशर कह के सजदा करने से इनकार किया और कुफ़र व निख़वत की बुन्याद पर रब के हुक्म का मुन्क़िर हुवा लिहाजा बात समझ में आई कि अब कोई भी नबी को बशर कहे या बराबरी का दावा करे तो समझलो कि वह शैतान की पैरवी करता है शैतान ने हज़रते आदम के ज़ाहिर को देखा था नूर और रूह तक उसकी बसारत ना पहुँच सकी तो जिसकी निगाह नबी की बशरियत पर ही हो उसका अन्जाम बिला शक़ व शुबा शैतान जैसा हो गा।

अबू जहल ने नबी को देखा अबू लहब ने देखा उतबा और शैबा ने भी देखा मगर शैतानी आँखों से देखा तो बशर कह दिया और उसके बर अक्स अबू बकर व उमर ने देखा ईमानी निगाहों से देखा तो खैरुल बशर कहा कुफ़र व मुशरिकीन ने मुनाफ़िक़त की निगाहों से देखा तो अपनी तरह कहकर बराबरी का दावा क्या और सहाबा ने फ़ज़ले इलाही और नूरे ईमानी से देखा तो पुकार उठे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आपका जमाले रिसालत

आईन ए हक नुमा है आप जैसा हुस्न व जमाल वाला मेरी आँखों ने देखा ही नहीं आप हर ऐब से पाक व साफ पैदा किये गए हैं जैसा आपने चाहा वैसे ही आपकी तखलीक हुई। सरकारे आला हजरत इमाम अहमद रजा खाँ फाजिले बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह ने क्या ही खूब फर माया:

तेरे खुल्क को हक ने अजीम कहा तेरी खुल्क को हक ने जमील किया कोइ तुझसा हुवा है ना होगा शहा तेरे खालिके हुस्न व अदा की कसम

किस कदर अफ़सोस का मक़ाम है कि देवबंदी अपने बुजुर्गों के तअल्लुक से इस कदर गुलू से काम ले रहे हैं किसी को मुजर्रसम नूर और सरापा रहमत बता रहे हैं तो किसी को फरिश्त ए मुकर्रब से तशबीह दे रहे हैं और गंगोही जी के जिम्म ए करम पर ना ए बीने रसूल की सियादत का इतलाक़ कर रहे हैं थानवी जी अपने खलीफ़ह के मुतअल्लिक अर्ज पैरा हैं कि उनका लिखा हुवा किरामन कातेबीन से भी ज़्यादा जामे है। सय्यद अहमद राये बरेलवी जो मुजर्रसम शैतान था बकौल इसमाईल देहलवी के उस के लिये मछलियाँ और चूटियाँ दुआ करती थीं और सितम बाला ए सितम ये कि उसको जानवर और दरख्त पहचान कर सलाम भी करते थे और वह जाते गिरामी जिन्हें दरख्तों ने सजदा किया जानवरों और पत्थरों ने सलाम का नज़राना पेश किया जिन की उँगली के इशारे से डूबा हुवा सूरज पलट आया, चाँद टुकड़ों में तकसीम हो गया, उन्हें देहली का चमार, चमार से ज़्यादा ज़लील बता रहा है जबकि मालिके अरब व अजम की जाते मुक़द्दसा को कुरआने हकीम में नूर व बशर दोनों फ़रमाया गया है उम्मत मुस्लिमा का मुत्तफ़िका फैसला और अक़ीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहे वसल्लम नूर व बशर यानी नूरी बशर थे हकाइक़ व मौजूदात पर निगाह डालने से दो किस्म के नूर का सुराग़ लगता है एक तो वह नूर जिसको हम अपनी आँखों से देखते और मुलाहिज़ा करते हैं कि खुद ताबिंदा व दरख़शिन्दा है और दूसरों को ताबिंदगी व दरख़शिन्दगी अता करता है जैसे आफ़ताब खुद रोशन है और माह व अंजुम को रोशनी व ताबानी अता करता

है इस किस्म के नूर को नूरे हिस्सी से ताबीर किया जाता है और एक वह नूर है जिसका इदराक व शऊर हमारे हवासे जाहिरी से बाहर है लेकिन अक्ल के जरिये हम इदराक करते हैं कि ये नूर है और अक्ल उसकी नूरानियत की कायल है कुरआने हकीम को नूर कहा गया है लेकिन उस नूर की चमक दमक का एहसास हम को नहीं होता बल्कि अक्ल के जरिये उस की नूरानियत के कायल होते हैं और ये वही नूर है जिससे आखिरत का रास्ता मिलता है और खुदा तक पहुँचने की राह उसके जरिये से अयाँ होती है सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ऐसे नूर हैं कि जब मुसकुराते तो अंधेरी रात में ऐसी रोशनी पैदा होती कि गुमशुदा सूई तलाश कर ली जाती।

सोजने गुमशुदा मिलती है तबस्सुम से तेरे
रात को सुबहा बनाता है उजाला तेरा

अंबिया की जात मासूम है क्योंकि गुनाह कराने वाला या तो शैतान है या नफ़से अम्मारा और अंबिया ए किराम के नुफ़से अम्मारा होते ही नहीं, लिहाजा अंबिया ए किराम मासूम अनिल ख़ता हैं और औलिया ए कामेलीन की जात महफूज़, मगर दीद ए कोर फितरी नजासत जिसके अन्दर सरायत कर चुकी है वही लोग नबी को गुनाह गार, ख़ता कार, अपनी तरह कह रहे हैं लिख रहे हैं और समझ रहे हैं ऐसे गुस्ताख़ों के तअल्लुक से अल्लाहतआला ने इरशाद फ़रमाया: **وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَّقْ خُلَّةَ تَارَاخَالِافِيهَاوَالَهُ عَذَابٌ مُبِينٌ** और जो अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाखिल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उसके लिये ख़्वारी का अज़ाब है। (कन्जुल ईमान प0,4 अन्निसा,आयत,14)

आफ़ताबे रिसालत माहताबे नबुव्वत की शान में गुस्ताख़ियाँ करना मआज़अल्लाह चमार से भी ज़्यादा ज़लील बताना और पीर व मुर्शिद को मुत्तबिर्इन को नूर ही नूर साबित करना हदसे तजावुज़ करना है कि नहीं? जिसे रब ने नूर फ़रमाया उसकी इहानत और जिसकी कोई हकीक़त नहीं जिन्होंने सारी जिन्दगी निफ़ाक व

गुमरही बुग्ज व कीना का दर्स दिया उसे मकामे आला पर फाइज करने की हत्तल मकदूर कोशिश है याद रखो सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मजहरे जात, मजहरे अहकाम व अखबार में अल्लाह का नूर इस तरह हैं कि जाते बारी तआला से सब से पहले फैज पाने वाले हैं और आप के जरिये से दूसरे लोग फैज लेते हैं अब अगर शम ए नूरे मोहम्मदी को कोई बुझाना चाहे तो हर गिज नहीं बुझा सकता क्योंकि ये अल्लाह के नूर हैं जैसे चाँद, सूरज की कोई पैमाइश नहीं कर सकता जैसे समन्दर का पानी और हवा जिसका इहाता नहीं ऐसे ही आपके नूर का एहाता करना गैर मुम्किन है आप सरापा नूर हैं कुरआन उसकी दलील है। सरकार आला हजरत रहमतुल्लह अलैह फरमाते हैं:

तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे

जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा

मिट गये मिटते हैं मिट जाएंगे आदा तेरे

ना मिटा है ना मिटेगा कभी चर्चा तेरा।

दिल के वसवसों पर झुत्तला होना

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने लिखा है कि

“और इसी तरह कुछ इस बात में भी उन को बड़ाई नहीं कि अल्लाह ने गैब दानी उन के इख्तियार में देदी हो कि जिसके दिल का हाल जब चाहें मालूम करलें”।

(हवाला 1: तकवीयतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0,46)

(हवाला 2: तकवीयतुल ईमान, कुतुब खाना मसऊदिया देहली, स0,44)

(2) “दूसरी जगह आ जनाब लिखते हैं तो और दूसरी चीजें जो आदमी में छुपी हैं जैसे ख्यालात और इरादा नीयत ईमान और निफाक को कैसे जान सकते हैं? और इसी तरह जब कोई अपना हाल नहीं जानता कि कल किया करूँगा तो और किसी का हाल कैसे जान सकता है (ये इबारतें अंबिया व औलिया के तअल्लुक से हैं)

(हवाला 1: तकवीयतुल ईमान, दारुस्सलफिया मुंबई, स0,43)

(हवाला 2: तकवीयतुल ईमान, कुतुब खाना मसऊदिया देहली, स0,40)

(3) मोलवी अशरफ अली थानवी ने कहा कि केराना में एक कस्साब नेक आदमी मस्जिद में रहते थे वह खुद मुझसे ब्यान करते

थे कि मुझे हाजी इमदादुल्लाह की खिदमत में बैठे बैठे दिल में खतरा हुआ कि मालूम नहीं हजरत हाजी साहिब और हजरत हाफिज में से किस का मरतबा बड़ा है हजरत हाजी साहिब इस खतरे पर मुत्तला हुए और फरमाया कि अहले अल्लाह कि निस्वत ये ख्याल करना कि कौन बड़ा है कौन छोटा बे अदबी है।

(हवाला 1:हसनूल अजीज,जि0,1हिरसा3,किस्त,18 मल्फूज,381 स0,13)

(हवाला 2:हकीमुल उम्मत के हैरत अंगेज वाक़ेआत (देवबंद)बाब,8(अशरफुल मल्फूज) स0,514)

(हवाला 3:अल इफाजातिल योगिया (देवबंद) जि0,4किस्त,19 मल्फूज,761 स0,420)

(हवाला 4:अल इफाजातिल योगिया (देवबंद) जि0,1किस्त,2,मल्फूज,409 स0,209)

(4) मोलवी अशरफ अली थानवी कहते हैं कि शाह अब्दुल रहीम साहिब के पहले पीर का नाम भी शाह अब्दुल रहीम साहिब ही था फरमाते थे कि एक मरतबा मैं अपने पीर का सर दबा रहा था पीर साहिब ने कहा कि खूब अच्छी तरह जोर से दबाओ मेरे दिल में ख्याल आया कि जो बहुत जोर से दबाऊंगा तो सर खरबूजे की तरह पिचक जाएगा(कियोंकि शाह साहिब खूब कवी थे) पीर साहिब ने फरमाया कि नहीं भाई तुम खूब जोर से दबाओ खरबूजे की तरह नहीं पिचके गा फिर फरमाया कि वह साहिबे कश्फ थे।

(हवाला 1:हसनूल अजीज,जि0,2हिस्सा2,किस्त,15मल्फूज,294 स0,100)

(5) बकौल थानवी: मौलाना शाह अब्दुल रहीम बड़े नूरानी कल्ब शख्स हैं मैं उनके पास बैठने से बहुत डरता हूँ कि मेरे उयूब मुनकशिफ न हो जायें।

(नोट) शाह अब्दुल रहीम से मुराद शाह अब्दुल रहीम राय पुरी हैं।

(हवाला 1:हसनूल अजीज,जि0,4हिस्सा 2 किस्त,10 स0,214)

(हवाला 2:हिकायातुल औलिया हिकायत,240 स0,234)

(हवाला 3: अरवाहे सलासा हिकायत,438स0,401)

(6) मौलाना कासिम नानोतवी, मोलवी मोहम्मद याकूब कल्ब के अन्दर जो निहायत बारीक चोर होते हैं उनसे भी खूब वाकिफ थे

(हवाला 1:हिकायातुल औलिया हिकायत,107 स0,140)

(हवाला 2:अद्देवबंदिया (अरबी)स0,153)

(हवाला 3: अरवाहे सलासा हिकायत,107 स0,121)

(7) अंबिया व औलिया के मुतअल्लिक मोलवी इसमाईल देहलवी के कलम की आवारगी मुलाहिजा हो। "और जो वहम व ख्याल मेरे दिल मे गुजरता है वह सबसे वाकिफ है तो इन सब बातों से आदमी मुशरिक हो जाता है "।

(हवाला 1:तकवियतुल ईमान,दारुससलफिया मुंबई, स0,23)

(हवाला 2:तकवियतुल ईमान,कुतुब खाना मराऊदिया देहली, स0,18)

(8) मोलवी रशीद अहमद गंगोही ने अपने शागिर्द मोलवी वली मोहम्मद के दिल की खुवाहिश जानली पूरा वाक़ेआ हरबे जेल हैं।

“मुन्शी कादिर बख़्श साहिब बुलंद शहरी तहरीर फ़रमाते हैं कि मौलाना खलीलुल रहमान जिनको साबिक अमीरे काबुल याकूब जान कहा जाता है उन की बुजुर्गी के सबब हमेशा अपने साथ रखा करते हैं, फ़रमाते हैं कि मैं जिस ज़माने में हज़रत की खिदमत में हदीस पढ़ता था एक तालिबे इल्म वली मोहम्मद वे चारों बहुत मिसकीन और पारसा शख्स थे जो थोड़ा सा खर्च उनके घर से आया करता बस उसीमें गुज़र किया करते थे कैसी ही ज़रूरत हो कभी दोस्त या हम जमाअत तक से ज़िक्र ना करते थे एक बार मकान से खर्च आने में देर हुई और उनको एक या दो फाक़े की नौबत पहुँची मगर ना उन्होंने किसी से ज़िक्र किया ना किसी सूरत यह हाल किसी पर जाहिर हुवा ऐसी हालत में सुबह के वक्त बग़ल में किताब दबाये पढ़ने के वास्ते हज़रत की खिदमत में आ रहे थे कि रास्ते में हलवाई की दूकान पर गर्म गर्म हलवा पक रहा था ये कुछ देर वहाँ खड़े रहे कि कुछ पास हो तो खायें मगर पैसा भी न था, इसलिये सब्र करके चल दिये और ख़ानिकाह में पहुँचे हज़रत (गंगोही) गोया उनके मुन्तज़िर ही बैठे थे सलाम का जवाब दे तेही फ़रमाया मोलवी वली मोहम्मद आज तो हलवा खाने को हमारा जी चाहेता है लो ये चार आना लेजाओ और जिस दूकान से तुमको पसंद हो वहीं से लाइयो, गरज़ कि मोलवी वली मोहम्मद उसी दूकान से हलवा ख़रीद कर लाए और हज़रत के सामने रख दिया हज़रत ने इरशाद फ़रमाया मियाँ वली मोहम्मद मेरी ख़्वाहिश ये है कि इस हल्वे को तुम ही खालो, मोलवी वली मोहम्मद इस किस्से के बाद फ़रमाया करते थे कि हज़रत के सामने जाते मुझे डर मालूम होता है क्योंकि क़ल्ब के वसाविस इख़तियार में नहीं और हज़रत उन पर मुत्तला होजाते हैं(हवाला 1:तज़के रतुल रशीद जि0,2,स0,226)

(हवाला 2:अददेवबंदिया तारीफ़ुहा व अकाइदुहा (अरबी), स0,151)

मरने का हाल, वक्त और जगह बताना

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने तकवीयतुल ईमान फरसल दोम इशराक फिल इल्म के रद में लिखा है कि "और इसी तरह जब कोई अपना हाल नहीं जानता कि कल किया करूँगा तो और किसी को कैसे जान सकता है और जब अपने मरने की जगह नहीं जानता तो किसी और के मरने की जगह कैसे जान सकता है।

(हवाला 1:तकवीयतुल ईमान,दारुस्सलफिया मुंबई, स0,43)

(हवाला 2:तकवीयतुल ईमान,कुतुब खाना मसऊदिया देहली, स0,40)

(2) मोलवी सादेकुल यकीन की मौत का वक्त गंगोही ने बताया ये वाक़ेआ हर्फ बा हर्फ हसबे ज़ेल है।

"हज़रत मौलाना सादेकुलयकीन साहिब एक बार सख़्त अलील हुए वाक़ेफीन अहबाब भी ये ख़बर सुन कर परेशान हो गए और हज़रत (यानी गंगोही) से अर्ज किया कि दुआ फ़रमादे हज़रत ख़ामोश हो रहे और बात को टाल दिया जब दोबारा अर्ज किया गया तो आपने तसल्ली दी और यूँ फ़रमाया मियाँ वह अभी नहीं मरेंगे और अगर मरेंगे तो मेरे बाद चुनाँचे ऐसा ही हुवा कि उस मर्ज से सिहत हासिल हो गई और हज़रत के विसाल के बाद उसी साल माहे शव्वाल हज्जे बैतुल्लाह के लिये अरब रवाना हुए, मक्का मोअज्जमा में बीमार हुए मर्ज ही में अरफ़ात का सफ़र किया यहाँ तक कि शुरू मुहर्रम में वासिले बहक़ होकर जन्नतुलमुअल्ला में मदफ़ून हुए हज़रत इमाम रब्बानी (यानी गंगोही)और मौलाना सादेकुलयकीन साहिब के विसाल में कुछ दिन कम व बेश सात माह का तफ़ावत रहा "

(हवाला 1:तजकिरतुल रशीद जिल्द,न0,2 स0,209)

(3) बकौल थानवी मोलवी कासिम नानोतवी जब ब मर्ज मौत बीमार हुए तो मोलवी याकूब नानोतवी ने बज़रिये मुराक़ेबा मालूम किया कि मोलवी कासिम नानोतवी की उम्र कितनी है "चुनाँचे" 49,साल की उम्र हुई और मौत हो गई।

(हवाला 1:हसनूल अजीज़ जि02,हि02,किस्त,15 मल्फूज़325,स0,121)

(4) मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने कहा कि हज़रत मुज़फ़्फ़र हुसैन काँधल्वी हज को तशरीफ़ ले गए और मदीना जाना चाहते थे कि

सख्त बीमार हो गए, डरे कि अब मदीना न जा सकूंगा शायद यहाँ ही मर जाऊँगा और तमन्ना थी मदीने में मरने की उन्होंने हाजी साहिब (इमदादुल्लाह) से पूछा हजरत ने फरमाया कि आप मदीना पहुँचेंगे और यहाँ नहीं मरेंगे इतमीनान रखये चुनौचे ऐसा ही हुवा ।

(हवाला 1: हकीमुलउम्मत के हैरत अंगेज वाकेआत (देवबंद) स0,555)

(हवाला 2: हिकायातुल औलिया हिकायत, 201 स0,221)

(हवाला 3: अरवाहे सलासा हिकायत, 201 स0,201)

(हवाला 4: अलइफाजातुल योगिया जि0,3 किस्त, 17 मल्फूज, 374 स0,185)

(हवाला 5: तजकेरतुल खलील (सहारनपुर) 1411 हि0, स0,102)

(5) मोलवी नज़र मोहम्मद खाँ ने एक मरतबा परेशान होकर गंगोही से कहा कि हजरत फ़लाँ शख्स जो वालिद साहिब से अदावत रखता था उनके इन्तिकाल के बाद मुझसे नाहक अदावत रखता है बे साख़्ता गंगोही ने कहा वह कब तक रहेगा चंद रोज़ गुज़रे कि दफ़अतन वह शख्स इन्तिकाल कर गया ।

(हवाला 1: तजकेरतुल रशीद जि0,2 स0,214)

मोहतरम हज़रात मुंदरजा बाला इवारतों को खूबखूब पढ़िये और तसफिया कीजिये

वह लोग जो नबी ए ग़ैब दाँ सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे ग़ैब के मुन्किर हैं और इल्मे मुस्तफ़ा अलैहित्तहिय्यतो वस्सना को मजनून और पागल के मिस्ल बता कर शैतान के इल्म को ज़ियादा साबित कर रहे हैं वही लोग अपने अकाबिरीन और मोआसेरीन को इल्मे ग़ैब और कश्फ़ व मुराक़ेबा में यक़ता ए रोज़गार बता रहे हैं गंगोही जी जो सारी ज़िन्दगी तन्कीसे अंबिया और गुस्ताख़ि ए रसूल करना अपना महबूब मशग़ला तसव्वुर करते थे वही गंगोही जी मौत और ज़िन्दगी का पता बता रहे हैं, यही गंगोही अपने शागिर्द के हालात जान कर ख्वाहिश की तकमील हल्वा के ज़रिये कर रहे हैं हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुज़फ़्फ़र हुसैन काँधलवी की तमन्ना पूरी कर रहे हैं और मोलवी इसमाईल देहलवी ये साबित कर रहे हैं कि कोई शख्स अपने या पराये के मरने और दफ़न होने की जगह कैसे मालुम कर सकता है थान्वी साहिब ने मौलाना अब्दुल रहीम को बड़े नूरानी क़ल्ब वाला शख्स करार दे कर साहिबे कश्फ़ बताया है देवबंद के मोल्वियो! तुमहें

किया हो गया है तुम ने लिखने से पहले अपने दिमाग का इलाज क्यों न किया गंदे और गलीज लोगों के मरातिब और दरजात इस कदर बढ़ा दिये और वोह जाते गिरामी जो कायेनात में सबसे मोअज्जम और मोहतरम है जिसके जिक्र को रखने अपना जिक्र फरमाया जिसकी इताअत को अल्लाह तआला ने अपनी इताअत फरमाई जो शाफ ए यौमुन्नुशूर हैं मालिके कुल कायेनात हैं ताजदारे दो आलम हैं जब जब मोअज्जिन सदाए तौहीद बलंद करेगा अल्लाह की किबरियाई के साथ रसूल की रिसालत का जिक्र होगा उनकी शाने अक़दस में गुस्ताखी और बे अदबी कर के रसूल दुशमनी मोल लेने वालो! कुछ तो सोचा होता तारीख़ की किताबों का मुताला किया होता क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जंगे बद्र में आका सल्लललाहो अलैहे वसल्लम रात ही में चन्द जाँनिसारों के हमराह मैदाने जंग का मुआयेना करने के बाद अपनी मुबारक छड़ी से जमीन पर लकीर बनाते हुए इरशाद फरमाते हैं कि यहाँ फ़लाँ काफिर का क़त्ल होगा यहाँ फ़लाँ काफिर का क़त्ल होगा यहाँ अबू जहल की लाश तड़पे गी, यहाँ उतबा हलाक होगा, यहाँ शैबा को अपने खून में नहाना होगा चुनानचे ऐसा ही हुवा आपने जिन जिन जगहों पर जिस जिस काफिर की क़त्ल गाह बताई उस काफिर की लाश उसी जगह पाई गई!

उनमें से किसी काफिर ने बाल बराबर भी तजावुज न किया रसूले खुदा सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने मरने वाले काफिर और उसकी क़त्ल गाह से मैदाने जंग में जो ख़बर दी किया वहाबी के पेशवाओं को उस से इन्कार है ? अगर इन्कार नहीं है तो फिर इल्मे मुसतफ़ा पर तनकीस व तौहीन किस लिये किया जाराहा है। सरकारे आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं

करे मुस्तफ़ा की एहानतें खुले बंदो उस पे ये जुरअतें
कि मैं किया नहीं हूँ मोहम्मदी अरे हाँ नहीं अरे हाँ नहीं

हयात बोदे मौत

(1) मोलवी अहमद हसन साहिब अमरोही और फ़ख़रुल हसन

गंगोही में आपस में इख्तेलाफ़ था दारुल उलूम देवबंद के सदरुल मुदर्रेसीन मोलवी महमूद हसन देवबंदी गैर जानिब दार रहने के बजाए एक जानिब झुक गए उसी दौरान दारुलउलूम देवबंद के मोहतमिम रफीउद्दीन ने एक दिन अलस्सुबह बाद नमाजे फज्र मोलवी महमूदुल हसन को अपने हुजरे में जो दारुल उलूम देवबंद में था वहाँ बुलाया मोलवी महमूद हसन गए तो मोलवी रफी उद्दीन ने कहा कि वाक़ेआ ये है कि अभी अभी मौलाना नानोतवी (रूह) जस्टे उंसुरी के साथ मेरे पास तशरीफ़ लाए थे जिससे मैं एक दम पसीना पसीना हो गया और मेरा ये लिबादा तर हो गया उस वक्त मोसम सख्त सरदी का था मौलाना नानोतवी ने मुझसे फरमाया कि महमूद हसन को कहदो कि इस झगड़े में न पड़े पस मैंने ये कहने के लिये बुलाया है मोलवी महमूद हसन ने कहा कि हज़रत मैं आपके हाथ पर तोबा करता हूँ कि इसके बाद इस किस्से में कुछ ना बोलूँगा।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत 247 स0,261)

(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत 247 स0,242)

(2) मोलवी अशरफ़ अली थानवी अपने दादा सुलतान शहाबुद्दीन का एक वाक़ेआ इन्तेक़ाल के बाद ज़िन्दा होकर अपने घर आने का इस तरह बयान करते हैं।

“शहादत के बाद एक अजीब वाक़ेआ हुवा शब के वक्त अपने घर मिस्ल ज़िन्दा के तशरीफ़ लाए और अपने घर वाली को मिठाई लाकर दी और फ़रमाया कि अगर तुम किसी से ज़ाहिर ना करोगी तो इसी तरह रोज़ आया करेंगे लेकिन उनके घर वाली को ये अन्देशा हुआ कि घर वाले जब बच्चों को मिठाई खाते देखेंगे तो मालूम नहीं किया शुबा करें इस लिये ज़ाहिर कर दिया और फिर आप तशरीफ़ नहीं लाए यह ख़ानदान में मशहूर है।”

(हवाला: अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द 1 स0,12)

(3) बादे मौत मिस्ल ज़िन्दा होने का वाक़ेआ मोलवी अशरफ़ अली थानवी की ज़बानी।

“मौलाना इसमाईल साहिब शहीद के काफ़िले में एक शख्स शहीद होगए जिनका नाम बेदार बख्त था वह देवबंद के रहने वाले थे उनकी शहादत की ख़बर आचुकी थी उनके वालिद हसबे मामूल

एक रात तहज्जुद की नमाज के लिए उठे तो घर के बाहर घोड़े की टापों की आवाज आइ और फिर एक शख्स ने दरवाजा खोला देखा तो उनके लड़के बेदार बख्त हैं यह देखकर हैरान होगए कि उनके मुतअल्लिक तो मालूम हो चुका था कि शहीद हो चुके हैं यह कैसे आगए बेदार बख्त ने कहा कि जल्दी कोई फर्श वगैरह बिछाइये मोलवी इसमाईल साहिब और सय्यद साहिब यहाँ: तशरीफ़ ला रहे हैं उनके वालिद ने फौरन एक बड़ी चटाई बिछादी एक मजमा उस फर्श पर आ बैठा बेदार बख्त से उनके वालिद ने कहा तुमहारे कहाँ तलवार लगी थी ? उन्होंने अपना ढाटा खोला और निस्फ़ चेहरा अपने दोनों हाथों में लेकर अपने बाप को दिखाया कि यहाँ तलवार लगी थी उनके बाप ने कहा कि बाँध लो मुझसे देखा नहीं जाता थोड़ी देर बाद यह हज़रात वापस तशरीफ़ लेगए सुबह को बेदार बख्त के वालिद को शुबा हुवा कि कहीं ख़्वाब तो नहीं था मगर चटाई पर देखा तो खून के क़तरे मौजूद थे यह वह क़तरे थे जो बेदार बख्त के चेहरे से गिरे हुए उनके वालिद ने देखे थे उन क़तरों को देखने से वह यह समझे कि यह बेदारी का वाक़ेआ है।”

(हवाला:1,अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि 4 कि0, 24 मल0,312स0,371)

(4) एक और वाक़ेआ थानवी जी की ज़बानी सुनये।

“एक साहिबे कश्फ़ हज़रत हाफ़िज़ साहिब (ज़ामिन थानवी) के मज़ार पर फ़ातिहा पढ़ने लगे बादे फ़ातिहा कहने लगे कि भाई ये कौन बुजुर्ग हैं बड़े दिल लगी बाज़ हैं जब मैं फ़ातिहा पढ़ने लगा मुझसे फ़रमाने लगे फ़ातिहा किसी मुर्दे पर पढ़यो यहाँ जिंदों पर फ़ातिहा पढ़ने आए हो ये किया बात है कि जब लोगों ने बतलाया ये शहीद हैं (लानतुल्लाहे अललकाज़िबीन)

(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,205स0,223)

(हवाला:2,अरवाहे सलासा हिकायत न0,205स0,202)

(5) एक और दिल लगी मुलाहिज़ा हो:

“मोलवी इलयास काँधलवी(बानी तबलीगी जमाअत)के वालिद मोलवी इसमाईल साहिब का इन्तेक़ाल हुवा और जनाज़ह की नमाज़ पढ़ने में देर हुई तो मोलवी इसमाईल अपने को जल्दी रुख़्सत करने के लिये कह रहे हैं जनाज़ह में इतना हुजूम और ऐसी कसरत थी

कि लोगों ने बार बार नमाज़ पढ़ी जिसकी वजह से दफ़न में कुछ ताख़ीर हुई इस अरसे में एक साहिब इदराक बुजुर्ग ने देखा कि मोलवी इसमाईल साहिब फ़रमाते हैं कि मुझे जल्दी रुख़्सत कर दो मैं बहुत शरमिन्दा हूँ कि हुज़ूर सल्लललाहे अलैहे वसल्लम सिहाबा के साथ मेरे इन्तेज़ार में हैं।

(हवाला:1,मौलाना इलयास और उनकी दीनी दावत(देहली)स0,47)

(हवाला:2,अल्कौलुलबलीग़ फ़ित्तहरीर मिन जमाअतित्तबलीग़(अरबी)स0,139)

देवबंदी मल्लाओं की बाज़ी गरी

वाह वाह बाज़ी गरी ऐसी कि अक़ल भी हैरान किसी की रूह अपने उंसुर के साथ वापस आ रही है और कोई अपनी ऐहलिया के लिये मिठाई का डिब्बा ला रहा है और बेदार बख़्त ने तो कमाल ही कर दिया बेचारे चटाई बिछवा रहे हैं और कटे हुए दस्त व बाजू का मुशाहिदा भी करवा रहे हैं सादा लौह मुसलमानों को फ़रेब देना आसान है मगर अक़ल व ख़िरद को धोका देना बईद अज़ क़यास है आईये हम मोलवी इसमाईल देहलवी से सवाल करते हैं कि बादे मौत मिस्ल जिन्दा होना आपके नज़दीक कैसा है? आँ जानाब अपनी खुबासत का इज़हार इस तरह कर रहे हैं हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया यानी कि मैं भी एक दिन मरकर मिट्टी में मिलने वाला हूँ।

(तक़वियतुल इमान,दारुस्सलफ़िया मुम्बई स0100)

मोलवी इसमाईल देहलवी के अक़ीदे के ऐतिबार से हुज़ूर मरकर मिट्टी में मिल गए (मआज़अल्लाह) तो अकाबिरीने देवबंद क्यों कर बादे मुर्दन जिन्दा हैं ये फ़रेब और धोका नहीं तो और किया है? जिनकी जिन्दगी की बशारत कुरआन दे रहा हो उनको मरकर मिट्टी में मिलजाने को बताया जा रहा है और जिनकी जिन्दगी ज़हनी अय्यारी और फ़िकरी अय्याशियों में गुज़री हो जिनके मुस्तद और काफ़िर होने का फ़तवा अरब व अजम के उलमा व फ़ुक़हा ने दिया हो उनके मरने के बाद हयात का नग़मा पढ़ा जा रहा है बात समझ से बाला तर है कि अपने नबिये मुहतरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात व सिफ़ात को तनकीद व तनकीस का निशाना बनाने वाले

अपने फिकर व एतेकाद के बुजुर्गों की शानमें कसींदे पढ़ पढ़ कर उनके घटिया और नाकिस वजूद को रिफअत व बलंदी के आला मीनारे पर फाइज करते हैं।

जब कि मोमिन का ईमान अपने नबी से वालेहाना मोहब्बत और ताजीम का दर्स देता है मेरे सरकार आला हजरत रजियल्लाहु अनहो अपने आका सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के गुस्ताखों की तरफ निगाहे ग़लत उठाकर देखना भी तौहीन के जुमरे में तसव्वुर करते थे और सारी दुनिया को पैगाम देते रहे कि

शिक ठहरे जिसमें ताजीमे हबीब
उस बुरे मजहब पे लानत कीजिये

रसूले गिरामी वकार के तअल्लुक से गुम गशतए राह मुल्लाओं कि हट धरमियाँ और उनकी रेशा देवानियाँ पढ़ कर गैरत को भी पसीना आ जाता है अगर मुल्लाओं के आबा व अजदाद और खानदानी बुजुर्गों के बारे में यही अलफाज इसतेमाल कर लिए जायें तो चराग पा हो कर दर सरे पैकार हो जायें मगर ये लोग उस रसूल के बारे में लब कुशाई की जुरअत करते हैं जो इन्सानों का, फ़रिश्तों का हूर व गिल्मों का यहाँ तक कि नबियों का भी रसूल है और अल्लाह की तरफ से भेजा गया आखिरी ताजदार है जिस पर रब तआला खुद दुरुद भेजता है जिसकी बैअत अल्लाह की बैअत, जिसके हाथ को अपना हाथ जिस की इताअत को अपनी रजा करार दे रहा है। इमामे ऐहले सुन्नत सरकार आला हजरत रजियल्लाहो अनहो ने किया ही खूब फरमाया

फर्श वाले तेरी शौकत का उलू किया जाने

खुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

अल्लाह तआला ने बा ऐतेबार तफावुते दरजात अपने मकबूल बंदों की जो तरतीब कुरआने करीम में बयान फरमाई है उसमें पहले अंबिया फिर सिद्दीकीन उसके बाद शुहदा व सालेहीन का जिक्र किया है शुहदा को जिन्दा मानने का हुक्म है जो इबारतुन्नस से साबित है और सुल्हा में सबसे पहले आमिले बिल कुरआन हैं इमाम जलालुद्दीन सियूती अलैहिर्रहमा ने शरहुस्सुदूर में हजरत जाबिर इबने अब्दुल्लाह अंसारी से नक़ल करते हैं कि उन्होंने हुजूर

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से यह फरमाते सुना कि जब आमिल बिलकुरआन हाफिज मरता है तो अल्लाह तआला जमीन को हुक्म देता है कि ऐ जमीन तु इस जिस्म को मत खाना। जमीन अर्ज करती है खुदाया मैं ऐसे को किस तरह खा सकती हूँ जिसके जौफ में तेरा कलाम मौजूद है अब इन्साफ से बताइये किसी शौ पर अमल उस शौ की फरा है और वह शौ वह कलामे इलाही है जो जबाने नुबुव्वत से सादिर हुवा हो तो नबी जिस की जबान सब कुन की कुन्जी है वह किस तरह मरकर मिट्टी में मिल सकता है जबकि अल्लाह ने जमीन पर हराम कर दिया है कि वह अंबिया का जिस्म खाए कैसे कहा जाए की वहाबियों के अकाबेरीन ने ये हदीस नहीं पढ़ी होगी लेकिन जब किसी को अजमत व रिसालत से हसद हो तो उसका किया इलाज।

आँखें अगर हैं बंद तो फिर दिन भी रात है

इसमे भला कुसूर किया है आफताब का

हयातुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तअल्लुक से तफसीरे अजीजी स0,518 देखिये रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम नूरे नबुव्वत के साथ अपने दीन में दाखिल होने वाले हर शख्स के अहवाल से मुत्तला हैं वह कौनसा अमल है जो आपसे पोशीदा है यहाँ तक कि दरजाते आमाल और अखलाक व निफाक को भी जानते हैं ये मुशाहिदा अब भी बेऐनेही कायम व दायम है जिस तरह जाहिरी हयाते मुकद्दसा में था आज भी पेश किये जाते हैं मशहूर ताबई हजरत सईद बिन मुसय्यिब रजियल्लाहो अनहो फरमाते हैं

ليس من يوم الا وتعرض على النبي صلى الله عليه وسلم اعمال امته غدوه وعشيه بسيماهم واعمالهم فلذلك يشهد عليهم

(अलमवाहिबे लदुन्निया जि02, स0,387) ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता जिसमें सुबह व शाम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की खिदमते बाबरकात में उम्मत के अहवाल व आमाल पेश न होते हों हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने उम्मतयों को उनकी सूरतों और आमाल के साथ जानते हैं यही वजह है कि कयामत के रोज उन पर गवाही देंगे गौर व फिकर का मुकाम है कि आमाल का पेश

होना और उसका मुशाहिदा फरमाना और फिर उनकी सूरतों को जानना ये तमाम चीजें क्या आपकी हयात पर रोशन दलील नहीं हैं ? और फिर बरोजे हशर अपनी उम्मत पर गवाही देंगे यकीनन दलाइल की बुनयाद पर हयाते नबी का मसला पाए सुबूत को पहुँच गया दूसरी अहेम बात जो इन दलाइल व बराहिन से सबित होती है वह आपका इल्म व इदराक है कि उम्मती जिस हाल में हो ख्वाह फिस्क व फजूर से तअल्लुक रखता हो और अल्लाह जल्ला शानहू की ना फरमानियाँ करता हो या नेक अमल करने वाला हो सबका एहसास और इल्म आपको है बंदा गुनाह का मुरतकिब है तो आपको तकलीफ़ होती है जिस तरह जिस्म के आज़ा के हर हिस्से की कैफ़ियात को ज़हेन महसूस करता है ठीक उसी तरह पियारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे असल्लम अपने उम्मतियों की तकलीफ़ को महसूस करते हैं अब वह लोग बतायें जो नबी के इल्म को शैतान और पागल के इल्म से तशबीह देते हुये शैतान के वुसअते इल्म को साबित करके अपनी खुबासत का इज़हार करते हैं किया उन महसूसात का इल्म व इदराक नबी के अेलाव किसी को हो सकता है ? जबकि महसूसात का इल्म ग़ैब दर्ज़ी पर मुन्तबिक़ होता है जाहिल और कोरे बातिन मुल्लाओं से मेरा सवाल है कि अगर महसूसात के इल्म पर तुम्हारे पास कोई शैतानी दलील हो तो पेश करो वरना गुमराहियत से तोबा करके तौहीने मुस्तफ़ा सल्लल्लोहे अलैहे वसल्लम से बाज़ आजाओ और अपने अकाबिरीन की अनकही बातों से तोबा करके वफ़ादाराने पैग़म्बर की जमाअत में शामिल होकर अपनी गुलामी का सुबूत पेश करदो ताकि कड़े अज़ाब से निजात पाजाओ और आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान में एलान करदो ।

मैं मुजरिम हूँ आका मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले

अल्लाह और रसूल ने चाहा कहना ग़लत है

(1) मोलवी इसमाईल देहलवी ने अपनी किताब तकवियतुल ईमान में लिखा है कि "यूँ ना बोलिये कि अल्लाह व रसूल चाहेगा तो फलों काम हो जाए गा क्योंकि जहाँ का सारा कारोबार अल्लाह ही के चाहने से होता है रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता "

(हवाला:1,तकवियतुल ईमान,दारुस्सलफिया मुंबई स0,96)

(हवाला:2,तकवियतुल ईमान,कुतुब खाना मसऊदिया देहली स0,96)

(2) मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने लिखा है कि "यूँ कहना कि खुदा और रसूल सल्लललाहो अलैहे वसल्लम अगर चाहेगा तो फलों काम हो जाएगा शिर्क है।

(हवाला:1बहिश्ती ज़ेवर,रब्बानी बुक डिपो देहली हिस्सा,1स0,35)

(3) मोलवी अशरफ़ अली थानवी का अपने पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की के मुतअल्लिक एतेकाद कि उनका चाहा हुवा टल नहीं सकता ,हस्बे ज़ेल इबारत उस की शहादत दे रही है।

"मोलवी अशरफ़ अली थानवी ने कहा हज़रत हाजी(इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की) ने एक मरतबा मुझसे फ़रमाया कि तुम्हारी ख़ाला तुम्हारे लिये औलाद की दुआ करने को कहती थी ,मैंने कह दिया कि मैं दुआ करूँगा लेकिन तुम्हारे लिये इसी हालत को पसंद करता हूँ जैसा कि मैं खुद हूँ यानी बे औलाद सामान सब कुछ हुए मगर चाहा तो बड़े मियाँ ही का हुवा ,अल्लाह तआला का उनके साथ ख़ास मुआमिला था वह कहाँ टल सकता था"

(हवाला:1,अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,3किस्त,14मल0,707,स0,439)

(हवाला:2,अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,1किस्त,1मल0,111,स0,60)

(हवाला:3,अशरफ़ुस्सवानेह जि0,1स0,188)

(हवाला:4,हसनूल अजीज जि0,1 हिस्सा 3,कि0,18 मल0,409,स0,39)

(हवाला:5,अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,किस्त10,मल0935,स0,523)

अकाबिरीने देवबंद का दावा ए अज़मत व अनानियत

(1) गंगोही जी ने खुद अपने मुतल्लिक कहा कि

“सुनलो हक वही है जो रशीद अहमद की ज़बान से निकलता है और ब कसम कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं हूँ मगर इस ज़माने में हिदायत व निजात मौकूफ है मेरे इत्तेबा के बग़ैर”

(हवाला: तजकेरतुरशीद जि0,2,स0,17)

(2) थानवी को इल्मे ज़रूरी के दरजे में एहसास था कि अल्लाह तआला ने थानवी को हुज्जतुल्लाहे फ़िल्अद बनाकर दुनिया में भेजा है

(हवाला: अशरफुरससानेह जि0,1स0,84)

(3) दारुल उलूम देवबंद के मोहतमिम रफीउद्दीन के हलकए तवज्जो में थानवी शिरकत करते थे और उस शिरकत के असर के तअल्लुक से थानवी ने खुद कहा “मुझको उस ज़माने में ऐसा मालूम होता था जैसे मुझमें नफ़सानियत का शाइबा भी नहीं रहा और मैं बिल्कुल फ़रिशता हो गया”

(हवाला: 1, अशरफुरससानेह जि0,1स0,172)

(4) मोलवी इसमाईल देहलवी के पीर व मुर्शिद अहमद राय बरेलवी ने खुद अपने मुतअल्लिक कहा कि अलहमदो लिल्लाह मैं अल्लाह का वह बन्दा हूँ जिसके लिये मछलियाँ पानी में और चूंटियाँ सुराखों में दुआ करती हैं और जिस तरफ़ को मैं निकल जाता हूँ वहाँ के दरख्त और जानवर तक मुझे पहचानते और सलाम करते हैं”

(हवाला: 1, हिकायातुल औलिया हिकायत न0,117,स0,151)

(हवाला: 2, अरवाहे सलासा हिकायत न0,117,स0,131)

(5) थानवी साहिब ने कुछ नए उसूल व ज़वाबित तशकील दिये थे जिस की वजह से लोगों में चेमीगोईयाँ हो रही थीं इस ज़िम्न में थानवी ने कहा कि “हज़रत उमर फ़ारूक़ ने जो हद कायम की थी वह हुजूर के ज़माने में ना थी इसी तरह मेरे यह मामूलात अपने बुजुर्गों में ना थे तो अगर मुझ पर कोई एतराज़ करे कि वह काम करता है जो बुजुर्गों ने नहीं किया तो उस का जवाब हज़रत उमर की तरफ़ से जो होगा वही जवाब इस उमर यानी मेरी तरफ़ से ख़्याल कर लिया जावे” ।

(हवाला: 1, अल इफ़ाजातुल योमिया (देवबंद) जि0,1किस्त,1मल0,240,स0,136)

(6) थानवी जी कहते हैं

“तरीक मुर्दा हो चुका था अहया की हक तआला ने मुझे तौफीक अता की”

(हवाला:1,अल इफाजातुल योमिया जि0,2किस्त,1मल0,220,स0,127)

(7) एक शख्स ने थानवी से कहा कि मुनकर नकीर के सवाल का जवाब तो आसान है मगर आपके सवालात का जवाब मुश्किल है जवाब में थानवी ने कहा बिल्कुल सही है।

(हवाला:1,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त4,मल0889,स0,450)

(हवाला:2,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,किस्त7,मल0353,स0,193)

(हवाला:3,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त1,मल091,स051)

(8) थानवी ने नवाब ढाका का कौल नक्ल करके अपने मुतअल्लिक कि जिसने सहाबा को न देखा हो वह थाना भवन जा कर देखले.

(हवाला:1,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,3किस्त,17मल0386,स0192)

(हवाला:2,अल्कलामुल हसन जि0,1किस्त9,मल0185,स0,88)

(9) थानवी की वजह से थाना भवन गर्क होने से सलामत रहा।

(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत न0,430 स0,413)

(हवाला:2,अरवाहे सलासा हिकायत न0,,430 स0,391)

(10) थानवी ने कहा कि तरीक मुर्दा हो चुका था मुद्दतों बाद दो बारा जिन्दा हुवा अब सदयों तक तजदीद की जरूरत नहीं, मेरे जैसे पीर की जरूरत है।

(हवाला:1,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,2किस्त,8मल0580,स0308)

(हवाला:2,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,किस्त10,मल0937,स0,323)

(हवाला:3,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि0,3किस्त14,मल0525,स0357)

(11) थानवी ने अपने खलीफा ख्वाजा अजीजुल हसन से कहा कि मैं एक ही जलसे में तालिब को खुदा तक पहुँचा देता हूँ।

(हवाला:1,अल इफाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त1,मल011,स018)

(12) एक मरतबा गंगोही ने मजमए कसीर में ये अल्फाज कहे कि ये जो मेरा तरीका है बेऐनेही सहाबा रजियल्लाहो अन्हुम का तरीका है इस पर साबित कदम रहना और इस को हाथ से न देना।

(हवाला:1,तजकेरतुल रशीद जि02,स034)

चे निस्वत खाक रा बाउगालमे पाक

मुदरजा बाला दोनों इबारते पढ़कर तसफिया कीजिये ।
 देवबंदियों के यहाँ अल्लाह व रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता और ये कहना ग़लत ही नहीं बल्कि शिर्क के दर्जे में है इसके बावजूद अशरफ़ अली थानवी इकरार कर रहे हैं कि हाजी इमदादुल्लाह साहिब ने जो कह दिया वही हुवा, गंगोही जी अपनी इत्तेबा को सनदे निजात साबित कर रहे हैं, थानवी जी हुज्जतुल्लाहे फ़िलअरदीन बनाकर भेजे गए, किसी के लिए मछलियाँ और चूंटियाँ दुआ कर रही हैं तो कोई कह रहा है कि हमें जानवर और दरख्त पहचान कर सलाम करते हैं (नऊजु बिल्लाहे मिन जालिक) ये ऐसे लोग हैं जिनसे तौहीने अंबिया साबित है पैगम्बरे इस्लाम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को दरो दीवार सलाम अर्ज करें दरख्त सजदा करें, जानवर कलाम करें, सारी मखलूक़ात हाजत रवा जानें उन्हीं के तअल्लुक़ से ये अकीदा कि उनके चाहने से कुछ नहीं होता और अल्लाह और रसूल साथ में मिलाकर बोलना संगीन जुर्म बताया जा रहा है कुरआने हकीम में रब तआला ने इरशाद फ़रमाया”
 ”اطيعوا الله واطيعوا الرسول“ ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का । इस आयते करीमा में अल्लाह जल्ला शानुहू ने अपने महबूब की इताअत हर हुक्म में वाजिब करार दिया है, अगरचे किसी को कुरआन के खिलाफ़ ही क्यों न हुक्म दें वाजिब के दर्जे में होगी जैसे हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को हज़रते फ़तिमह ज़हरा रज़ियल्लाहो अन्हा की मौजूदगी में दूसरी औरतों से निकाह की इजाज़त न थी हज़रते ख़ुजेमा अंसारी रज़ियल्लाहो अन्हो की तनहा गवाही दो के बराबर तसलीम की गई और ऐसा क्यों न हो हुज़ूर हाकिमों के हाकिम, सुल्तानों के सुल्तान, जो फ़रमा दें और जिसके लिए फ़रमा दें वही उसके लिये क़ानून बन जाए सरकार की इताअत अल्लाह रब्बुल इज्जत की इताअत है यही वजह है कि जिन लोगों ने उस से अलग जाना वह मुर्तद और गुमराह हुए और उसकी सज़ा क़त्ल मुतअय्यन हुई दीने इस्लाम क़बूल करने के बाद जब कोई ज़रूरी अक़ाइद का इन्कार करे और तोबा न करे तो उसे शरई इस्तिलाह में मुर्तद कहा जाता है और उसकी सज़ा शरीअत में क़त्ल है और ये उसूल है कि क़ानून का

मुन्किर गद्दार और बागी कहलाता है और दुन्या के कानून में गद्दार की सजा कत्ल है देखो बिशर मुनाफिक ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फैसले से रू गरदानी की तो सय्यदुना हजरत उमर फारूक रजियल्लाहो अन्हो ने उस मुर्तद का सर कलम करके " **اطيعوا الله واطيعوا الرسول** " का अमली मुजाहिरा फरमाकर ये पैगाम दिया कि जब भी रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फैसले को ना मानने वाली जमाअत के अफराद से मुलाकात हो तो जरूर सर कलम कर दिया जाए। देखो! अगर बिशर मुनाफिक का सर कलम करके उसको गुस्ताखी की सजा देना अज रूए शरा दुरुस्त न होता तो जरूर खून बहा अदा किया जाता ,मगर जब इस कज़या पर बारगाहे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में हजरते उमर रजियल्लाहो अन्हो की तलबी होती है सरकार ने इरशाद फरमाया क्यों उमर तुमने एक मुसलमान को कत्ल कर दिया है किया इसलाम इसकी इजाज़त देता है ? हजरते उमर रजियल्लाहो अन्हा ने अर्ज किया "या रसूलल्लाह सल्लल्लोहो अलैहे वसल्लम मैं ऐसे को मुसलमान समझता ही नहीं हूँ जो आपके फैसले को मुस्तरद करदे मैंने मुसलमान का नहीं एक मुनाफिक का सर कलम किया रब्बे कदीर ने फारूके आजम के इस फैसले को सराहा और उनकी मवाफ़ेक़त में कुरआन की आयत नाज़िल फरमाई " **ऐ महबूब तुम्हारे रब की कसम वह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न बनायें**

(कंजुल ईमान ,पा05 अन्निसा आयत,64)

मज़कूरा आयत में ईमान की नफ़ी है नाकि कमाले ईमान की यानी वह बे ईमान और गुमराह मुर्तद ,बद दीन अकाइदे बातेला और ख्यालाते फ़ासेदा रखने वाले लोगों को अस्ल ईमान ही नसीब न होगा मोमिन अगरचे गुनाह करे मगर क़तअन वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान में गुस्ताखी नहीं कर सकता है ,अपने को ना हक़ ज़ालिम गुनाहगार जानता है लिहाज़ा ईमान से ख़ारिज नहीं, हाँ जो कलेमा पढ़ने के बावजूद इसलामी अहकाम में नक्स निकाले वह जरूर इस्लाम से ख़ारिज है देवबंदी, वहाबी, सुलेह कुल्ली और इन जैसे दीगर फिरके के लोग जो बज़ाहिर मुसलमान होने का ढंडोरा पीटते हैं किया ये लोग कुरआन की नज़र में मोमिन हैं ?

जिसके यहाँ अल्लाह व रसूल के चाहने जैसे अल्फ़ाज़ का इस्तिमाल शिर्क है और सितम ये है कि अल्लाह व रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता उसके बर अक्स अकाबिरीने देवबंद का चाहा कभी टल नहीं सकता ऐसे ही लोगों के लिए इमामे इश्क़ व मोहब्बत सरकार आला हज़रत रजियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं ।

तेरी दोज़ख़ से तो कुछ छीना नहीं

खुल्द में पहुँचा रज़ा फिर तुझको किया

लफ़्ज़ रहमतुल लिलआलमीन

(1) लफ़्ज़े रहमतुल लिलआलमीन सिर्फ़ खास्स ए रसूल सल्लललोहो अलैहे वसल्लम की नहीं बल्कि दीगर औलिया ,अंबिया और उलमा ए रब्बानिय्यीन भी मूजिबे रहमते आलम होते हैं अगरचे जनाबे रसूल सल्लललाहो अलैहे वसल्लम सबसे आला हैं लिहाज़ा अगर दूसरे पर इस लफ़्ज़ को बतावील बोल देवे तो जाइज़ है” फ़क़त ।

(हवाला:1,फ़तावा रशीदिया (1987,ई0)स0,104)

(हवाला:2,फ़तावा रशीदिया (1363 हि0,)जि0,2 स0,9)

(2) बकौल रशीद अहमद गंगोही हाजी इमदादुल्लाह रहमतुल लिलआलमीन हैं ।

(हवाला:अलइअफ़ाज़ातुल योमिया (देवबंद)जि0,1कि0,1मल0 135,स0,88)

(3) जब हज़रत हाजी साहिब का इन्तेक़ाल हुवा तो हमनें एक वक़््त का भी खाना नहीं छोड़ा इतना कहने के बाद थानवी ने कहा कि मगर मौलाना को दस्त लग गए कई रोज़ तक खाना नहीं खाया उस ज़माने में लोगों ने अकसर कहते सुना कि वाकई रहमतुल लिलआलमीन वाकई हाजी साहिब की शान रहमत ही रहमत है ।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1हि0,4मल0 ,593 स0,50)

(4) थानवी जी ने कहा कि हम तो हाजी साहिब (इमदादुल्लाह)को ऐसा समझते हैं कि अगर कोई यह कहे कि हज़रत हाजी साहिब की पैदाइश से पहले और आसमान व ज़मीन थे,खुदा तआला ने हाजी साहिब की खातिर नया आसमान और नई ज़मीन पैदा फरमादी है तो हम उस का भी यकीन कर लें हम तो हाजी साहिब को ऐसा ही समझते हैं । (हवाला: हसनुल अज़ीज़ जि0,1हि0,4 मलफूज़,593स0,51)

जाते आफताबे रिसालत को निशाना

मजकूरह बाला इबारत को बगौर पढ़िये और फैसला कीजिये फतावा रशीदया की इबारत वाजेह तौर पर बता रही है कि रहमतुल लिलआलमीन का इतलाक आम इनसान पर हो सकता है इस इबारत से आफताबे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शाने आला को निशाना बनाने की कोशिश की गई है और दूसरी इबारत में हाजी इमदादुल्लाह साहिब को सर ता पैर रहमत ही रहमत साबित किया जा रहा है, यहाँ तक कि हाजी साहिब की ऐसी जात है जिन की खातिर रब तआला ने आसमान व जमीन पैदा फरमादी। अगरचे उन का वजूद नई सूरतों में हुवा देवबंदियों ने रसूल के रहमतुल लिलआलमीन होने के बजाए अपने अकाबिरीन को मुजस्सम रहमत से ताबीर किया जबकि रब्बे कदीर ने अपने महबूब के बारे में इरशाद फरमाया: **وما أرسلناك إلا رحمة للعالمين** और हमने तुमहें नहीं भेजा मगर रहमत सारे जहानों के लिए। यह आयते करीमा बेशक व शुबहा इस बात की दलील है कि जाने कायेनात फखरे मौजूदात हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सबसे पहले पैदा किया गया क्योंकि आप कायेनात के हर फर्द के लिए रहमत का सबब हैं। जहाँ जहाँ रब की रबूबियत है वहाँ वहाँ हुजूर की रहमत है और आप की रहमते पाक का दायेरा बिला इस्तिसना आलमीन के हर फर्द के लिए है। और यह बिल्कुल अयाँ है कि जिस तरह हर फर्द आलम अपनी बका और इस्तेका के लिए रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुहताज है इसी तरह अपनी ईजादात में भी आपकी रहमत का मुहताज है और यह कायेदा कुल्लिया है कि मुहताज इलैह का वजूद मुहताज से पहले हुवा करता है। लिहाजा नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आलमीन के हर फर्द से पहले पैदा किया जा चुका था आपकी रहमत मुतलक है, कामिल है, आम है आलमे गैब व शहादत को घेरे हुए है और दोनों जहाँ में दाइमी तौर पर मौजूद है। हुजूर की रहमते आम्मा रिज्क वगैरा हर काफिर व मोमिन को पहुँचती है और रहमते खास्सा ईमान व इरफान वगैरह सिर्फ

मोमिनों को।

दिलों में कदूरत रखने और मुनाफिकत का जहेर फैलाने वाले हजरात भी आपकी रहमते आम्मा से मुस्तफीज हो रहे हैं वरना अगली कौमों की तरह इन जालिमों का भी हशर वही होता। यह सदका है रहमते आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के नालैने मुबारक का कि कम अज कम दुनिया में अजाबे इलाही से महफूज है।

वह हर आलम की रहमत हैं किसी आलम में रह जाते यह उन की महेरबानी है कि यह आलम पसन्द आया

फहश हिकायात व इरतिकाब

(1) खानिकाहे गंगोह में मुरीद और शागिरद की मौजूदगी में रशीद अहमद गंगोही और कासिम नानोतवी एक ही चार पाई पर लेट गए नानोतवी का शरमा जाना और गंगोही से कहना कि मियाँ किया कर रहे हो लोग किया कहेंगे लेकिन गंगोही का कहना कि लोग कहें तो कहने दो

(हवाला:1 अरवाहे सलासा हिकायत,305 स0,289)

(हवाला:2, हिकायाते औलिया,हिकायत,305 स0307)

(2) मोलवी मनसूर अली तिलमीज नानोतवी का एक लड़के से इश्क था, नानोतवी की फरासत ने भाँप लिया। आपस में गुफ्तगू के दौरान नानोतवी का उस लड़के का जिक्र छेड़ना फिर मोलवी मनसूर का इक्लार नानोतवी ने दिल जोई करते हुए कहा कि यह हालत तो उस पर आती है। फिर मोलवी मनसूर का इक्लार कि अब मैं निकम्मा हो गया हूँ नानोतवी का कहना कि थक गए जोश खत्म हो गया बिलआखिर गंगोही ने मनसूर को अर्श के नीचे पहुँचाया।

(हवाला:1,हिकायातुल औलिया हिकायत ,251स0 264)

(हवाला:2,अरवाहे सलासा,हिकायत 251,स0 254)

(3) हाफिज जामिन मछली का शिकार कर रहा था किसी ने कहा हजरत हमें मारा, जामिन, थानवी ने कहा कि अबके मारुँ तेरी।

(हवाला1: हिकायातुलऔलिया,हिकायत210,स0 225)

(हवाला2:तजकिरतुल रशीद,जि0 2,स0270)

(4) कानपुर में थानवी के हैदराबादी मामूँ से वाज करने की दरखास्त, कहा इस शर्त पर वाज करूँगा कि मैं बिल्कुल नंगा होकर बाज़ार से निकलूँ इस तरह कि एक शख्स आगे से मेरे अजूए तनासुल को पकड़ कर खींचे और दूसरा पीछे से उँगली करे, साथ में लड़कों की फौज हो और वह यह कहते जाएं कि भड़वा है रे भड़वा भड़वा है रे भड़वा उस वक्त मैं हकाइक व मआरिफ बयान करूँगा।

(हवाला1: अलइफाजातुल योमिया (दिवबंद) जि04, किस्त22, मल0112 स0 128)

(हवाला2: अलइफाजातुल योमिया (थाना भवन) जि0 9, हिस्सा1, मल्फूज96, स0142)

(5) मोलवी फैजुल हसन का छत्ता की मस्जिद में इसतिन्जा के लोटों की टोटियाँ टूटी हुई देख कर कहना कि सारे लोटे मुखन्नस हैं यह सुनकर नानोतवी का कहना कि मुखन्नसों से डरना किया और आप को बड़ा इसतिन्जा करना नहीं।

(हवाला1: हिकायातुल औलिया, हिकायत 244, स0 259)

(हवाला:2, अरवाहे सलासा, हिकायत 244, स0 241)

(हवाला3: सवानेह कासमी, जि01, स0465)

(6) थानवी के मामूँ का थानवी से मिलने के लिए आने पर नंगा होकर आने की शर्त, थानवी का कहना की मेरा किया बिगड़ता है मैं आँखें बन्द कर के मुसाफह कर लेता।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि04,किस्त22,मल0 112,स0129)

(हवाला2:अलइफाजातुल योमिया (थानाभवन)जि09,हि01,कि027,मल096,स0144)

(7) एक दिहाती ने भरे मजमे में गंगोही से पूछा कि औरत की शरमगाह कैसी होती है, जवाब में गंगोही ने फरमाया जैसे गेंहूँ का दाना

(हवाला:तजकिस्तुल रशीद जि02,स0100)

(8) हाफिज्जी के निकाह की हिकायत, लड़कों ने कहा निकाह में बहुत मजा है। हाफिज्जी ने निकाह किया रात भर रोटी लगा लगा कर खाई और कहा कि हमें तो न नमकीन, न मीठी, न कड़वी मालूम हुई लड़कों ने कहा मारा करते हैं, जूते से मारा मुहल्ला जमा हो गया रुसवाई हुई तब लड़कों ने खुल कर बताया फिर उस पर अमल किया और कहा वाकई बहुत मजा है।

(नोट) यह हिकायत थानवी ने शरीअत के अहकाम पर अमल करने में सुकून है समझाने के लिए हवाला1 और हवाला2 में वहदतुल वजूद की हकीकत की मिसाल समझाने के लिए बयान की।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,किस्त14,मल0537,स0362)

(हवाला2:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,किस्त2,मल0381,स0192)

(हवाला3:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि01,कि05,मल01004,स0497)

(हवाला4:अलइफाजातुल योमिया (थानाभवन)जि02,हि01,कि042,मल0280,स0244)

(हवाला5:हसनूल अजीज जि04,हि01,कि010,स0101)

(9) थानवी के खलीफा ख्वाजा अजीजुल हसन ने थानवी से कहा कि काश मैं औरत होता और आप के निकाह में जवाब में थानवी ने कहा कि यह आप की मुहब्बत है सवाब मिलेगा, सवाब मिलेगा।

(हवाला1:अशरफुस्सवानेह जिल्द2,स028)

(10) गंगोही ने कहा कि एक मरतबा मैंने ख्वाब देखा कि मोलवी कासिम नानोतवी दुल्हन की सूरत में हैं और उन से मेरा निकाह हुवा सो जिस तरह जन व शौहर में एक दूसरे से फायेदा पहुँचता है उसी तरह मुझे उन से और उन्हें मुझसे फायेदा पहुँचा है।

(हवाला1:तजकिस्तुल रशीद जिल्द2,स0289)

(हवाला2:तजकिस्तुल रशीद जिल्द1,स0245)

(11) मोलवी यहया काँधलवी के फिराक में गंगोही का आशिकाना शेर सुनिये।

मत आइयो ओ वादा फरामोश तू अब भी
जिसतरह कटा रोज, गुजर जायेगी शब भी

(हवाला1:हिकायातुल औलिया,हिकायत338,स10325)

(हवाला2:तजकिरतुरशीद जिल्द2,स1076)

(हवाला3:अरवाहे सलासा हिकायत338,स10307)

(12)पड़ोसी के मकान में एक औरत बन उन कर बैठी थी थानवी जी
खिड़की से देखते हैं

(हवाला1:हसनूल अजीज जि02,हि02,कि015,म0153,स029)

(13)थानवी के मामूँ शौकत अली ने एक तालिबे इल्म को बुलाया कि
यहाँ आओ कुछ कहना है, वह आया तो दूसरी तरफ चले गये और
वहाँ बुलाया गरज कि इधर उधर बुलाने के बाद कान में कहा कि
आज अब्र है यानी मोसम अच्छा है तालिबे इल्म ने कहा ला हौला
वला कुव्वता इस बात के लिए मुझे इतनी देर इधर उधर घुमाया।

(हवाला1:हसनूल अजीज जि02,कि015,म0182स047)

(14)एक बड़े पेट वाले ने कहा मुझे जेरे नाफ लेने में मौका नज़र नहीं
आता फलाँ मोलवी साहिब ने कहा कि बीवी से उतर वालिया करो
इस पर थानवी ने कहा कि अगर बीवी ख़फ़ा हो जाए और उस्तरे से
सफ़ायी करदे (अजू काटदे) तो फिर बड़ा मज़ा हो।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,किस्त17,मल0385,स0190)

(15)थानवी जी कहते हैं कि एक मोटे पेट वाले को किसी मोलवी ने
यह रायदी थी कि बीवी से मूए जेरे नाफ उतर वालिया करो थानवी
ने फिर कहा कि मैंने उसको चूना हड़ताल का नुसखा बताया वह
बहुत खुश हुआ

(हवाला1:हसनूल अजीज जि01,कि019,मल0623स0133)

(हवाला2:कमालाते अशरफिया 1995बाब,2मल0201स0385)

(16)थानवी साहिब एक हिकायत बयान करते हैं आप भी सुनिये कि
अपनी माँ से ज़िना करने वाले ने कहा कि जब मैं सारा ही उसके
अन्दर था तो अगर मेरा एक जुज़ उस के अन्दर चला गया तो किया
हरज हुआ थानवी ने कहा कि यह हुक्म भी तो अक़लियात में से हो
सकता है।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,कि013,मल0464,स0322)

(हवाला2:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,किस्त16,म060,स041)

(हवाला3:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि04,किस्त22,मल0129,स0146)

(17) इसलाहे अवाम का अनोखा नुसखा थानवी इस्तिन्जा के लिए बैतुल खला जा रहे थे लेकिन लोगों ने मुसाफह शुरू कर दिया उस पर एक शख्स ने लोगों को टोका कि अब तो ज़रा ठहेर जाओ इस्तिन्जा के लिए जा रहे हैं उस पर थानवी ने कहा कि क्यों मना करते हो आने दो ये तो मेरे साथ पाखाने के अंदर ही जायेंगे मुझे इस्तिन्जा करते दे खेंगे आखिर इस्तिन्जे की कैफियत भी किसी तरह सीखें। (हवाला: हसनुल अजीज जि04, कि010, हि01 स0218)

(18) थानवी जी अपने बचपन की शरात का जिक्र फखरिया अंदाज़ में करते हैं इबतेदाए बुलूग में मुझे एहतेलाम हुवा फूफाके यहाँ मेहमान था घरमें शर्म कि वजह से नहा न सका मस्जिदें तलाश करता फिरा एक मस्जिद में ठंडे पानी से सख्त सर्दी का मोसम होने के बावजूद हिम्मत करके नहा ही लिया।

(हवाला: हसनुल अजीज जि04, हिस्सा1, कि010, स0,218)

(19) देहली के सफर में सुबह को हवा खोरी के लिये थानवी का निकलना कई लोग साथ हो गये तो थानवी ने तमाम को साथ चलने की ममानेअत की सब रुक गये रुकने वालों के साथ थानवी के खलीफा ख्वाजा अजीजुल हसन का भी रुक जाना, लेकिन थानवी ने सिर्फ उनको अकेले को साथ लिया और कहा कि हर औरत यह चाहे कि मेरे साथ बीवी का तअल्लुक रखा जाए तो उस की हिमाकत है। (हवाला: अशरफुरसवानेह जिल्द 2, स0,114)

(20) थानवी ने अपने खलीफा ख्वाजा अजीजुल हसन के तवील खत को तूले जुल्फे महबूब कहा।

(हवाला: अशरफुरसवानेह जिल्द 2, स0,30)

(21) अपनी महफिल में थानवी ने खाए बगैर किसी चीज़ की हकीकत मालूम नहीं होती ये बात समझाने के लिए एक फहश हिकायत बयान की, बहुत सी सहेलियाँ आपस में जमा रहती थीं और ये वादा था की जिसका पहले बियाह हो जाए वह उस मजे से सब को आगाह करे एक सहेली का बियाह हुवा शब गुज़र जाने पर सुबह को सहेलियों ने उससे मज़ा पुछा तो वह कहती है कि बियाह यूँ ही जब तुम्हारा हो जाए गा तब मज़ा मालूम सारा हो जाए गा।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जि0,1, कि0,5 मल01004 स0497)

(22) एक मौके पर थानवी जी के खलीफा ख्वाजा अजीजुल हसन ने औरत और थानवी की मन्कूहा होने की तमन्ना की थानवी ने कहा कि ये आपकी मोहब्बत है सवाब होगा इस हिकायत के तअल्लुक से ख्वाजा अजीजुल हसन ने कहा हज़रते वाला अपने मजलिस में अहकर के इस मोहब्बत आमेज़ कौल को बा लुत्फ़ नक़ल फ़रमा फ़रमा कर मज़ाहन फ़रमाया करते हैं कि ग़नीमत है इस के अक्स की ख्वाहिश नहीं की।

(हवाला1:हसनुल अजीज जि02,स028)

(23) थानवी जी एतेराफ़ करते हैं कि किसी ना बालिग़ लड़की के सर पर शफ़क़त से हाथ रखने के थोड़ी देर बाद नफ़स की आमेज़िश होने लगती है।

(हवाला1:अशफ़ुस्सवानेह जि02, स0327)

(24) थानवी के खलीफा अजीजुल हसन ने टिरेन में बिस्तर लपेट कर बांधा, जब उठाया तो उस में घड़ी निकल पड़ी थानवी ने कहा कि ये इस्कात कब्ल अज़ वक़्त हुवा।

(हवाला1:हसनुल अजीज जि04,हिस्सा 2,कि011,स031)

(25) थानवी जी एक लगो और फ़हश हिकायत ब्यान करते हैं कि एक चौधराइन का आबे दस्त नौकरानी करती और बाज़ मोटे आदमियों का आबे दस्त कपड़े के थान से किया जाता है दो आदमी खड़े होकर इधर उधर को खींचते हैं और सिका पानी डालता है।

(हवाला1:हसनुल अजीज जि04,हिस्सा 2,कि011,स086)

(26) थानवी साहिब अपनी बीवी से कहते हैं कि हम दिन भर के काम के बाद थके थकाए अपने दिमाग़ को राहत देने तुम्हारे पास आते और तुम उस वक़्त भी अपने काम में लगी रहती हो।

(हवाला1:अशफ़ुस्सवानेह जि03,स0105)

(27) थानवी जी का कौल मुलाहिज़ा हो मैंने हसीनों को देखा है झुंझलाते और मुंह चिढ़ाते वक़्त ऐसे अच्छे लगते हैं कि बस फिदा हो जाओ।

(हवाला1:हसनुल अजीज जि01,हिस्सा 4,कि019,मल0624,स0138)

(28) थानवी सर्दी में दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे एक शख्स मिलने गया लेकिन थानवी ने मना किया वह चला गया फिर थानवी

ने कहा मैं ज़रा आराम करने लेटा था कि बस आ मौजूद हो गए रंडवे जब बैठने दें तब तो रांडें बैठें उस शख्स को बादे नामाजे जोहर पूछने पर उसने अपने जाने का यह उज्र बताया कि पर्दों के अंदर से हज़रत की गुफ्तगु करने की आवाज़ आ रही थी इस वजह से मैं चला गया था इस पर थानवी ने कहा कि अगर आवाज़ सुनकर जाने की इजाज़त होने पर इस्तिदलाल किया जाए गा तो मियाँ बीवी की खलवत में भी जा घुसेंगे।

(हवाला1: हसनूल अजीज जि02, हि02, कि015, मल0329, स0122)

(29) थानवी कहते हैं कि पीराने कलयर के मुसाफिर खाने में एक शख्स जिना में मशगूल था इत्तिफ़ाक़न चंद मुसाफिर आए और दरवाज़ा खट खटाया जिना में मशगूल शख्स ने अंदर से कहा कि यहाँ जगा कहाँ यहाँ तो आदमी पर आदमी पड़ा है उसके इस जवाब की तारीफ़ करते हुए थानवी ने कहा कि सच्चा आदमी था झूट नहीं बोला ज़ेहानत का जवाब था।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद) जि02, कि012, मल0274, स0216)

(30) थानवी एक और फहश हिकायत ब्यान करते हैं और इस हिकायत में जौजए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रते जुलेखा की शान में ना ज़ेबा अलफ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं मुलाहिज़ा हो।

“कानपुर में मुक़ीम भोपाल की रईसा का लड़का एक उसताद से पढ़ता था सबक में हज़रते जुलेखा का किस्सा आया तो उस लड़के ने उसताद से पूछा कि हज़रते जुलेखा की छातियाँ कैसी थीं उसताद ने जवाब में कहा कि जैसे तेरी माँ की छातियाँ लड़के ने अपनी माँ से शिकायत की उसताद से लड़के की माँ ने पूछा तो उसताद ने कहा कि इसने मेरी माँ की तौहीन की तो मैंने उसकी माँ को कह दिया माँ ने लड़के को डाँटा

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद) जि03, कि018, मल0584, स088)

(31) एक मर्तबा थानवी को ख़ाँसी हुई थी एक शख्स ने कहा कि मैं आपके लिए शरीफ़ा (फल) लाऊँगा आपके लिए मुफ़ीद रहेगा थानवी ने कहा शरीफ़ को लाओ शरीफ़ को मत लाओ मेरी दो दो मन्कूहा हैं किया फ़ौज खड़ी करनी है।

(हवाला1: अलइफ़ाजातुल योमिया, जि01, कि01, मल063, स0, 42)

(32) एक शख्स ने थानवी से आहिस्ता आवाज़ से तावीज़ माँगा

थानवी ने उससे कहा कि क्या तुम औरत हो? औरत की आवाज फितना है कोई आशिक ना हो जाए ।

(हवाला1: अलइफाजातुल योमिया(देवबंद) जि01, कि03, मल0448, स0372)

(33) एक मर्तबा थानवी ने कहा कि किसी को तकना अच्छा नहीं मालूम होता, इससे तबअन ना गवारी होती है फिर मज़ाहन फहश जुमला कहा फिर वह नाग दार(साँप के मुशाबह) हो जाता है ।

(हवाला1: अलइफाजातुल योमिया(देवबंद) जि01, कि05, मल01043, स0513)

(34) एक मोल्वी साहिब देहली से थाना भवन आए और थानवी से कहा कि मैं देहली गैर मुकल्लिदों से मुनाजेरा करने के लिए गया था लेकिन वह आमादा नहीं हुए उस पर थानवी ने उस मोल्वी साहिब से कहा कि आप को ये ऐलान करदे ना था कि, आ, मादह, नर, आ गया ।

(हवाला1: अलइफाजातुल योमिया(देवबंद) जि02, कि015, मल0826, स0470)

(35) मोल्वी कासिम नानोतवी मोल्वी याकूब नानौतवी के लड़के जलालुद्दीन से बड़ी हँसी किया करते थे कभी टोपी उतार लेता और कभी कमर बंद खोल देता था ।

(हवाला1: हिकायातुल औलिया, हिकायत न0275, स0287)

(हवाला2: सवानेह कासमी जि01, स0466)

(हवाला3: अरवाहे सलासा, हिकायत न0275, स0268)

अकाबेरीने देवबंद का जौके तबा

“मज़कूरा बाला इबारतों को पढ़िये और उन जालिमों के तअल्लुक से फ़ैसला किजिये ।

अकाबेरीने देवबंद ने किस कदर फहश कलामी और उरयानियत व बे हयाई का मुज़ाहिरा किया है हमने अस्ल इबारत पेश करके फ़ैसला आप पर रख छोड़ा है मेरा इन वहाबी, देवबंदी मुल्लाओं से सिर्फ़ ये कहना है कि अगर बुजुर्गों से ग़लतियाँ सरज़द हुई और उन लोगों ने इस्तेकाबे जुर्म किया है तो क्या ज़रूरत थी बयान करने की मगर ختم الله على قلوبهم و على سمعهم و على ابصارهم غشاة के मिसदाक़ उन कोरे बातिन को किया सूझा कि अपने मुल्लाओं की ख़ताओं को बतौरे करामत ब्यान कर दिया आज भी वह सभी किताबें दसतियाब हैं जिन में मज़कूरा फहश हिकायात को करामतों से तशबीह दी गई है । अपने पेश वाओं की इज्जत व हुर्मत को सरे

बाजार नीलाम करके चटखारे ले रहे हैं: लेकिन इज्जत व हुरमत उस की नीलाम होती है, इसमते उस की दागदार होती हैं जिसके पास इसके रसूल जैसी अजीम दौलत हो, यह मकाम मोमिनीन के लिए है नाकि मुर्तद और गुमराह अकाइदे बातिला व रज़ीला रखने वालों के लिए। देवबंदी मकतले फिकर के सभी मुल्लाओं और उनके मुत्तबेईन के लिए कितना बड़ा अलगिया है।

इस घर को आग लग गई घर के चराग से

आज हम ऐहले सुन्नत व जमाअत को झगड़ालू बताया जा रहा है इमाम ऐहले सुन्नत आकाए नेमत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत इमाम अहमद रज़ा खाँ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को बिदअतों का मोजिद करार दिया जा रहा है जब कि आला हज़रत ने बिदअतों का रद्दे बलीग फ़रमाया है यकीनन ये लोग इख़्तिलाजे क़ल्ब जैसे ख़तर नाक मर्ज के शिकार हैं इनके क़ल्बी नज़रियात यानी अक़ीदे न दुरुस्त थे न हैं अगर्चे यह लोग कलेमा गो और नमाज़ी थे और हैं मगर फ़रमाने इलाही के बमोजिब मोमिन नहीं क्योंकि अक़ीदा दिल के पुख़ता और मज़बूत इरादे का नाम है और आयाते कुर आनी साफ़ बता रही है कि जिसका अक़ीदा ठीक न हो वह नमाज़ रोज़े का कितना ही पाबंद क्यों न हो हरगिज़ मोमिन नहीं हो सकता आज वहाबी धरम के ठेकंदारों की किताबें पढ़ने के बाद उस घिनाओ ने मज़हब से तोबा करके बेज़ारी का ऐलान क्यों नहीं किया जा रहा है ? मर्द व औरत नौजवान नस्ल किस क़दर ज़हनी इन्तेशार का शिकार होते जा रहे हैं किया इस का अंदाज़ा है ?

अगर वहाबी धरम के लोगों से सवाल किया जाए कि किया ये इबारतें सही हैं तो वह यकीनन सर खुजा कर बग़लें झाँकते हुए नज़र आयेंगे या अपना रास्ता इख़्तियार कर लेंगे या ये कहकर दामन बचाने की कोशिश करेंगे कि सुन्नी मोल्वियों ने बदनाम करने के लिए किताबें छपवाकर तक़सीम की हैं ऐसे मौक़े पर आपगिरेबान पकड़ लिजिये और कहिये ज़ालिम अगर तेरे कौल में सदाक़त है तो ऐलान करदे कि मज़कूरा किताबों से देवबंदी आलिमों का कोई वास्ता नहीं है और ऐसे गंदे ज़हन व फिकर के लोग गुमराह, बद दीन, गुसताख़े रसूल हैं और उन की किताबें गुमराह कुन हैं, मगर ऐसा

न हो सकेगा क्योंकि क़ल्ब व सीना सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत से खाली है।

पहले जनाबे शेख़ ने देखा इधर उधर
फिर सर झुका कर दाखिले मैखाना हो गए

फ़हश मिस्त्रालें और फ़हश क़लामी

(1) बकौल थानवी "मियाँ बीवी ख़त के ज़रीये इज़हारे मोहब्बत करें लेकिन मिलें नहीं तो औलाद ना होगी, इसी तरह समराते खास्सा के लिये सोहबते शेख़ जरूरी है।

(हवाला1:हसनूल अज़ीज़ जि01, हि0,1 कि016, मल0,19, स024)

(हवाला2: कमालाते अशरफिया (1995)बाब1, मल0754, स0193)

(2) अपना कोई हाले बातनी किसी पर ज़ाहिर करने वाले को थानवी ने कहा कि शर्म न आई अपनी बीवी को ग़ैर की बग़ल में देना किसी को गवारा हो सकता है?

(हवाला1:हसनूल अज़ीज़ जि01,कि016, मल062,हिस्सा 1 स0,62)

(3) थानवी का कौल मुलाहिज़ा हो लोगों से लड़कों का मिलना ऐसा है जैसे लड़कियाँ ग़ैर लोगों से मिलीं।

(हवाला:हसनूल अज़ीज़ जि01, हि01, मल0,66, स070)

(4) निकाहे सानी के जिम्न में थानवी कहते हैं कि दिया सलाई की नोक पर जो लगा रहता है वह सब में मौजूद है बहुत सो में रगड़ लग गयी है हम में रगड़ नहीं लगी।

(हवाला:हसनूल अज़ीज़ जि01, हि02, कि017 मल0,149, स0169)

(5) कहीं मुलाज़िमत करने वाले को थानवी ने कहा तुम बड़े तेज़ हो निकाह कर लो सब जोश निकल जायेगा।

(हवाला:हसनूल अज़ीज़ जि01, हि02, कि017 मल0,110, स0125)

(6) थानवी से एक शख्स ने पूछा कि आप के पास रेन्डी तो कोई नहीं आती कहा कि रेन्डे तो आते हैं वह एक ही हैं चाहे रेन्डी हो या रेन्डे।

(हवाला:हसनूल अज़ीज़ जि01, हि02, कि017 मल0,170, स0189)

(7) थानवी कहते हैं कि बाज़ लोग ऐसे आते हैं कि खुद जी चाहता है कि यह हम से मुरीद हो जायें लेकिन खुद कहने में शरम आती है जैसे कि लड़की के निकाह में हमारी लड़की से निकाह करलो कहने में शर्म आती है।

(हवाला:हसनूल अजीज जि01, हि03, कि018 मल0,450, स0,74)

(8) इबादत के लिये थानवी जी का नुस्खा मुलाहिजा हो: तरीक में अगर लज्जत मकसूद है तो बीवी को बगल में लेकर जिवर करें खुदा की कसम बहुत लज्जत आयेगी एक जब इधर हो एक जब उधर हो।

(हवाला:हसनूल अजीज जि01, हि03, कि018 मल0506, स0154)

(9) बे दिली से तालीम करने के जिम्न में थानवी का मुजरब नुस्खा कि सोहबत के वक्त औरत मर्द दोनों को शहवत होना चाहिये और हमल करार पाने के लिये तवाफुके इनजालैन शर्त है वरना हरकात मुतइबा हो ही जाएगी लेकिन नस्ल नहीं चलेगी खुवाह मखुवाह बेचारी को तंग किया, जाड़े में नहाने की तकलीफ दी इसी तरह बे दिली से तालीम करना बिल्कुल ऐसा ही है जैसे बिला शहवत सोहबत करना।

(हवाला1:हसनूल अजीज जि01, हि03, कि018 मल0538, स0192)

(हवाला2:कमालाते अशरफिया बाब1, मल0928, स0232)

(10) बकौल थानवी निकाह करते वक्त मर्द और औरत का एक दूसरे से बच्चा जनवाने का वादा लेना नादानी है इसी तरह मुरीद का पीर से कोई चीज हासिल करा देने का गुमान भी नादानी है।

(हवाला1:हसनूल अजीज जि01, हि04, कि019, मल0,619, स0,96)

(11) थानवी कहते हैं कि बूढ़ों के मकाबले में जवान में इसमत ज्यादा होती है बूढ़ों में शहवत ज्यादा होती है लिहाजा बूढ़े आदमी से औरतों को ज्यादा बचाओ।

(हवाला1:हसनूल अजीज जि01, हि04, कि019, मल0623, स0,129)

(12) थानवी कहते हैं कि जिकरे लिसानी से लोगों की जान निकलती है बस यही कहते हैं कि मजा नहीं आता मैंने इस पर कहा था कि मजा तो मजी निकलने में आता है लोहे के चनेंचबाने में मजा कहाँ।

(हवाला1:हसनूल अजीज जि03, हि03, कि014, स0,6)

(13) थानवी जी की खुबासत मुलाहिजा फरमाइये कि औरतें बहलाने के लिये हैं रोटियाँ पकाने के वासते नहीं।

(हवाला: अलइफाजातुल योमियया(देवबन्द)जि02, कि10, मल0892, स0502,)

(14) बकौल थानवी कुंवारी लड़की और बेवा से निकाह करने में यह फर्क है कि कुंवारी लड़की को जिस रंग में चाहो ले आओ लेकिन बेवा में अगले शौहर का असर होता है इसी तरह जो शख्स पहले किसी का मुरीद रह चुका हो उसमें अगले शेख का कुछ ना कुछ

असर जरूर रहता है।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द) जि03, कि018, मल0543, स059)

(15) याकूब नानोतवी कहते हैं दुनियादार का एतकाद ऐसा है जैसे गधे की फलों चीज बढ़ता है तो बढ़ता चला जाता है और घटता है तो घटता ही चला जाता है यहाँ तक कि नर व मादा का भी इमतियाज नहीं रहता (मनकूल अज थानवी) (नोट) गधे की फलों चीज से मुराद उसका अजू ए तनासुल है।

(हवाला: 1 हसनूल अजीज जि03, कि0, 14 हिस्सा 3, स0, 26)

(हवाला: 2 अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द) जि02, कि07, मल0344, स0191)

(हवाला: 3 मआरिफे याकूबी स0, 83)

(16) बकौल थानवी: माँ के पेट से निकलने को कब जी चाहता था दाई ने टाँगें पकड़ कर जबर दस्ती खींच लिया।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द) जि01, कि05, मल01005, स0498)

(17) जौकी उमूर के जिम्न में थानवी ने कहा कि कोई कितना ही बड़ा आलिम हो वह इन उमूर से ऐसा ही अजनबी है जैसे अैनिन (बमाना नामर्द) औरत की लज्जत से अजनबी होता है।

(हवाला: 1 हसनूल अजीज जि03, कि014 हिस्सा 3, स0113)

(18) थानवी कहते हैं कि अैनिन (नामर्द) क्या जाने कि निकाह में किया मजा है और मन्कूहा कैसी काबिले कद्र चीज है इसी तरह जिनकी बातनी आँखें पट हैं वह बातनी दौलत की हकीकत किया समझें।

(हवाला: कमालाते अशरफिया (1995) बाब1, मल0104, स046)

(19) बकौल थानवी जिस को जवानी में लज्जत हासिल हो चुकी हो बुढ़ापे में उसकी लज्जत कम नहीं होती जैसे पुरानी जोरु में उन्स की ज्यादाती होती है।

(हवाला: कमालाते अशरफिया (1995) बाब1, मल0118, स049)

(20) थानवी कहते हैं बच्चों पर और औरतों पर सब आशिक होते हैं मगर बूढ़ों पर इश्क़ होते हुए उन्हीं हजरात में देखा ऊपर से अकली इश्क़ तो होता है मगर बहुत से हजरात को अपने मुर्शिद से तबई इश्क़ भी होता है। और ये तो मुशाहिद हैं फिर भी खुदा तआला से तबई मुहब्बत नहीं होती तो उस मुनकिर की मिसाल ऐसी है। जैसे अैनिन (ना मर्द) कहे कि औरत में लज्जत नहीं।

(हवाला: हसनूल अजीज जि03, हि01, कि012, स0, 203)

(21) बेवा से निकाह करना सुन्नत है ये कहने वाले को थानवी कहते हैं कि चाहे सुन्नत (अजूए तानासुल) ही के लिए करते हैं।
(हवाला: हसनूल अजीज जि01, हि03, कि018, मल0509, स0159)

(22) थानवी कहते हैं कि फासिक फाजिर की शहवत कुछ आँख की राह से कुछ ख्यालात की राह से निकल जाती है मुत्तकी का सब जखीरा कोठरी में रहता है उन्हें कुव्वत ज्यादा होती है लिहाजा औरतों को बुजुर्गों से बचाना चाहिये।
(हवाला: हसनूल अजीज जि01, हिस्सा04, कि019, मल0623, स0, 130)

(23) थानवी ने एक मोल्वी से सुरीन (चूतड़) का अरबी लफ्ज़ पूछा मोल्वी साहिब ने कहा अरबी में सुरीन नहीं होता फिर उसकी अरबी कहाँ से हो।
(हवाला: हसनूल अजीज जि02, हि02, कि015, मल0377, स0146)

(24) थानवी का शरारती कौल कि इन्ज़ाल के वक़्त जबकी बीवी के सिवा और कोई चीज़ नज़र में नहीं उस वक़्त खुदा को याद रखो।
(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) जि01, कि04, मल0949, स0474)

(25) मोल्वी अशरफ़ अली थानवी कहते हैं कि शौहर कि दस्तख़त न हो ऐसा किसी औरत का ख़त पढ़ना ऐसा है कि जैसे बिला शुबह शौहर की मौजूदगी में आस पास बैठकर उससे बातें करना
(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद) जि04, कि024, मल0309, स0368)

(26) थानवी ने कहा कि औरत के इश्क़ में जुल्मत होती है और मर्द के इश्क़ में जुल्मत शदीद होती है औरत तो अमले तमत्तो हैं लेकिन हर अमले तमत्तो फितरतन हैं ही नहीं।
(हवाला: हसनूल अजीज जि01, हि01, मल026, स026)

(27) थानवी का कहना है कि किसी हसीन औरत को देखकर बुरा ख़्याल आए तो बदसूरत का मुराक़ेबा करे वह ख़्याले बद जाता रहेगा।
(हवाला: हसनूल अजीज जि01, हि01, मल029, स028)

(28) कम उम्र वाले से पर्दा करने पर थानवी ने कहा कि जब वह छोटासा (बच्चा) आ जाएगा तब मालूम होगा कि ये कैसा छोटा है।
(हवाला: हसनूल अजीज जि01, हि01, मल054, स041)

इस्लामी मजामीन का जखीरा
इस्लामी हीरे (सुन्नी कोइज़) में मिलेगा

ताफ़रीहे तबीए देवबंद

मोहतरम हज़रात: आपने फहश कलामी और उसी तरह की मिसालें पढ़लीं मनचले और आशिक मिजाज़ लोगों ने किस कदर बेहयाई का मुजाहिरा किया है थानवी जी ने कभी बूढ़ों के इश्क़ का तज़क़िरा किया तो कभी बीवी के साथ इन्ज़ाल होने के फ़वाइद से आगाह फ़रमाते हैं तो दूसरी जानिब अपने मुरीदों और पैरु कारों को अपनी अपनी लड़कियों को बूढ़ों और बुजुर्गों से बचाने का पैग़ाम दे रहे हैं।

वह ज़बानें कितनी गलीज़ और कितनी शातिर व अय्यार रही होंगी जिसने फहश मिसालें इश्क़ या जुमलों और नाज़ेबा कलेमात से मोतकिदीन को समझा कर उनके ज़ौके तबा का सामान फ़राहम किया है।

मुंदरजा बाला इबारात में कितने ख़ामोश इशारे पोशीदा हैं उसके इज़हार की ज़रूरत नहीं, ताहम ये सवाल अपनी जगा बरकरार है कि अगर मुरीदों की ज़बानें बे काबू हो गई थीं तो पीर को ज़रूर एहतियात करनी चाहिए हाला कि पीर व मुरीदीन और मोतकिदीन किसी की ज़बान बे काबू नहीं थी सिर्फ़ लज़्जते नफ़्स का मुआमिला था वरना ये कहने की किया ज़रूरत थी कि बीवी को बग़ल में लेकर खुदा का ज़िक्र करो क़सम खुदा की लज़्जत आएगी एक ज़र्ब इधर हो एक ज़र्ब उधर। (मआजअल्लाह)

दर हकीकत नजिस ख़मीर का नतीजा है रब तआला का इरशाद है الخبيث للخبيثين والخبيثون للخبيث والطيب للطيبين (तर्जुमा) गंदियाँ गंदों के लिए और गंदे गंदगियों के लिए और सुथरियाँ सुथरों के लिए और सुथरे सुथरियों के लिए

(कंजुल ईमान प0,18 अन्नूर, आयत 7)

मालूम हुवा कि ख़बीस लोग ख़बीस ख़स्लतें इख़्तियार करते हैं और अच्छे लोग अच्छी ख़स्लतें इख़्तियार करते हैं यही वह अशरफ़ अली थानवी हैं जिन की तालीमात को आम किया जाता है जिनकी तसनीफ़ात को तक़सीम क्या जा रहा है। ईमान दारी से बताईये अगर गंदी इबारतों की जगा कुरआन व हदीस से मिसालें दी जातीं तो किया क़बाहत होती किया यह सब इस्लामी तालीमात के

मवाफिक हैं? है किया खिलाफे शरा अफ़आल सरज़द नही हुए?
किया इसका इरतेकाब करने वाले मुजरिम नहीं हैं?
जरूर हैं। और ये सब बातें कुछ जिद्दत व बिदअत पसंद लोगों को
इस तरह भागई हैं कि आज इस्तिआरा बन गई हैं।

सरकारे आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं:

नजदी तुझको उसने मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मुर्तद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की ﷺ

तवाइफ़ और अंबियाँ देवबंद

(1) मेरठ में एक रेंडी का नानोतवी के पास अपनी लड़की के हमराह
आकर कहना 'कि मेरी छोकरी बीमार है और मेरी बसर औकात इसी
पर है आप तावीज़ दो' नानोतवी ने उसको मकान की ऊपर वाली
मंज़िल में ठेरे हुए मोल्वी याकूब नानोतवी के पास भेजा मोल्वी याकूब
ने रेंडी को तावीज़ दिया और दुआ कर दी लड़की को आराम हो
गया, रेंडी का धंदा शुरू हो गया तो रेंडी शुक़रिया में मिठाई लाई
और मोल्वी याकूब को देकर चली गई।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत 367 स0 339)

(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत 367 स0 322)

(हवाला:3 मआरिफ़े याकूबी स0 74)

(2) रेंडी के बनाए हुए कुंए का पानी पीना और वजू व गुस्ल करना
दुरुस्त है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया स0 571)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया(पुरानी1363हि0)जि0,2 स0 98)

(3) थानवी के मामूँ से उनके पीर भाई ने कहा कि हमारे पीर साहिब
के पास रात में रेंडियाँ आती हैं, मामूँ ने कहा अल्लाह आप को जज़ाए
ख़ैर दे पीर साहिब ने निकाह नहीं किया था मुझे शुबा था कि ये
अैनिन(ना मर्द) हैं और ये हज़रात वारिस होते हैं अंबिया के और
अंबिया मर्दे कामिल होते हैं लेकिन पीर साहिब के मुतअल्लिक़ अैनिन
होने का शुबा एक नक्स था लेकिन आपके कहने के मुताबिक़ रेंडियाँ
आती हैं तो मालूम हुवा कि पीर कामिल हैं आपने मेरे शुबा को रफ़ा
कर दिया अब रहा ये कि रेंडियाँ आती हैं ये एक गुनाह है तोबा

करके पाक व साफ हो जायेंगे।

(हवाला 1: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जि01, कि02, मल0437, स0220)

(हवाला 2: अलइफाजातुल योमिया (थानाभवन) जि02, हि0, 1 कि042, मल0436, स0395)

(4) जामिन अली जलाल आबादी जिन के मुतअल्लिक गंगोही ने कहा कि जामिन अली की सहारनपुर की तमाम रेंडियाँ मुरीद थीं एक मर्तबा वह सहारनपुर में एक रेंडी के यहाँ ठहरे हुए थे सब मुरीदनियाँ मिलने आयीं लेकिन एक नहीं आयी फिर जब वह आयी तो पीर साहिब ने ना आने की वजह पूछी तो कहा रुसियाही की वजा से ज्यारत को आते हुए शरमाती हूँ पीर ने कहा शरमाती क्यों हो करने वाला कौन और कराने वाला कौन वह तो वही है। रेंडी यह सुनकर आग हो गयी लाहौल पढ़ी और कहा मैं गुनहगार हूँ लेकिन ऐसे पीर के मुंह पर पेशाब भी नहीं करती यह कह कर वह रेंडी उठकर चली गयी।

(हवाला 1: तजकिरतुल रशीद जि02, स0242)

(हवाला 2: अददेवबांदिया (अरबी) स040)

(5) घिस्सन शाह को मिलने थानवी तवाइफ के कोठे पर गये वहाँ जाकर मिठाई पेश करके दुआ की दरखास्त की।

(हवाला: अशरफुस्सवानेह जि01, स0120)

(6) थानवी ने किस्सा ब्यान किया कि सन्दीला नाम की बस्ती में कहेत के साल रेंडियों की दुआ के सबब बारिश हुयी।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जि03, किस्त14, मल0568, स0376)

(7) थानवी कहते हैं कि एक हसीन औरत का शौहर किसी बदसूरत रेंडी पर आशिक है उसकी बीवी ने खादिमा के जरीए तहकीक की तो मालूम हुआ कि वह जब जाता है तो भड़वा कहकर जूते मारती है बीवी ने भी इसी तरह किया तो उसने रेंडी को छोड़ दिया।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जि03, कि013, मल0323, स0246)

(8) बकौल थानवी: "मोल्वी और रेंडी के मुलाजिम बे फिकर होते हैं क्योंकि हर दो फिरके मखदूम होते हैं दोनों के खादिम बहुत होते हैं एक को काम कहो दस दौड़ते हैं बस मुलाजिम नवाब बन जाते हैं।

(हवाला: हसनुल अजीज जि02, हि01, मल08, स0168)

(9) कश्फ क्या कसबी है पूछने वालों को थानवी ने कहा कि कस्बी (यानी रेंडी) तो फिर भी किसी की मतलूब है और अगर रेंडी से निकाह कर लो तो बे खतरा भी होगी लेकिन कश्फ तो निरा

तबल्ची और पुर खतर है कश्फे कसबी को थानवी ने रेंडी (करबी) पर इस्तिदलाल किया।

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया(देबंद)जि03,कि014,मल0767 स0448)

(10) बकौल थानवी : "थानवी के भाई अकबर अली ने ट्रेन के सेकंड किलास में रेंडी के हमराह सफर क्या रेंडी अपने साथ खाना लाई थी वह अकबर अली ने खाया।

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया(देबंद)हि03कि018,मल0597 स093)

(11) नये आने वालों के साथ थानवी जी जल्द तवज्जो नहीं करते थे इस की वजह बयान करते हुए मिसाल में थानवी ने कहा कि रेंडी और घिरस्तन में फर्क होता है रेन्डी दो चार रुपये में राजी हो जाएगी लेकिन घिरस्तन ज़रा मुश्किल से रज़ामंद होती है।

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया(देबंद)जि03कि018,मल0619,स0110)

लाहीला वला कुप्पता इल्ला बिल्लाह

अकाबरीने देवबंद जिस में खास कर अशरफ अली थानवी को तवाइफों से कैसा गहरा तअल्लुक और उन्स था ये वही लोग समझें जो उनके पैरु कार हैं हमें सिर्फ उनके कारनामों को अवाम तक पहुँचा कर अदालत में मुजरिमों को खड़ा करना है इस उम्मीद से कि आप का फैसला हक बजानिब होगा।

आप गौर करें, एक शरीफुन्नफ़्स और शरीफुत्तबा इन्सान ऐसी बदनाम गुंजर गाहों से गुज़रना भी तौहीन समझता है मगर आँ जनाब तवाइफ़ के कोठे पर जाकर दुआ की दरख्वास्त कर रहे हैं रेंडियों का पेशा किया होता है उस को सभी लोग जानते हैं, थानवी ने उन्हें मुस्तजाबुद्दावात साबित किया और कहते हैं उन की दुआओं से कहेत साली का मोसम जाता रहा और उस इलाके में कसरत से बारिश हो गई।

पीर साहिब की मर्दाना कमजोरी का इलाज और उनके मरदे कामिल होने के शुब्हे को तवाइफों की आमद पर महमूल किया जा रहा है और मुरीद कह रहा है ये गुनाह है लेकिन तोबा से पाक साफ़ हो जायेंगे। थानवी के भाई अकबर अली रेंडियों के साथ सफर के दौरान उन तवाइफों का खाना भी साफ़ कर जाते हैं और ज़ामिन अली जलाला बादी तो शराफ़त की सारी हदों से तजावुज़ कर गए

जो तबलीग का तरीक़ा ए कार बताया यकीनन उनकी कमीनगी और ख़्वासत की अलामत थी।

यह वह लोग हैं जिनकी तालीमात को आम किया जा रहा है और उनकी किताबों को घरों की अलमारियों में सजाने का पैग़ाम दिया जा रहा है यहाँ तक कि उन किताबों को लड़कियों को जहेज़ में देना और पढ़ने की तलकीन करना कारे सवाब बताया जा रहा है। होश के नाखून पैदा करो और उन बे लगाम और ग़लीज ज़बान इस्तिमाल करने वालों से पूछो ऐ ज़ालिम! अगर तेरी किताबों को दुख़्तराने इस्लाम पढ़ेंगी तो किया असर क़बूल करेंगी? लेकिन उन्होंने अपने घर की बहू बेटियों को भी तबलीग़ का तरीक़ा ए कार वही बता रखा है जो किताबों में दर्ज है।

अगर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ ना लाते तो मिल्लत की दो शीज़ाओं का किया हाल होता किया लड़कियाँ जिन्दा ज़ेरे ज़मीन दफ़न नहीं की जा रही थीं? किया औरतों के साथ वहशी जानवरों सा सुलूक रवा न था? किया औरतें शौहरों की चिताओं पर जिन्दा ना जलाई जाती थीं? किया औरतें नागिन ना कहलाती थीं? किया लड़कियों का वजूद मन्हूस ना था? ज़रूर था ये सदका और करम है ताजदारे दो आलम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम का आज वहाबी देवबंदी हज़रात के घरकी औरतें चली है तबलीग़ करने जिसके पीछे रसूल दुशमनी कार फ़रमा होती है, तबलीगी निसाब, फ़ज़ाइले आमाल, बहिश्ती ज़ेवर घरों में पढ़कर सादा लौह ख़्वातीन को गुमराह करती हैं और तेज़ी के साथ अक़ाइद को बिगाड़ कर वहाबियत के रंग में रंगने की कोशिश कर रही हैं लेकिन फ़ज़ाइले आक़ाइद से नाबलद हैं। जबकि अक़ीदे के बग़ैर इमान नहीं। अक़ीदा अस्ल है पहले ज़हेन व फ़िक़र और क़ल्ब व जिगर की तत्हीर होनी चाहिये बादुहू हुब्बे रसूल की नग़मा सराई, फिर दर्स व तदरीस का अनोखा तरीक़ा आजमाना चाहिये मगर ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जब अक़ीदा सही हो जाएगा तो देवबंदियत का माजून बेअसर हो जाएगा और वहाबियत का चोखा रंग फ़ीका पड़ जायेगा और शोब्दा बाज़ अपना

कमाल दिखाने से कासिर हो जायेंगे यहाँ तक कि मौदूदियत का जादूई चराग़ बुझकर मुहब्बते रसूल की शमा जल उठेगी फिर सहीहुल अकीदा आला हज़रत की ज़बान में पुकार उठेंगे।

गैज़ में जलजायें बेदीनों के दिल।

या रसूलल्लाह की कसरत कीजिए ﷺ

तबर्क़ात

(1) जुब्बा शरीफ़ और मूए मुबारका सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि ज़ियारत और बुजुरगाने दीन के तबर्क़ात की ज़ियारत के मुतअल्लिक़ थानवी की ख़ब्तुल हवासी मुलाहिज़ा फ़रमाइये कि: "अव्वल तो उन तबर्क़ात की कोई सनद नहीं और अगर सनद हो जब भी जमा होने में बहुत ख़राबियाँ हैं।

(हवाला: बहिश्ती ज़ेवर जिल्द 6 स0, 387)

(2) थानवी कहते हैं कि बुजुर्गों के तबर्क़ात के साथ शग़फ़ नहीं मसलन कुर्ता वगैरा ये ख़याल होता है कि इसमें किया रखा है।

(हवाला:1 कमालाते अशरफ़िया(1995ई0) बाब1,मल01004,स0251)

(हवाला:2 हसनूल अज़ीज जि01,हि04,कि019,मल0534,स0147)

(3) थानवी का कहना है कि लोगों ने आज कल तबर्क़ात के मुतअल्लिक़ एतेकाद व अमल में जो गुलू कर रखा है उसको मैं नाजाइज़ समझता हूँ।

(हवाला अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द,2 स0, 302)

(4) मोल्वी इसमाईल देहलवी अपने पीर सय्यद अहमद राय बरेलवी की जूतियाँ ताज़ीम के लिए अपने साथ रखते थे।

(हवाला: अलइफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जि01,कि01,मल0164,स0103)

(5) मोल्वी इसमाईल देहलवी अपने पीर के घोड़े का अदब इस तरह करते थे कि लखनऊ से देहली तक घोड़े की लगाम थाम कर पैदल चले आये और घोड़े पर सवारी ना की।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत,77 स0,117)

(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत,77 स0,98)

(6) बकौल मोल्वी रशीद अहमद गंगोही जब मैं इबतिदा अन ख़ानिकाहे गंगोह में आया तो ख़ानिकाह में बोल व बाराज़ (पाख़ाना पेशाब) ना करता था बल्कि बाहर जंगल जाता था (ख़ानिकाह के आदाब को मल्हूज़ रखते हुए)

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत,304 स0,306)

(हवाला:2 अरवाहेसलासा हिकायत,304 स0,388)

(7) गंगोही ने अपने पीर का कुर्ता आँखों से लगाया और सर पर रखा फिर हाजेरीन के सरों पर चके बाद दीगरे रखा, कहा पीर का तबरूक है।

(हवाला:तजकिरतुल रशीद जिल्द,2 स0,167)

(8) तीन साल तक मर्जे इरहाल(दरत) की मरीजा यानी तबलीगी जामाअत के बानी मोल्वी इल्यास की नानी उनके पाखाना और निजासत से आलूदा कपड़ों में बदबू की जगा खुशबू और निराली महक थी कि एक दूसरे को सुँघाता था, हर मर्द व औरत तअज्जुव करता था चुनाँचे बगैर धुल्वाये उन को तबरूक बनाकर रख लिया गया।

(हवाला:1 तजकिरतुल खलील (मेरठ)स0,50)

(हवाला:2 तजकिरतुल खलील (सहारनपुर)स0,79 बारे अब्बल,1395हि0)

(हवाला:3 तजकिरतुल खलील (सहारनपुर)स0,96 बारे दोग,1411हि0)

(9) मोल्वी अहमद हुसैन अमरोही के यहाँ थानवी महमान बनकर गए रात में थानवी को बड़े इस्तिंजा की हाजत हुई। जनाना मकान के बैतुल खला में मोल्वी अहमद हुसैन ने इस्तिंजा के ढेले और पानी रख दिया थानवी ने कहा ये तो आबे ज़म ज़म है अब इस्तिंजा काहे से करूँ। (हवाला:1 कमालाते अशरफिया (1995)बाब,2 मल0, 96स0,342)

(हवाला:2 हसनूल अजीज जि02,हि02, किस्त16,मल0,709 स0,84)

(10) बैतुल खला में मोल्वी अहमद हुसैन अमरोही के हाथों से रखे हुए इस्तिंजा के ढेले के लिए थानवी ने कहा कि यह ढेले तो तबरूक हो गए अब इस्तिंजा काहे से क्या जावे।

(हवाला: अशरफुस्सुवानेह जि01,स0157)

(11) थानवी कहते हैं कि तबरूकात में असर के मुतअल्लिक मुझे शुबा था लेकिन केराना के एक बुजुर्ग ने मुझको एक चोगा भेजा जिसको रात को तबरूकन पहना था जबतक चोगा बदन पर होता गुनाह का वस्वसा ना आता था।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जि04,हि01, किस्त10, स0203)

(हवाला:2 हसनूल अजीज जि03, हि01, किस्त12,स062)

(12) थानवी को उन के मुरीद हाजी अब्दुल रशीद ने एक चोगा

भेजा बकौल थानवी जबतक उसे पहने रहता गुनाह का वस्वसा तक भी नहीं आता कई मर्तबा आजमाया है ऐसे मुरीद कि वजह से निजात हो गई। (हवाला:1 हसनूल अजीज जि0,1 हि0,2 कि0,17 मंल0,185)

(13) बुजुर्ग का जहाँ हाथ लगाहो वही तबरूक है थानवी का फिर कहना अजी खाना खुद तबरूक है ना मिलता हो उसको पूछो कैसा तबरूक है।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जि0,1 हिस्सा,2 कि0,17 मल0,317 स0,291)

(14) अपनी चीज को तबरूकन देना हराम है।

(हवाला:1 अलइफाजातुल योमिया(देवबंद) जि0,4कि0,23 मल0,242स0271)

(15) थानवी अपने पुराने कुरते क़ता करवाकर छोटे बच्चों के लिए चंद छोटे छोटे कुरते बतौरे तबरूक देने के लिए रखते थे ताकि तबरूक की दरखास्त परं फ़ौरन निकाल कर दिया जा सके।

(हवाला:1 अशरफुस्सवानेह जि0,2स0303)

(16) थानवी जी अपने जूते को बतौरे तबरूक देते वक्त जूते को धोकर और पाक व साफ़ करके देते थे।

(हवाला: अशरफुस्सवानेह जि0,3 स0,8)

(17) थानवी ने एक शख्स को अपना इस्तिमाल करदा कुरता ये कह कर दिया कि बतौर यादगार मुहब्बत अपने पास रखिये इसपर थानवी से कहा गया कि वोह तो इस को तबरूक समझेंगे जवाब में कहा कि वह जो कुछ चाहें समझें।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया(देवबंद) जि0,4कि0,23 मल0,242स0271)

(18) एक शख्स ने थानवी से बतौरे तबरूक कुरता मंगवाया, थानवी ने उस को खत लिखकर कहा कि दो आना का टिकिट में वहाँ पहुंच सकता है अगर मंगवाना हो दो आना के टिकिट भेज दो चुनाँचे उस शख्स ने थानवी को टिकिट भेज दिये. इस ज़िम्न में एक शख्स को हाज़िरीन में से कहा कि अच्छा तरीका तो ये है कि खुद कोई चीज लाकर दे दे. दो चार रोज़ इस्तेमाल करा के बतौरे तबरूकलेले (हवाला:हसनूल अजीज जि01,हि03,कि018,मल0497,स0148)

(19) एक शख्स ने अपनी तसबीह बनियते तबरूक थानवी को पढ़ने के लिये दी थानवी ने कहा कि ये अच्छी तदबीर है तबरूक बनाने कि।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया(देवबंद) जि0,1 कि0,1 मल0,161 स0,99)

(20) थानवी की मौजूदगी में लोगों ने हाजी इमदादुल्लाह की

चादर को बतौर तबरुक चूमा और आँखों से लगाया थानवी ने कहा कि मना करने को दिल गवारा नहीं करता कि मेरे पीर का मल्बूस है किस दिल से कुछ कहूँ।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जि0,2 हि0,1 मल0,48 स0,192)

(21) थानवी कहते हैं कि मेरे सामने हजरत गंगोही का दिया हुआ अमामा एक शख्स ने हाजी इमदादुल्लाह की खिदमत में पेश किया तो हजरत हाजी साहिब ने उसको आँखों से लगाया, सर पर रखा और फरमाया कि मौलाना का तबरुक है।

(हवाला: अलकलामुल हसन मल0,190 स0,90)

(22) मोल्वी अबुन्नसर के लिए गंगोही का पाखाना संदल और पेशाब गुलाब था।

(हवाला:1 तजकिरतुल रशीद जि0,1 स0,209)

(23) तबरुक के मुतअल्लिक थानवी कहते हैं कि कोई कहाँ तक तकसीम करे उम्दा तरकीब ये है कि जो चीज तबरुकन लेनी हो वह लाकर देदे और फिर बादे इस्तिमाल लेले।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जि0,4 हि0,1 कि0 10, स0,203)

(24) थानवी का कहना है कि अगर हाथ चूमना बरकत के लिए है तो कोठरी में बंद करके सारा बदन थूक वगैरा चाटो ताकि खूब बरकत हासिल हो।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जि03, हि01, कि012, स0,62)

(25) रशीद अहमद गंगो ही ने एक मर्तबा मोल्वी इसमाईल को मदीना तय्यबा की मिट्टी खाने के लिए दी मोल्वी इसमाईल ने कहा कि हजरत मिट्टी खाना तो हराम है इस पर गंगोही ने कहा यहाँ वह मिट्टी और होगी।

(हवाला:1 तजकिरतुल रशीद जि0,2 स0,48)

(26) रशीद अहमद गंगो ही ने मोल्वी इसमाईल को मोम बत्ती का एक टुकड़ा और एक मर्तबा गिलाफ़े काबा के रेशम का एक तार दिया और कहा इस को खालो।

(हवाला:1 तजकिरतुल रशीद जि0,2 स0,49)

(27) बीमार मोल्वी अहमद अली ने गंगो ही के खादिम से कहा कि गंगोही का बचा हुआ खाना मुझको देना शिफा होगी।

(हवाला: हसनूल अजीज जि02, हि02, कि015, मल0360, स0139)

(28) दारुल उलूम देवबंद के मोहतमिम से थानवी मिलने आते हैं यक्के के किराए के पैसे देने के लिए थानवी ने अपने खादिम नियाज को कहा इस पर मोहतमिम ने थानवी को कहा कि वह पैसे मुझे दे दीजिये ताकि तबरुकन मैं उन्हें अपने पास रख लूँ। चुनाँचे किराए के पैसे थानवी ने मोहतमिम को दिये मुहतमिम ने यक्के वाले को किराया अपनी जेब के पैसे से दिया और थानवी के दिये हुए पैसे को अपने पास तबरुकन रखा।

(हवाला: हसनूल अजीज जि02, हि02, कि015, मल0123, स015)

(29) मोल्वी मुजफ्फर हुसैन काँधलवी की लुंगी बतौरे तबरुक मुरीदीन में तकसीम की गई।

(हवाला: 1 हिकायातुल औलिया हिकायत न0,201 स0,222)

(हवाला:2 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर) बारे दोम 1411 हि0 स0,102)

(हवाला:3 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर) बारे अव्वल 1395 हि0 स0,85)

(हवाला:4 अरवाहे सलासा हिकायत 201 स0,201)

तजिस तबीअते

न तुम सदमें हमें देते न हम फरयाद यूँ करते
न खुलते राज सरबस्ता न यूँ रुस्वाईयाँ होतीं।

कारिईने किराम! पढ़लिया आपने देवबंदी बुर्जुगों के तबरुकात और उनके इस्तेमाल का तजकिरा किसी की लुंगी तबरुक बनाकर तकसीम हो रही है तो किसी के पाखाना व पेशाब को(मआजल्लाह) संदल व गुलाब से तशबीह दी जा रही है। यहाँ तक कि इसमाईल देहलवी अपने पीर सय्यद अहमद राये बरेल्वी की जूतियाँ अपने साथ हर वक्त हुसूले बर्कत के लिए रखते थे। पढ़ते जाईये और हँस्ते जाईये। अब फैसला आपको करना है कि जो लोग तबरुकात को शिक व बिदअत करार दे रहे हैं वही लोग बहुस्न व खूबी बकौले खुद शिक व बिदअत जैसे जुर्म का इरतिकाब कर रहे हैं उनके यहाँ तबरुकात चाहे अंबिया अलैहिमुस्सलाम के हों या किसी बुजुर्ग के हों सबके सब बिदअत व नाजाइज उमूर में दाखिल हैं और उनसे इस्तिफादा करना गुमराही की अलामत। मगर ये लोग अपने बुजुर्गों के पाखाना पेशाब जैसी गलाजत को तबरुक समझ रहे हैं

जैसा कि मोल्वी इल्यास की नानी का वाक़ेआ गुज़रा कि पाख़ाना और निजासत से भरपूर कपड़ों में बकौल उनके खुशबू और निराली महक आ रही थी और वहाबी धर्म के लोग यके बाद दीगरे सूँघ सूँघ कर मशामे जाँ को मोअत्तर कर रहे थे इस ग़लाज़त आलूद पैराहन की खुशबू से दिल व दिमाग़ के लिए सुकून राहत व करार फरहत व इंबिसात बता रहे थे। और बग़ैर धुलवाए बतौरे तबरूक महफूज़ भी कर लेते हैं।

पाख़ाना और पेशाब वाले कपड़े से खुशबू महसूस करने वालों के गुरु मोल्वी अशरफ़ अली थानवी कहते हैं कि जुब्बा व अमामा शरीफ़ या मूए मुबारका सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ियारत हो या दीगर तबरूकाते औलियाए किराम हों उन सबके तअल्लुक़ से कोई सनद नहीं और उनके जमा होने में बहुत सी ख़राबियाँ हैं इन अक्ल के अंधों को नानी के पाख़ाना और पेशाब जैसी नजासत में ख़राबियाँ नज़र ना आई नए नए फितनों के जन्म दाता तबरूकात से पैदा होने वाली ख़राबियों की निशान्दही वाज़ेह तौर पर न कर सके ताकि लोग इस गुनाह और बिदअत से महफूज़ रहते।

ज़हेर अफ़शानी, इफ़तिराक़ व इन्तेशार के अलावा और किया कहा जा सकता है उन तबरूकात की अज़मत व तक़दीस और उनसे इआनत का चिराग़ फूँक मारने से क़तअन नहीं बुझ सकता। बिदअत की हकीक़त व माहियत समझे बग़ैर हर बिदअत को बिदअते सय्या से ताबीर करना इन्तेहाई दरजे की जिहालत है। तबरूकात तक़सीम करना खुद शारए इस्लाम अलैहिरसलाम की पाकीज़ा सुन्नत है जुमला आसार व तबरूकात में से आप के मूए मुबारक शरीफ़ को बड़ी फज़ीलत और अहमियत हासिल है। शायद अर्जे गीती का कोई इलाका कोई ख़ित्ता ऐसा हो जहाँ मुसलमानों की आबादी हो और मूए मुबारक न हो, अहले ईमान के कुलूब में इस की बड़ी अज़मत है। जो यकीनन आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मुहब्बत की

शनाख्त और दलील है।

हजरते अनस रजियल्लाहो तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज्जाम को बुलाकर सरे मुबारका के दाहनी जानिब बाल उतार ने का हुक्म दिया फिर हजरत अबू तल्हा रजियल्लाहो तआला अन्हु को बुलाकर वह सब बाल शरीफ़ उनको अता फरमा दिये उसके बाद बायें तरफ़ के बालों को मूँडने का हुक्म दिया हज्जाम ने बाल शरीफ़ उतारे पस वह हजरत रजियल्लाहो तआला अन्हु अबू तल्हा को दे दिये और फ़रमाया ये लोगों में तक़सीम कर दो। अब आप ही बताईये कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का भेजा हुवा तबरूक दुनिया का कौनसा मुसलमान है जो सीने से ना लगाएगा यही वजह है कि आशिक़ाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस अजीम तबरूक को हिरजे जाँ बनाकर रखा और इमामे ईशक़ व मुहब्बत सय्यदुना आला हजरत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं।

जो सर पे रखने को मिलजाए नाले पाके हुजूर
तो फिर कहेंगे कि हाँ ताजदार हम भी हैं।

ईमान में मज़ीद पुख़्तगी के लिए एक हदीस और पढ़िए हजरत अस्मा बिन्ते अबू बकर रजियल्लाहो तआला अन्हुमा से मरवी है उन्होंने ने (हजरते अस्मा ने) एक ऊनी जुब्बा केसर वानी साख़्त का निकाला जिसकी पलेट रेशमी थी और दोनों चाकों पर रेशम का काम था। अर्ज किया ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का जुब्बा है जो हजरते आयेशा सिद्दीका रजियल्लाहो तआला अन्हो के पास था उनके इन्तेक़ाल के बाद मैंने लिया सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इसे ज़ेब तन फ़रमाते थे। हम इसे धो धो कर बीमारों को पिलाती हैं और इससे शिफ़ा तलब करती हैं मुंकिरीने आसारे मुबारका बतायें हजरते अस्मा रजियल्लाहो तआला अन्हो के इस फ़ेले मुबारक पर उनका किया फ़त्वा है जबकि हदीसे मज़कूर बुजुर्गों के तबरूकात से हुसूले बरकात की बय्यिन दलील है। रहतमे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मलबूसे मुबारक धोकर मरीजों को पिलाना और उसके तवस्सुल से शिफ़ा तलब करना उन पाक बाज़

खातीन का तरीक़ा कार था जिनके लैल व नहार शब व रोज़ का लम्हा लम्हा वही ए इलाही की छाओं में गुज़रते थे। इसी हदीसे पाक की शरह में इमाम नोवी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं।

دلیل علی استحباب التبرک باثار الصالحین و ثیابہم

(शरह मुस्लिम लिन्नी जी02, स0191, बहवाला माहनामा अशरफिया जून 1976 स0, 17)

इस हदीस में सालेहीन के आसार और उनके मलबूसात पे हुसूले बर्कत के मुस्तहब होने का सुबूत है।

इश्के रसूल की वादियों में जीवन बिताने वाले हज़रते ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हु की दास्ताने इश्क पढ़िए :

हज़रते ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो अन्हो की तलवारों में से एक तलवार थे। मैदाने जंग में हमेशा अपनी टोपी सरपर रखते थे एक मर्तबा जंगे यरमूक में घमसान की जंग हो रही थी नेजों की बौछार थी आपकी टोपी गुम हो गई लड़ाई छोड़कर उसकी तलाश में दीवाना वार मुनहमिक हो जाते हैं लोगों ने देखा कि तीर बरस रहे हैं तलवारें और नेजे अपना अपना काम कर रहे हैं मौत सामने खड़ी है मगर जनाब ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहो तआला अन्हु टोपी की तलाश में सरगरदाँ और परेशान हैं आखिर कार टोपी मिल जाती है तो खुशियों से बाछें खिल जाती हैं और फ़खरिया अंदाज़ में फरमाते हैं कि भाईयो! मुझे ये टोपी क्यों इतनी अजीज़ है जानलो कि मैंने आज तक जितनी जंगें जीती हैं इसी टोपी के तुफ़ैल में, सब इसकी बरकतें हैं क्योंकि मैंने इस टोपी में रहमते दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाले मुबारक सी रखे हैं।

हज़रात! ग़ौर कीजिए हज़रत ख़ालिद वह सिहाबी हैं जिनकी पूरी जिंदगी मैदाने जंग में कुफ़ार व मुशरिकीन से लड़ते हुए गुज़री है अगर तबरूकात की सनद ना होती और उससे फ़वाईद हासिल करना बिदअत होता तो आप हरगिज़ ऐसा न करते। सावन के अंधों से मेरा सवाल है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और दीगर सिहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के तअल्लुक़ से किया राये कायम करते हैं मेरे सरकार आब्या हज़रत रहमतुल्लाह अलैह

फरमाते हैं। सुन्नियो उन से मदद माँगे जाओ
पड़े बकते रहें बकने वाले।

मजारात पर हाजरी

(1) अंबिया व औलिया के मजारात का कस्द करके जाने के तअल्लुक से मोल्वी इसमाईल देहलवी ने अपनी खुबासत का इजहार इस तरह किया है।

“फिर जो कोई किसी पीर व पैगम्बर या भूत परी को या किसी सच्ची या झूटी कब्र या किसी थान या किसी जगह या किसी मकान या तबरुक या निशान या ऐसे मकानों का दूर से कस्द करके जाए तो उसपर शिक साबित होता है”

(हवाला:1 तकवियतुल ईमान (दारुस्सलफिया मुंबई) स0,24)

(हवाला:2 तकवियतुल ईमान (कुतुब खाना मसऊदिया देहली) स0,21)

(2) सवाल: मेला हुनूद व उर्स मुसलमान में जैसा हरीद्वार और पीराने कल्यर व अजमेर वासते सौदागरी या खरीदने किसी शए जरूरत के खास व आम को जाना कैसा है ?

जवाब: मेलों में हुनूद व मुस्लमानों के जाना तिजारत के वास्ते भी हराम है।”

(हवाला: फतावा रशीदया (जदीद) स0,556)

(3) बकौल रशीद अहमद गंगोही:

“ कुबूरे बुजुर्गान की जियारत को सफर करके जाना मुख्तलिफ फीह है बाज उलमा दुरुस्त लिखते हैं और बाज मना करते हैं ये मसला मुख्तलिफ है इसमें नजा व तकरार नहीं चाहिए मगर हाँ उर्स के दिन जियारत को जाना हराम है।

(हवाला: फतावा रशीदया (जदीद) स0,555)

(4) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही से एक दिन एक शख्स ने जियारते कुबूर के लिए हुक्म दरयाफ्त किया कि जाइज या नाजाइज गंगोही ने कहा कि इस में उलमा का इख्तिलाफ है बंदा फैसला नहीं कर सकता।

(हवाला: तजकिरतुल रशीद जि02,स0,286)

(5) देवबंद में मोल्वी कासिम नानोतवी की कब्र के मुतअल्लिक खाजा अजीजुल हसन ने कहा कि बड़ी बरकत की जगह होगी मैं वहाँ जरूर जाऊंगा उस पर थानवी ने कहा हाँ किया हरज है।

(हवाला: हसनुल अजीज जि04, हि02, कि011, स0110)

(6) थानवी कहते हैं कि अपने सिलसिले के बुजुर्गों के मजार पर बड़ा फैज होता है।

(हवाला: हसनुल अजीज जि04, हि01, कि010, स0, 107)

(7) थानवी साहिब अजमेर जाते हैं वहाँ की कैफियत यूँ ब्यान करते हैं कि मालूम होता था कि तमाम शहर पर अनवार बरस्ते थे।

(हवाला: हसनुल अजीज जि04, हि010, स0106)

(8) बकौल थानवी कभी कभी कब्र से फैज हासिल करके लोग बुजुर्ग होगए।

(हवाला: हसनुल अजीज जि02, हि0 3, कि016, मल0591, स0, 34)

(9) झुंनझाना में थानवी अपने दादा पीर मियाँ जी के और सय्यद शाह महमूद के मजार पर रोज़ाना हाज़री देते मियाँ जी के दाहिने पहलू पर एक पुख्ता कब्र के सिरहाने रुमाल बिछाकर उस पर बैठकर थानवी मुराकेबा करते और कहते कि सुकून की कैफियत पैदा हो जाती है।

(हवाला: हसनुल अजीज जि0, 1 हि02 कि0 17 मल0, 299 स0, 882)

(10) थानवी का अजमेर शरीफ़ ज़ियारत की गरज़ से जाना और कहना कि वहाँ तमाम शहर में वहाँ की ज़मीन व आसमान में रौनक है।

(हवाला: हसनुल अजीज जि0, 1 हि0 3 कि0 18 मल0, 469 स0, 458)

(11) थानवी कहते हैं कि शाह विलायत के उर्स में हर साल सूफियों के लिए वालिद साहिब देग भेजा करते थे वालिद साहिब की वफ़ात के एक साल बाद जब मैं यहाँ आया तो मैंने मौकूफ़ किया कि ये वाहीयात है।

(हवाला: हसनुल अजीज जि0, 1 हि0 3 कि0 18 मल0, 542 स0, 203)

(12) थानवी का इसतिदलाल मुलाहिज़ा हो कि उर्सों की तरफ़ रेन्डी भड़वों को ज़्यादा मैलान होता है इसलिए ज़ाहिर है कि वह

अमर बुरा है वरना नेक लोग क्यों मुतवज्जे नहीं होते।

(हवाला: हसनुल अजीज जि0,1 हिस्सा 3 किस्त 18 मल0, 488 स0,138)

मुनाफ़िक्ते देवबंदियत

मोहतरम हजरात! मजकूरा बाला इबारात पढ़ने के बाद आप बातिल अकाइद के लोगों की ज़हनी अय्यारी ज़रूर महसूस किये होंगे ऐहले सुन्नत व जमाअत का मजहब ये है कि अंबिया व औलिया के मजारात व मकाबिर पर हाजरी के लिए सफ़र करना और इकतिसाबे फ़ैज के लिए हाज़िर होना जाइज़ व मुस्तहसन है सहाब ए किराम के ज़माने से लेकर आजतक तमाम मुसलमानों का इस पर अमल रहा है।

अहादीस और बुजर्गों की किताबों से साबित है हदीस शरीफ़ में है कि हज़रते कअब हज़रते आइशा रज़ियल्लाहो अन्हो के यहाँ हाज़िर हुए तो हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का ज़िक्र हुवा आपने कहा कि सरकारे दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की कबरे अनवर पर 70 हज़ार फरिश्ते सुबहो शाम हाज़िर होकर रौज ए अनवर का तवाफ़ करते हैं अब आप बताईये अगर ज़ियारत के लिए सफ़र करना बिदअत और हराम होता तो अल्लाह के नूरानी मासूम फ़रिश्ते करोड़ों मील का सफ़र तै करके क्यों हाज़िर होते देवबंदी वहाबी हज़रात के नज़दीक महबूबाने बारगाहे इलाही के मजारात पर हाज़री देना शिर्क है जैसा कि रुस्वाए ज़माना किताब तकवीयतुल ईमान में मोल्वी इसमाईल देहलवी ने लिखा है किसी कब्र पर दूर दूर से सफ़र की रंज व तकलीफ़ उठा कर पहुँचना और उसके गिर्द व पेश के जंगल का अदब करना और उनसे कुछ दीन व दुनिया के फ़ायेदे की उम्मीद रखना शिर्क है। एक ही सिक्के के दो पैहलू।

एक तरफ़ शिर्क बताया जा रहा है मगर दूसरी जानिब उसी शिर्क को बड़ी खूबसूरती के साथ अपनाया जा रहा है जबकि मुंदरजा

बाला इबारतों से जाहिर हुवा कि हाजरी के साथ साथ उसके फवाइद से भी आगाह किया जा रहा है अशरफ अली थानवी कहते हैं कि कभी कभी कब्र से फैज हासिल करके लोग बुजुर्ग हो गए हैं, कासिम नानोतवी की कब्र को ख्वाजा अजीजुल हसन बड़ी बरकत की जगह कह रहे हैं और दूसरी तरफ थानवी जी आइने में अपनी शकल देख कर कह देते हैं कि वहाँ भड़वों और तवाइफों का ज्यादा मैलान होता है अलअमान वलहफीज उलमाए देवबंद के दोनों रुख मुलाहिजा फरमाने के बाद फैसला आप पर है कि एक जगह जो चीज शिर्क व हराम है वही शिर्क दूसरी जगह जाइज व मुस्तहसन कैसे? दोनों रुखों के तअल्लुक से जो इबारतें मौजूद हैं उससे नतीजा यही निकलता है कि देवबंदी मजहब तजाद व फसाद का मजमुआ है हजरत सय्यदुना अबू हरैरा रजियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूले कौनैन सल्लललाहो अलैहे वसल्लम अपनी वालिदा माजिदा सय्यदा आमिना रजियल्लाहो अन्हा की कब्र पर तशरीफ ले गए और वहाँ जाकर खुद भी रोए और साथियों को भी रुलाया हजरत मोहम्मद बिन नोमान रजियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम सल्लललोहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स जुमा के रोज अपने वालिदैन की या उनमे से किसी एक की कब्र की जियारत करे तो उसकी मगफिरत कर दी जाती है और उस शख्स का नाम नेको कारों की फेहरिस्त में शामिल कर लिया जाता है । (मिशकात शरीफ बाबे जियारतुल कुबूर)

सरवरे दो जहाँ राहते इन्स व जाँ सल्लल्लोहो अलैहे वसल्लम इरशाद फरमाते हैं जो शख्स मेरी जियारत को आए और जियारत के अलावा उसकी दूसरी नियत न हो तो मुझ पर हक हो गया कि उसकी शफाअत करूँ जियारते कुबूर को जाइज बताने वालों को बिदअती मुशरिक रजाखानी कब्र परस्त कहने वाले बगौर मुताला करें मेरे सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ऐसे शख्स को

शफाअत की जमानत दे रहे हैं और बादे वफात जिंदगी का सुबूत भी हजरत इमाग शाफई रहमतुल्लाह अलैह ने इगामे आजम अबू हनीफा रजियल्लाहो अन्हो की कब्र पर हाजरी दी है बड़े बड़े बुजुर्गों ने औलियाए किराम के अेरस के मौकों पर हाजिर होकर रुहानी फुयूज व बरकात हासिल किए हैं

हसनुल अजीज, फतावा रशीदिया की इबारतों से वाजेह होता है कि उन लोगों के कुलूब मुहब्बत व ईमान से यक्सर खाली थे वरना ऐसा न कहते और ना मुत्तबिईन को हुक्म देते। बुजुर्गाने दीन का उर्स मनाना तमाम उम्मत का मामूल रहा है और सालिहीन का तरीक़ा कार रहा है और यही हक़ और मुस्तहसन है इस के खिलाफ़ कहने और लिखने वाले सबके सब गुमराह, बददीन, मुर्तद हैं खुवाह अकाबिर हों या असागिर। बरेली के ताजदार सरकार आला हजरत रहमतुल्ला अलैह फरमाते हैं

जो तेरे दर से यार फिरते हैं।

दर बदर यूँ ही ख़ार फिरते हैं

कव्वा खाने का जवाब

(1) जिस जगह जागे मारुफ़ा को अकसर हराम जानते हों और खाने को बुरा जानते हों तो ऐसी जगह उस कव्वा के खाने वाले को सवाब होगा। (हवाला1:फतावा रशीदिया (मुबव्वब)1987ई0स0597)

(हवाला2:फतावा रशीदिया (कदीम)1363हि0 जि02,स0130)

(2) गंगोही की महफिल में एक शख्स ने कहा की कव्वे गल्ले को बहुत नुक़सान पहुँचाते हैं इसपर गंगोही ने कहा की हाँ खाना शुरू कर दो तो कम हों।

(हवाला: तजकिरतुल रशीद जि02,स0177)

(3) गंगोही से पूछा गया की यह देसी कव्वा उमूमन बस्तियों में पाया जाता है वह हलाल है या हराम जवाब में गंगोही ने यह कहा की यह कव्वा जो इन बस्तियों में पाया जाता है इसके हलाल होने में शुबा नहीं बल्कि अगर तहकीक़ ना भी होतो भी इसकी हिल्लत में शुबा नहीं

(हवाला:तजकिरतुल रशीद जि01,स0178)

(4) जिस जमाने में कच्चा खाने के मसाले का शोर व गुल था, थानवी से एक शख्स ने पूछा कि क्या कच्चा खाना जाइज है, थानवी ने साइल से पूछा कि क्या खाओगे? उसने कहा कि नहीं तो, कहा कि जब खाओगे नहीं तो पूछते क्यों हो न तुम को पूछना फर्ज है और न मुझको बताना फर्ज है।

(हवाला1: अलइफाजातुल योमिया (देवबन्द) जि01, कि03, मल0673, स0337)

(हवाला2: आदावे इफता व इरिताफता स052)

(5) थानवी से एक शख्स ने पूछा कि कच्चे की कै किस्में हैं? थानवी ने कहा कि मुझको मालूम नहीं अगर आप फरमायें तो आदमी की किस्में ब्यान करूँ और यह भी अर्ज करदूँ कि आप कौनसी किस्म में दाखिल हैं।

(हवाला: मजीदुलमजीद मल010, स06)

(6) कच्चे की हिल्लत के फतवे में गंगोही ने बहुत बड़े अजर की उम्मीद की जिसका अंदाज़ा आप खुद लगाइये हकगोई में आप किसी मलामत का अंदेशा नहीं फरमाते थे बल्कि अगर हक गोई पर लोग आपको बुरा कहते थे तो उस पर निहायत फरहत व सुरूर होता था आपने देसी कच्चे की हिल्लत का फतवा दिया उस पर जोहला में शोर व गोगो उठा है तो आपने फरमाया कि मुझको किया ख़बर थी कि इस में हक तआला ने इस क़दर अजर रखा था।

(हवाला: तजकिरतुल रशीद जिल्द 2, स0, 64)

उम्र भर शौक से खाते रहे काला कच्चा

हमने मुर्गा जो खिलाया तो बुरा मान गए

नऊजू बिल्लाहे मिनजालिक : ये धरम है तौहीद के अलमबरदारों और पुजारियों का जिनके यहाँ हराम चीज़ भी हलाल है और हलाल चीज़ हराम है मोहरम की सबीलें और मोहरम का खिचड़ा नाजाइज, शबे बरात का हल्वा ना जाइज, फातिहा जिस खाने पर पढ़ दिया जाए वह खाना हराम, महाफिले मीलाद के तबरूकात, शीरीनी सब हराम व नाजाइज है। कहते हैं दिल सियाह होजा ता है मगर कच्चा खाने से बकौले अकाबिरे देवबंद दिल रोशन और मुनव्वर हो जाता है इस के अेलावा बड़ा अजर व सवाब बताकर खाने पर आमादा किया

जा रहा है लगता है कि कव्वों ने किसी जमाने में उन बुजुर्गों के साथ कोई बड़ा भोंडा मजाक किया था जिस जुर्म की पादाश में सजा देने की तजवीज पेश की गई अभी तक देसी घी और देसी मुर्ग के खाने की लज्जतों से आशना थे अब देसी कव्वों पर हमला कर दिया जो गल्ले को नुकसान पहुँचाते हैं।

अरे नादान! कव्वा ख्वाह देसी है या विदेसी उसका खाना कैसे जाइज हो जाएगा ? किया फुकहाये मिल्लत और अइम्म ए मुजतहेदीन ने कोई सूरत बताई है मसले की तौजीह के लिए हवाले के साथ मुफ़स्सल बयान करना चाहिए ताकि लोग समझते कि उसके जवाज में फुकहा का कौल है, या बस जो चीजें नुकसान का सबब बनें उनकी हिल्लत का फ़तवा दे दिया जाए अगर ऐसा ही है तो कुत्ते किया कम नुकसान पहुँचाते हैं जिसको काट लेते हैं उसे बड़े बड़े हकीमों और डॉक्टरों की दहलीज पर हाजिरी देनी पड़ती है बसा औकात कुत्ते का काटा हुआ आदमी हलाक भी हो जाता है परिंदों में उकाब गिध वगैरा जो मुर्दार खाते हैं जिनका निशाना बहुत कम ख़ता करता है अपने शिकार के हुसूल पर इस क़दर हरीस होते हैं कि अगर शिकार से बाज रखने की कोशिश कीजिये तो आँखें जाए कर देते हैं ऐसे बहुत से दरिंदे और जानवर मिलेंगे जिनसे शदीद नुकसानात होते हैं मसनदे इफ़ता को ग़लत इस्तिमाल करने वाले कव्वा ख़ोर मोल्वी रशीद अहमद गंगोही जिनके फतवे से बुग्ज व इनाद, दगा, व फ़रेब, मकर व जालसाजी की बू आती है खुद कितने कव्वों को लुक़म ए तर बनाए होंगे आँ जनाब ने विटामिन का कौनसा माद्दा महसूस क्या जिसके खाए बग़ैर चार ए कार ना था मगर खुदा जब दीन लेता है तो अक़लें छीन लेता है।

इस्लामी उसूलों और शरीअते मुस्तफ़ा को पामाल करने वाले खुद साख़्ता मुफ़तियाने देवबंद ने अपनी किताबों में जिस तरह मसाइले शरीआ की धज्जियाँ फ़िज़ाए बसीत में बिखेरी हैं उसे पढ़कर एक

आम से आम मुसलमान भी बरदाश्त नहीं कर सकता है मगर उनके पैरु कार आज भी बहती गंगा में गुस्ल कर रहे हैं उनके सामने अगरचे हवालों और दलाइल के अंबार लगा दीजिये मगर उनके सरो पर जूँ तक नहीं रेंगती है सच फरमाया है ताजदारे बरेली ने।

तेरी दोजख से तो कुछ छीना नहीं
खुल्द में पहुँचा रजा फिर तुझको किया

शिक्र फ़िल्म असमा

अब्दुल नबी, पीर बख़्श वगैरा नाम रखना

(1) मोल्वी इस्माईल देहलवी शिक्र की मुख़तलिफ़ शकलों के जिम्न में रक़म तराज़ हैं कि कोई अपने बेटे का नाम अब्दुल नबी रखता है कोई अली बख़्श, कोई मदार बख़्श, कोई सालार बख़्श, कोई गुलाम मुहिय्युद्दीन (ऐसा नाम रखना शिक्र है)

(हवाला1: तक़वियतुल ईमान (दारुस्सलफ़िया मुम्बई) स0, 16)

(हवाला2: तक़वियतुल ईमान (कुतुब ख़ाना मसऊदिया देहली) स0,10)

(2) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने फ़तवा दिया के नबी बख़्श, पीर बख़्श, सालार बख़्श, मदार बख़्श नाम रखना मूहिमे शिक्र हैं मना है उनको बदलना चाहिये।

(हवाला:1 फ़तवा रशीदया (मुबव्वब) 1987 ई0 स0,69)

(हवाला:2 फ़तवा रशीदया (क़दीम) 1363 हि0 स0,59)

(3) रशीद अहमद गंगोही के दादा का नाम पीर बख़्श था।

(हवाला:1 तज़किरतुल रशीद जिल्द 1, स013,15,17)

(हवाला:2 सवानेह कास्मी जिल्द 1, स0,69)

(4) रशीद अहमद गंगोही के नाना का नाम फ़रीद बख़्श था।

(हवाला: तज़किरतुल रशीद जिल्द 1 स0,13)

(5) मोल्वी अशरफ़ अली थानवी ने अपनी किताब बहिश्ती ज़ेवर में कुफ़र व शिक्र के उन्वान के तहेत, अली बख़्श, हुसैन बख़्श, अब्दुल नबी वगैरा नाम रखना शिक्र में शुमार किया है।

(हवाला:1 बहिश्ती ज़ेवर(रब्बानी बुक डिपो देहली) हि01, स035)

(6) रशीद अहमद गंगोही के उस्ताद का नाम मोल्वी मोहम्मद बख्श था।

(हवाल तजकिरतुल रशीद जि02,स0278)

(7) मोल्वी कासिम नानोतवी के दादा के वालिद का नाम मोहम्मद बख्श था मोल्वी कासिम नानोतवी का शजरऐ नसब इस तरह है मोहम्मद कासिम बिन असद अली बिन गुलाम शाह बिन मोहम्मद बख्श।

(हवाल:सवानेह कास्मी जि01,स0113,115,179)

(8) मोल्वी कासिम नानोतवी के पर दादा शेख मोहम्मद बख्श के भाई का नाम ख्वाजा बख्श था।

(हवाल:सवानेह कास्मी जि01,स0179)

(9) मोल्वी अशरफ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, मोल्वी कासिम नानोतवी के पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की के उस्ताद का नाम कलन्दर बख्श था।

(हवाला:हसनूल अजीज जि03,हि01,कि012,स0199)

(10) मोल्वी खलील अहमद सहारनपुरी के बचपन के पीर और तबलीगी जमाअत के बानी मोल्वी इल्यास काँधलवी की नानी के वालिद मोल्वी मुजप्फर हुसैन काँधलवी के वालिद का नाम मोल्वी महमूद बख्श था।

(हवाला1:हिकायाते औलिया हिकायत191,स0215)

(हवाला2:अरवाहे सलासा हिकायत,91)

(हवाला3:तजकिरतुल खलील (सहारनपुर)बारे दूम 1411हि0,स097)

(हवाला4:तजकिरतुल खलील (सहारनपुर)बारे अब्वल1395हि0,स079)

(हवाला5:तजकिरतुल खलील (मेरठ) स051)

अलफाबे किब्ला व काबा का इस्तेमाल

(1) बकौल मोल्वी रशीद अहमद गंगोही खत में किसी को अलफाब किब्ला व काबा लिखना दुरुस्त नहीं

(हवाला1: फतावा रशीदया (1987ई0)स0567)

(हवाला2: फतावा रशीदया (1363हि0)स0116जि03)

(2) फतावा रशीदया में मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने फतवा

दिया कि क़िबला व काबा वगैरा अलफाज व अलकाब किसी की निसबत लिखने और कहने मकरूह तहरोमी हैं बल्कि जब ज्यादा हृदे शाने नबवी से कलिमात आप के वास्ते ममनू हुए तो किसी दूसरे के वास्ते क्योंकर दुरुस्त हो सकते हैं।

(हवाला1: फतावा रशीदया (1987ई0)स0566)

(हवाला2: फतावा रशीदया (1363हि0)स0114,हि02)

(3) बकौल रशीद अहमद गंगोही क़िबला व काबा जैरो अलकाब लिखना ममनू है बल्कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के लिए भी ममनू है।

(हवाला: तज़किरतुल रशीद जिल्द1,स0,137)

(4) मोल्वी अशरफ अली थानवी ने हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिरे मक्की को क़िबला व काबा लिखा

(हवाला1: तज़किरतुल रशीद जिल्द1,स0,116)

(हवाला2: तज़किरतुल रशीद जिल्द1,स0,118)

(5) थानवी कहते हैं कि मौलाना फजलुर्रहमान गंज मुरादाबादी मेरे क़िबला व काबा हैं।

(हवाला:हसनूल अजीज जि03,हि03,कि14,स0121)

(6) मोल्वी अशरफ अली थानवी के लिए क़िबला का लक़ब इस्तेमाल मुतअदिदद जगहों पर हुआ है।

(हवाला1:हसनूल अजीज जि02,हि02,कि15,मल0,35 स019)

(हवाला2:हसनूल अजीज जि02,हि02,कि15मल0,136,स021)

(हवाला3:हसनूल अजीज जि02,हि02,कि15,मल0,231स074)

(7) बकौल थानवी, मोल्वी महमूद हसन देवबंदी मेरे उस्ताद और क़िबला व काबा हैं।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जि02,कि010,मल0808,स0457)

(8) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के इंतैकाल पर दारूल उलूम देवबंद के शेखूलहिंद मोल्वी महमूदुल हसन देवबंदी ने एक मरसिया लिखा जिस में गंगोही को रुहानी और जिसमानी हाजात का क़िबला लिखा है।

हवाइज दीन व दुनिया के कहाँ ले जायें हम यारब
गया वह क़िबल ए हाजाते रुहानी व जिसमानी

जिधर को आप माइल थे उधर ही हक भी दाइर था
मेरे क़िबला मेरे काबा थे हक्कानी से हक्कानी

(हवाला: मरसिया गंगोही स07,8)

(9) मोल्वी अशरफ अली थानवी को क़िबला व काबा लिखा गया।

(हवाला: खातिमतुरसवानेह स0155)

(10) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही मोल्वी कासिम नानोतवी और मोल्वी अशरफ अली थानवी के पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह को मुतअदिद मर्तबा क़िबला लक़ब के साथ हजरत हाजी साहिब क़िबला लिखा है।

(हवाला1:सवानेह कास्मी जि01,स088,एक मर्तबा)

(हवाला2:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,294,एक मर्तबा)

(हवाला3:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,295,एक मरतबा)

(हवाला4:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,297,दो मरतबा)

(हवाला5:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,298,तीन मरतबा)

(हवाला6:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,300,एक मरतबा)

(हवाला7:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,365,एक मरतबा)

(हवाला8:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,368,एक मरतबा)

(हवाला9:सवानेह कास्मी जि0,1,स0,447,एक मरतबा)

बिद्अतों के परचम तले

(जशने सद साला दारुल उलूम देवबंद)

1981ई0 को दारुल उलूम देवबंद का जश्ने सद साला मनाया गया था जिसमें वज़ीरेआज़म भारत मिसिज इंदरा गाँधी को शमे महफ़िल करार दिया गया रेडियो, टीवी, अख़बारात वगैरा के जरिये तआवुन लिया गया और दारुल उलूम देवबंद की मीलाद खुवानी के साथ नज़रियाते देवबंद और अफ़कारे वहाबियत की तशहीर की गई इंदरा गांधी ने जश्न का इफ़तेताह किया जिन के दीदार और निस्त्रानी अदाओं से पूरे देवबंद का माहौल मरहूर हो गया तालियों की सदाओं में इंदरा गांधी ने अपनी तक़रीर से जश्ने दारुल उलूम देवबंद को मुस्तफीज़ किया और बानि ए देवबंद के नवासे और मदरसा देवबंद के बानी व मोहतम्मिज़ क़ारी मोहम्मद तय्यब साहिब ने

इज्जत मआब वजीरे आजमे हिन्दुस्तान कहकर खैर मकदम ही नहीं बल्कि बड़ी बड़ी हसतियों में शुमार किया ' भारत के साबिक सदरे जमहूरिया राजेंद्र प्रसाद के हवाले से देवबंद को आजादि ए हिंद का एक मजबूत सुतून करार दिया इंद्रा गांधी ने दारुल उलूम देवबंद को अपनी पार्टी काँग्रेस से मुनसलिक करार दिया। अफ़सोस सद अफ़सोस मर्दों के झुरमुट में नंगे सर, बरैहना बाजू एक औरत की तकरीर जश्ने दारुल उलूम देवबंद में करवाई गई इंद्रा गांधी के अलावा मजकूरा जश्न में मिस्टर राज नारायण, जग जीवन राम मिस्टर बहुगुणा वगैरा ने शिरकत की और इंद्रा गांधी के बेटे संजय गांधी ने तकरीबन पचास हजार अफ़राद को आला पैमाने पर तीन दिन खाना खिलाया जो पिलास्टिक के लिफाफों में बंद था।

इस जश्न में भारती हुकूमत के अलावा दीगर गैर मुस्लिम हिंदुओं ने भी दारुल उलूम देवबंद का तआवुन किया था मजीद बर्राँ कि हिंदुओं की मेजबानी देवबंदी उलामा फ़ख़र से कुबूल फ़रमाते और उनके घरों को जा कर कई कई दिन ठहेर कर मेहमानी का शर्फ़ अता फ़रमाते।

जश्न में इख़राजात तकरीबन डेढ़ करोड़ रुपये तक हुए थे जिसे भारतीय हुकूमत के तआवुन से पूरा किया गया मरकज़ी हुकूमत ने तीन लाख रुपये तज़ईन कारी में सर्फ़ किए जो गिरांट की सूरत में मुहय्या की गई थी दारुल उलूम ने साठ लाख रुपये तक जमा किए थे नई सड़कों की तामीर, बिजली की हाइ पावर लाइन गर्ज कि आसाइश का हर सूरत ख्याल रखा गया तौहीद परस्ती का राग अलाप ने वाले बतायें दारुल उलूम की मीलाद ख़्वानी में जो इख़राजात हुए ये बेजा असराफ़ और फुजूल खर्ची में दाख़िल है कि नहीं ?

नबी ए करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की मीलाद में जश्ने विलादते मुस्तफ़ा में बकौल अकाबेरीने देवबंद तज़ईन कारी शिर्क, इख़राजात फुजूल खर्ची और बेजा असराफ़ के जुमरे में है मगर जश्ने सद साला दारुल उलूम देवबंद के लिए जाइज़ और मुसतहसन अम्र है ये सिर्फ़ अपने सच्चे आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से अदावत व दुश्मनी की बुनियाद पर है।

कि मोहम्मद का जब योमे मीलाद आए صلی اللہ علیہ وسلم
तो बिद अत के फ़तवे उन्हें याद आयें।

आप बताइये जश्ने सद साला दारुल उलूम देवबंद के तअल्लुक से जो मदद ली गई आपकी शरीअत में उसकी इजाज़त है ? जबकि बुजुर्गों के इस्तिमदाद और उनसे मदद चाहने को अकाबिरीने देवबंद ने बिदअत और

हराम करार दिया है।

मगर इन्द्रा हुकूमत से इन जालिमों ने भारी रकम वसूल करली और पूरे का पूरा हड़प कर गए कल तक जो बुजुर्गों के तबरुकात खाने से दिल मुर्दा हो जाने की बात कर रहे थे आज वही लोग जश्ने सद साला दारुल उलूम देवबंद से वापसी पर अपने घरों के लिए तबरुकाते देवबंद लेकर जा रहे हैं खेलों का सामान, हॉकियाँ क्रिकेट गेंदों के अलावा सेब अंगूर गन्ने अनन्नास नारियल कपड़े जूते मोजे छतरियाँ अहलिया के लिए चूड़ियाँ वे शुमार तोहफे।

ये है किरदार वहाबिया देवबंदिया उनके मुफ्ती फतवा देते हैं कि बुजुर्गों के मजारात के तबरुकात मत खाना और ये हैं कि मानते नहीं और इन्द्रा गांधी और दीगर गैर मुस्लिम नेताओं के चरणों में होने वाले इजलास की वापसी पर किस्म किस्म के तहाइफ़ लेकर लौट रहे हैं क्या देवबंद के मुफ्तियों के फतवे की रू से ये बिदअत और शिर्क नहीं है ? मगर

नहीं कौल से फेल तेरा मुताबिक

इसी जश्न में तिलावत व तराने के बाद इस्टेज पर गैर मामूली हरकात व सकनात का जब एहसास होने लगा तो मालूम हुवा कि श्री मती इन्द्रा गांधी तशरीफ़ ला रही हैं तमाम अरब वुफूद और दीगर मेजबान देवबंदी उलमा दो रूया खड़े होकर आँजहानी इन्द्रा गांधी का इस्तक़बाल बड़े तषाक से करने लगे और इसी जश्न की कैफ़ियत बयान करते हुए सऊदी अख़बारात में इन्द्रा गांधी को सय्यदा के लक़ब से नवाज़ा गया। (मआज़अल्लाह)

क़याम व कुऊद की मजलिसों को बिदअत और हराम बताने वाले हजरात हालते क़याम में किसका इस्तक़बाल कर रहे थे एक नारी का इन्द्रा गांधी को सऊदिया के अख़बारात ने लफ़्जे सय्यदा लिखा किसी तौहीद परस्त ने एतराज़ नहीं किया मगर तशहहुद के बाद दुरुदे इबराहीमी अल्ला हुम्मा सल्ले अला सय्येदुना में लफ़्जे सय्येदुना पर एतराज़ वारिद करते हैं देवबंदी हजरात कहते हैं कि

लफ्जे सय्येदुना अहादीस की कुतुब में नहीं है लिहाजा इस लफ्ज का इजाज बिदअत है। राकिमुल हुरुफ से कई देवबंदियों ने इस सिलिसले में तमहीदी गुफ्तगू की और हर जाविये से सय्येदुना के खिलाफ अपनी जाहिलाना फिकर इस्तेमाल करते रहे मगर रोज नामा अखबार अल आलमुल इस्लामी 14 जमादियुल अव्वल 1400 हि0 में सऊदी हुकूमत ने इंद्रा गांधी को सय्यदा कह कर अहले ईमान के दिलों को मजरुह किया और किसी वहाबी देवबंदी की जुरअत देखने को ना मिली कि इस पर एतराज वारिद करते लेकिन हम अगर दोनों जहाँ के आका सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को सय्येदुना कहें तो बिदअत और कहने पर दलाइल तलब किए जायें ये उस गुरूप के लोगों के अहवाल व कवाइफ हैं जो हमा वक्त गैरुल्लाह की इस्तिमदाद व इआनत का इनकार करते रहते हैं और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कहने वाले सहीहुल अकीदा सुन्नी मुसलमानों को ख़ाम मख़्वाह मुशरिक व बिदअती करार देने में ज़रा सा भी झिजक महसूस नहीं करते लेकिन एक काफ़िरा मुशरिका की मदह सराई में मजनूना कैफ़ियत का इज़हार करते हुए सय्यदा तक कह देते हैं (अल अयाजु बिल्लाह)

सय्यदी सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि ।

शाख़ पर बैठके जड़ काटने की फिकर में है

कहीं नीचा न दिखाएँ तुझे शजरा तेरा ।

मुनाफ़िक्कों की निशान दही

हुजुरे अकरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम लश्करे इस्लाम में माले ग़नीमत तक़सीम फरमा रहे थे कि एक शख्स जिसका नाम हरकूस बिन ज़हीर (जुलखुयसरा) था कहने लगा या रसूलल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम आप ने अदल व इन्साफ से काम नहीं लिया । रहमते दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम जुलखुयसरा

की कड़वी गुफ्तगू सुनकर जबाने फैजे तरजुमान से इरशाद फ़रमाते हैं मैं अल्लाह का नबी हूँ अगर मैं इन्साफ न करूँगा तो कौन अदल करेगा?

अब निगाहे नबुव्वत की कुव्वते बसरी देखिये वह लोग जो कहते हैं कि हुजूरे अकरम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं (मआजअल्लाह) वह देखें कि ग़ैबदाँ रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निगाहे मुबारका कहाँ तक देख रही है।

सहाब ए किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम से इरशाद फ़रमाया कि यह अभी (जुलखुयसरा) जिन्दा रहेगा और इस की नस्ल से लोग निकलते रहेंगे बादहू जुलखुयसरा के नस्ल की निशानियाँ बयान फ़रमाते हैं उन निशानियों को बग़ौर पढ़िए और देखिये कि आपकी पेशीन गोईयाँ किस तरह हर्फ़ बा हर्फ़ पूरी हो रही हैं।

(1) यह लोग सरोँ पर बाल नहीं रखेंगे यानी सर मुंडवाते रहेंगे (अब तो मोँछें भी साफ़ करवा देते हैं)

(2) पाजामों और शल्वारों के पायेंचे टख़नों से बहुत ऊँचे रहेंगे (बाज़ वहाबी देवबंदी इतना ऊँचा पहेनते हैं कि बजाए पाजामा या शल्वार के चड्ढी मालूम होती है)

(3) नमाज़ें इस क़दर तवील पढ़ेंगे कि दूसरे लोग उन की नमाज़ों के मुक़ाबिल अपनी नमाज़े हकीर समझेंगे।

(4) ये लोग कुरआन उम्दगी से पढ़ेंगे, जबानों पर होगा मगर हल्क़ से नीचे नहीं उतरे गा।

(5) उनकी जबानें शकर की तरह मीठी होंगी मगर दिल भेड़ियों से ज्यादा सख़्त और बुरे होंगे।

(6) सूरत व शक़ल से बड़े पारसा नेक मालूम होंगे मगर दीन से इस तरह अलग और बेगाना होंगे जैसे तीर अपने शिकार से निकल जाता है।

(7) ये लोग खुद बुरे होंगे और बुराई ही फैलायेंगे।

मुंदरजा बाला निशानियाँ रहमते दो आलम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने चौदह सौ वर्ष पहले इरशाद फ़रमाया जो मिन व अन

पूरी हो रही हैं ऐहले सुन्नत व जमाअत से बर गश्ता हो कर जो भी तन्जीमें, फिरके वजूद में आए या आते हैं उन में इन निशानियों में से कोई न कोई निशानी जरूर होती है हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहो अन्हो बातिल अकाइद वालों ही के तअल्लुक से फरमाते हैं वह लोग जो काफिरों और मुशरिकों के बारे में नाजिल होने वाली आयतों को मुसलमानों पर चसपाँ करते हैं मखलूक़ाते इलाही में सब से ज्यादा बुरे हैं ।

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहो अन्हो के कौल के मुताबिक़ दौरे हाजिर में फिरक़ ए बातिला का पहचान ना ज्यादा आसान हो गया है आज जमाअते वहाबिया, देवबंदिया, तबलीग़िया, मौदूदिया, वगैरा और उन जैसी तन्जीमें गुमराह कुन, गुमराह गर अफ़राद के जरीए इस्लाम की रूह निकालने, जलवए जानाँ सल्लललाहो अलैहे वसल्लम से सच्ची मुहब्बत का चराग़ गुल करने में पेश पेश हैं अपने खुतबात और तकारीर में वही आयतें पढ़ते हैं जो बुतों या काफिरों या मुशरिकों के सिलसिले में नाजिल हुई हैं और ग़लत तावीलात पेश करके सुन्नी सहीहुल अकीदा मुसलमानों पर शिर्क व बिदअत के फ़तवे देकर मुशरिक और बिदअती की सनद अता कर देते हैं हालांकि उन्हें मालूम नहीं कि वह अपने अमले बद से बद तरीन ख़लाइक़ में शुमार किये जा रहे हैं ।

ईसाले सबाब के लिए
दीनी क़ादरसों में
इस्लामी हीरे (सुन्नी कोइज)
गुस्ताख़े क़लम, अनवारे कुरआनी
वदूफ़ कीजिये

गुमराह कुन किताबें

(1)	हिफजुल ईमान	(अशरफ अली थानवी)
(2)	फतावा रशीदिया	(रशीद अहमद गंगोही)
(3)	आबे हयात	(मो० कासिम नानोतवी)
(4)	तहजीरुन्नास	(मो० कासिम नानोतवी)
(5)	बराहीने कातेआ	(खलील अहमदअंबेठवी)
(6)	बहिश्ती जेवर	(अशरफ अली थानवी)
(7)	तकवियतुल ईमान	(इसमाईल देहलवी)
(8)	सिराते मुस्तकीम	(इसमाईल देहलवी)
(9)	किताबुत्तौहीद	(मो० बिन अब्दुल वहाबद नजदी)
(10)	तफसीर बेलुगतिल हिरान	(हुसैन अली वाँ बछरानी)
(11)	तसफियतुल अकाइद	(मो० कासिम नानोतवी)
(12)	रिसालतुल इमदाद	(अशरफ अली थानवी)
(13)	तजकिरतुल रशीद	(मोल्वी आशिक इलाही)मेरठी
(14)	मुख्तसर सीरते नबवीया	अब्दुल शकूर (काकोरवी)
(15)	तजकिरतुल खलील	(16) अशरफुस्सवानेह
(17)	अलइफाजातुल योमिया	(18)हसनूल अजीज

मुंदरजा बाला किताबें वही हैं जिसमें गैबदाँ रसूल और औलियाए उम्मत बुजुर्गानेदीन के तअल्लुक से बड़ी फय्याजी के साथ गुसताखियाँ की गई हैं और नादार व ना अहेल हजरात ने जबरदस्त गुसताखियाँ की हैं लिहाजा सहीहुल अकीदा मुसलमान हमेशा इन किताबों से अपनी बेजारी का अमल जारी रखें और जुमला मुसलमानों से इन किताबों की खामियों और गलतियों का तजकिरा करके बचने की तलकीन करें।

शरीअत में तबीअत

उलमा ए ऐहले हदीस जो अपने को हदीस पर मुकम्मल अमल पैरा होने का दावा करते हैं उनकी जामा तलाशी के लिए मुंदरजा जेल इकतेबासात पढ़िए।

(1) नजासते गलीजा के तअल्लुक से लिखते हैं पेशाब पाखाना से पानी नापाक न होगा जब तक पानी में तबदीली न आये।

(हवाला: मरफुलजावा स0, 10)

पखाना पेशाब जैसी नजासतें पानी को नापाक नहीं कर सकतीं किस बुनयाद पर कितनी मिकदार में, पानी किस कदर होगा मसला. तौजीह से बिल्कुल खाली है मुफ्ती ए ऐहले हदीस को अपना मौकुफ़ वाजेह कर देना चाहिये ताकि अवाम परेशानियों में मुबतेला न होते।

(2) बगैर जनाबत का गुस्ल किये नमाज़ दुरुस्त है। (बदरुलअब्बास 0, 38)

आदमी जुनबी है, नापाक है उस पर गुस्ल वाजिब है मगर आँ जनाब का फ़तवा है कि नमाज़ दुरुस्त है ऐसे मुफ़ितियों और उनके फ़तवों से अल्लाह महफूज़ रखे (आमीन) फ़िक़ह का मसला है कि जुनुबी आदमी हालते जनाबत में न नमाज़ पढ़ सकता है न ख़ानए काबा का तवाफ़ कर सकता है न कुरआने पाक छू सकता है मगर मुफ्ती साहिब के फ़तवे ने तबलीगी जमाअत के आसामियों के लिए आसानियाँ फ़राहम करदी हैं कि तबलीग़ के बहाने मस्जिदों को मुसाफ़िर ख़ाना समझ कर फ़ितना व फ़साद बरपा करते हैं और सुबह बगैर गुस्ल किए नमाज़ पढ़ लेते हैं।

(3) औरत हैज़ की हालत में कुरआन पढ़ सकती है (फ़तावासनाइया, स0 555)

तअज्जुब है मुफ्ती साहिब ने फ़तवे को हवाले से ख़ाली रखा है और वज़ाहत की ज़हमत नहीं की है अल्लाह तआला का इरशाद है: لايمسه الا المتطهرون कुरआन बगैर गुस्ल के न छुओ ऐसी सूरत में मुफ्ती साहिब पर क्या हुकुम लगाया जायेगा? ये सब ज़हनी इख़्तिरा

है ऐसे लोग दीन के दाई नहीं हक के निगेहबान नहीं बल्कि कुरआन व हदीस के साफ़ और शफ़ाफ़ औरक पर गर्द उड़ाने वाले बद अंदेश हैं सऊदी रियाल पेट्रोल और डालर की बुनियाद पर तबलीगी अंजुमनें बनाकर सैर व सयाहत करने वाले हज़रात ने जिस क़दर इस्लाम और उसके तअल्लुक से खिलवाड़ किया है वह ऐहले बसीरत की निगाहों से पोशीदा नहीं उनके दिलों में सियासी, माली इक़तेदार की ख़्वाहिश का अलाउ कल भी जल रहा था और आज भी आप अगर गहराई में उतर कर जाएज़ा लें तो बात समझ में आ जायेगी बुजुर्गाने दीन, सलफ़े सालिहीन ने किताब व सुन्नत के अहक़ामात की जो तशरीहात की हैं आज वहाबिया देवबंदिया और ऐहले हदीस के खुद साख़ता उलमा उन्हीं के खिलाफ़ आम्मतुल मुस्लिमीन के दरमियान बे ऐते मादी और दीनी बेहिसी व जाहिलाना रिवायात का खुद अपना सिक्का राइज करना चाहते हैं मगर उलमा ए हक़ ने फ़ितनए वहाबियत व नजदियत व कुफ़र व इलहाद की सतहे समंदर पर ऐसा बन्ध बांध दिया है जिससे ऐहले सुन्नत का शीराज़ा बिखरने से महफूज़ हो गया है और इन्तेहाई बेदारी के साथ इमामे इश्क़ व मोहब्बत सरकार आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह का पैग़ाम पूरी दुनिया को पहुँचा रहे हैं।

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

यानी आर्डर के अद्वो जवाज़ का फ़तवा

(1) सवाल: मनी आर्डर करना और महसूल मनी आर्डर का देना शरअन जाइज़ है या नहीं।

अलजवाब: बज़रीये मनी आर्डर रुपया भेजना ना दुरुस्त है और दाखिले रिबा है (यानी सूद) और ये जो महसूल दिया जाता है ना दुरुस्त है।

(हवाला:1 फ़तवा रशीदिया (1987 ई0)स0502)

(हवाला:2 फ़तवा रशीदिया (1363हि0,2)स0128)

(2) सवाल: मनी आर्डर और हुंडवी में कुछ फ़र्क है या दोनों का एक

हुक्म है ?

जवाब: मनी आर्डर और हुंडवी में कुछ फर्क नहीं दोनों का एक हुक्म है मनी आर्डर करना सूद में दाखिल है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदिया (1987 ई0)स0503)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदिया (1363 हि0)हि02,स0,127)

(3) रुपया मनी आर्डर में भेजना दुरुस्त नहीं है ख़्वाह इस में कुछ पैसे दिये जायें या न दिये जायें।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदिया (1987ई0)स0502)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदिया (1363 हि0)हि02स0127)

(4) बकौल थानवी मनी आर्डर करना हराम है वसूल करना हराम नहीं है।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जिल्द,3 हि01,कि012,स0150)

(5) थानवी जी कहते हैं मनी आर्डर की फीस सूद नहीं है बल्कि जो लिखना पढ़ना पड़ता है उसकी उजरत है उसके बाद थानवी ने कहा: **ثم نستغفر** यानी कि हम करते हैं फिर तोबा कर लेते हैं।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जिल्द3, हि03,कि014,स0142)

(6) इन्तिक़ाल के दिन भी थानवी ने मनी आर्डर वसूल किया और वसूली पर खुद दस्तख़त करने चाहे लेकिन लेटे होने की वजा से न कर सके।

(हवाला:खातिमतुस्सवानेह जि03, स0233)

(7) थानवी ने अपने ख़लीफ़ा ख़्वाजा अजीजुलहसन को सफ़र ख़र्च के लिये बीस रुपये का मनी आर्डर भेजा था।

(हवाला:अशरफुस्सवानेह जि03,स0233)

(8) थानवी ने कन्नोज से अपने घर थाना भवन एक सौ रुपये का मनी आर्डर भेजा एक रुपया फीस में ख़र्च हुआ।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जि04,हि02,कि011,स0303)

(9) थानवी ने एक तबीब को तिरेपन रुपया बज़रीआ मनी आर्डर भेजा।

(हवाला:अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद)जि03,कि018,मल0479,स022)

(10) एक मर्तबा तीन रुपये का मनी आर्डर थानवी के पास आया

थानवी ने मनी आर्डर इस लिए वापस कर दिया कि कूपन की इबारत साफ़ नहीं थी वह मनी आर्डर फिर वापस आया उस में कूपन की इबारत साफ़ थी कहा कि लौटा फेरी में फ़ायेदा हुआ तीन की जगा पाँच रुपये आए।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जि01, हि03, कि018, मल0395, स032)

(11) थानवी ने मनी आर्डर वसूल किया!

(हवाला: हसनूल अजीज़ जि01, हि03, कि018, मल0395, स030)

करवसी नोट के मुतअल्लिक फिरक ए देवबंदिया का मोकिफ़

(1) सवाल: नोट की ख़रीद व फ़रोख़्त कमी या ज़्यादती पर जाइज़ है या नहीं बित्तफ़सील इरक़ाम करें।

जवाब: नोट की ख़रीद व फ़रोख़्त बराबर कीमत पर भी दुरुस्त नहीं मगर इसमें जहाँ हवाला हो सकता है और बहीला अक़द हवाले के जाइज़ है मगर कम ज़्यादा पर बै करना रिबा और ना जाइज़ है।

(हवाला: 1 फ़तावा रशीदया (1987 ई0) स0, 490)

(हवाला: 2 फ़तावा रशीदया (1363 हि0) जि01, स047)

(2) थानवी ने कहा कि चाँदी ख़रीदने में मुशतरी अगर बाये को नोट दे तो जाइज़ नहीं इसलिए कि सुमन और बय का दस्त बदस्त होना शर्त है और नोट रुपये नहीं है बल्कि यूँ करना चाहिये कि पहले कहीं से या खुद बाये से नोट का रुपया ले ले और वह रुपया कीमत में दे दे।

(हवाला: 1 कमालाते अशरफ़िया (1995 ई0) बाब1, मल0611, स0146)

(3) बकौल थानवी अगर नोट से ज़कात दी तो अदा न होगी।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जि03, हि02, कि013, स0201)

(4) एक शख़्स ने सवाल किया कि किसी ने ज़कात में नोट दिया तो ज़कात अदा होगी या नहीं जवाब में थानवी ने कहा ये देखना चाहिये कि नोट की हकीक़त क्या है हकीक़त यह है कि नोट माल नहीं है इसलिए ज़कात अदा न होगी।

(हवाला: हसनूल अजीज जि03, हि02, कि013, स0204)

(5) बकौल थानवी अगर गिन्नी का तबादला रुपये से किया तो जाइज है और अगर नोट से किया तो जाइज नहीं क्योंकि नोट माल के हुक्म में नहीं।

(हवाला: हसनूल अजीज जि03, हि02, कि013, स0154)

(6) बकौल थानवी नोट से जकात अदा नहीं होती इसलिए गल्ला व दीगर अशया ए जरूरत से जकात अदा करें। एक नवाब साहिब ने ये मसला दरयाफ्त किया कि आज कल रुपया तो मिलता नहीं सिर्फ नोट मिलता है जिससे जकात अदा नहीं होती ऐसी सूरत में जकात किस तरह अदा की जाए हजरत अक़दस (थानवी) ने तहरीर फरमाया कि जकात गल्ला और दीगर जरूरत की अशया से भी अदा हो सकती है।

(हवाला: अलइफ़ाजातुल योमिया (देवबंद) जि04, मल0262, कि023, स0285)

मसाले दुफ़्ता का गुल्ल हुस्तेमाव

कुरआन व हदीस से मसाइले शरीअह का अख़्ज करना और उनके अहकाम को ब्यान करना बिऔनिल्लाहि तआला बगैर नामुम्किन है ख़ालिके अर्ज व समा जिस पर अपना फ़ज़ले ख़ास फ़रमाता है उसी को अहकामे शरीआ का आलिम बनाता है सरकार अबद करार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला जिससे भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में तफ़क्कुह अता फ़रमाता है रब तबारका व तआला अपने हबीब पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सद्के व तुफ़ैल में ऐसे खुशनसीब व सईद हज़रात को दारैन की बादशाही अता फ़रमाता है मुफ़ितयाने किराम के इल्म व फ़ज़ल और उनकी महारते ताम्मा पर उलमा ए हक़ का एतेराफ़ उनकी फुकाहत की दलील होती है।

सवालात का समझना, लब व लहजा सयाक़ व सबाक़ के साथ ही साइल का मुद्दुआ व मंशा और उसकी गहराई तक पहुँचना ये सब काम उसी आलिमे दीन का हो सकता है जो मुकम्मल दस्तरस रखता हो जुज़इयाते फ़िकह पर उनके इस्तिख़राज के तअल्लुक से

फिकही बसीरत दर कार होती है वरना मसाइल सही तौर पर अखज ही नहीं किए जा सकते हैं।

मोल्वी रशीद अहमद गंगोही और मुल्ला अशरफ अली थानवी ने मनी आर्डर और करंसी नोट के तअल्लुक से जो फत्वे पेश किए हैं उससे उनकी आलिमाना नहीं जाहिलाना फिकर की निशानदिही हो रही है न तर्ज इस्तिदलाल है न फकीहाना महारत और न कहीं सियासी व समाजी सूझ बूझ पेशे नज़र रखा है बल्कि हकीकत यह है कि उनके कौल व फेल में तजादात की भर मार है मनी आर्डर वसूल भी कर रहे हैं और भेज भी रहे हैं और नाजाइज़ बताते हुए सूद से तश्बीह दे रहे हैं नोटों की खरीद व फरोख्त के मुआमिले में अपनी इल्मी नादारी और ला इल्मी का इज़हार करते हुए सुमन बय और बाये व मुशतरी की सिहत पर हमला करके यकसर मुस्तरद कर दिए हैं न उन मुफ्तियाने किराम की नज़र मुसलमानों की मईशत पर गई न सनअत व हर्फत पर।

उलमा ए देवबंद के नज़रिये से इक्तेसादी मनसूबा बंदियों की तकमील के सारे दरवाजे मुकफ़ल हो गए जबकि इस्लाम में तिजारत को बड़ी फौकियत दी गई है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फरमाते हैं कि सच्ची और दयानत दारी से तिजारत करने वाला अंबिया सिद्दीकीन और शुहदा के साथ होगा तिजारत के फ़रोग के लिए बैंक अहेम किरदार अदा करते हैं क्योंकि सरमाये के बग़ैर तिजारत का तसव्वुर ही बेसूद है सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की फिकही बसीरत मुस्तक़बिल को झाँक रही थी और आपने कई साल पहले मुसलमानों की मआशी तिजारती नज़रियात को सामने रखते हुए सरमाया कारी के लिए चार निकाती फ़ारमूले पेश फ़रमाए थे।

अब रहा सूद तो शरा ने हराम क़तई फ़रमाया है मगर हुसूले नफ़ा के बहुत से तरीक़े हलाल फ़रमाये हैं। इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी ने अपनी मअरेकतुल आरा तसनीफ़ کتاب التمهيد للنظام في احکام فرائض الدواعي में मुफ़स्सल इरक़ाम फ़रमा दिया है मुंदरज़ा बाला रिसाला को पढ़ने

के बाद आला हज़रत की फुकाहत व जिहानत पर अकीदत की गरदन ख़म हो जाती हैं आपने साबित कर दिया है कि नोट कीमती माल है रसीद नहीं इस्लामी निज़ाम के निफ़ाज़ और इक़तेसादी निज़ाम व बैंकों को सूद जैसी लानत से पाक करने के लिए ये एक अज़ीम नेमत है मुस्लिम उलमा में इमाम अहमद रज़ा की तन्हा वह ज़ात है जिन्होंने पहली बार करन्सी नोट के जवाज़ का फ़तवा देकर आलमे इसलाम पर एहसान फ़रमाया है मुफ़ितयाने देवबंद अपने बुजुर्गों की फिकही नादारी पर मातम करें और उनके फ़तवों को कलअदम क़रार देकर इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ की बारगाह में कासा लैस होकर इल्म व फ़न की ख़ैरात माँगें और अपने बुजुर्गों की तहरीरात के ग़लत होने का ऐलान कर दें ताकि कौमे मुस्लिम धोका व फ़रेब की दल दल से निकल कर कुफ़र व शिर्क की हर जकड़ से आज़ाद हो जाए और मआशी तौर पर मज़बूत होकर सियासी और समाजी एतेबार से ताक़तवर हो जाए।

उलामाए देवबंद को खाने पीने की हिस्स दावत व हद्दये में बेजा फ़ख़्माइश

(1) मोल्वी कासिम नानोतवी को मर्जे मौत में ककड़ी खाने की तमन्ना हुई तमाम खेत छान डाले लखनऊ मोल्वी अब्दुल हई को इत्तेला हुई तो उन्होंने ने लखनऊ से ककड़ियाँ भेजीं।

(हवला 1: हिकायातुल औलिया हिकायत न0224, स0246)

(हवला 2: अरवाहे सलासा हिकायत न0224, स0226)

(हवला 3: अलइफ़ाज़ातुल योमिया (देवबंद) ज़ि03, कि013, मल0294, स0234)

(हवला 4: सवानेह कास्मी ज़ि01, स0591)

(2) बकौल थानवी हमारा मसलक ये है कि अंडा खाओ, मुर्गी खाओ मुरग़ग़न खाने खाओ और काम करो।

(हवाला हसनूल अजीज़ जिल्द 3 हिस्सा 3 किस्त 14, स071)

(3) नानो तवी को तआमे हराम से नफ़रत थी लेकिन दावत ब वज्हे दिलदारी हर एक की क़बूल करले ते थे दावत में जाकर खालेते थे फिर आकर कै कर ले ते थे।

(हवला 1: हिकायातुल औलिया हिकायत न0231, स0250)

(हवला 2: अरवाहे सलासा हिकायत न0231, स0231)

(हवला 3: सवानेह कास्मी जि01, स0365)

(4) थानवी कहते हैं कि दावत और हृदये में हलाल व हराम को ज़्यादा नहीं देखता क्योंकि मैं मुत्तकी नहीं बस जो फ़त्वा फ़िक़ही रु से जाइज़ हुवा उसे जाइज़ समझता हूँ लेकिन इस का बहुत ख़याल रखता हूँ कि दीन की इज़्जत में कमी न हो, धोका न हो, बोझ न हो, यानी गुंजाइश से ज़्यादा न हो न हालन न क़ालन यानी देते वक़्त मोहब्बत की वजह से गिरानी महसूस न हो फिर नानी याद आवे कि उफ़ोह दस देदिये।

(हवला 1: कमालाते अशरफिया(1995ई0)बाब2, मल0181,स0378)

(हवला 2: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3 कि018, मल0516 स0162)

(5) थानवी जी कहते हैं कि जिस दिन घर में अच्छी चीज़ पकी होती है उस दिन काम करने में खुशी रहती है कि फ़ारिग़ होकर अच्छी चीज़ खाने को मिलेगी नफ़्स के वास्ते कोई उभारने वाली चीज़ ज़रूर होनी चाहिए।

(हवला: 1हसनुल अज़ीज़ जिल्द 1, हिस्सा 1, मल0102,स0115)

(हवला: 2 अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द 2, स0118)

(6) अख़ीर उर्म में मोल्वी रशीद अहमद गंगोही के तमाम दाँत गिर चुके थे कुछ अहबाब ने मसनूई दाँत बनाने की दरख़्वास्त की उस पर गंगोही ने कहा अगर दाँत बन जायेंगे तो रोटियाँ चबानी पड़ेंगी अभी दाँत न होने की वजह से लोगों को रहेम आता है नर्म नर्म हलवा खाने को मिलता है।

(हवला: अलइफ़ाजातुल योमिया(देवबंद) जि01, कि03, मल0635, स0315)

(7) एक शख़्स ने मोल्वी अशरफ़ अली थानवी की और मोल्वी मोहम्मद उमर की एक साथ दावत की खाने में चावल थे थानवी को

पसंद न आए थान्वी ने कहा कि रोटी क्यों नहीं पकाई, कहा कि रोटी तो नहीं पकाई, थानवी ने कहा हम नहीं जानते जब दावत की है तो खिलाओ कहीं से भी खिलाओ उस ने कहा कि रोटी कहाँ से लाऊँ थान्वी ने कहा कि घर में नहीं तो मुहल्ले से माँग कर लाओ थान्वी की इस फ़रमाइश पर मोल्वी मोहम्मद उमर ने थान्वी से कहा कि भेजबान की दिल शिकनी होगी इस पर थानवी ने कहा हमारी जो शिकम शिकनी होगी ? वह शख़्स गया और मुसीबत का मारा दाल रोटी लाया थान्वी ने कहा मैंने ख़ूब पेट भर कर रोटी खाई।

(हवाला: 1 अलइफ़ाज़ातुलयोमिया (देवबंद) जिल्द 1 किस्त, 2 मल 0,515 स 0,255)

(हवाला: 2 हसनूल अजीज़ जिल्द 2 किस्त, 15 मल 0,333 स 0,125)

(8) थान्वी कहते हैं कि अपना फ़ायेदा इस में है कि सस्ता पीर बनूँ तो बहुत लोग दावत किया करेंगे आज यहाँ कल वहाँ रोज़ दावत हुवा करे तीन सो साठ दिन दावत ही में गुज़र जायें।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3 किस्त, 18 मल 0,456 स 0,83)

(9) थान्वी रास्ते में चलते हुए अमरूद खा रहे थे रास्ते में एक दोस्त मिला आधा खाया हुवा अमरूद थान्वी ने उसको दिया उसने लेकर खालिया।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 4 किस्त, 19 मल 0,579 स 0,28)

(10) दस्तर ख़ान के एक ताजिर ने थान्वी को दस्तर ख़ान का हदया दिया जो थान्वी ने ले लिया मगर हदया दे ने वाले को ये कहा कि इस्से बेहतर तो ये था कि इसको फ़रोख़्त करके इस की कीमत हदये में दे ते।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 4 किस्त, 19 मल 0,633 स 0,144)

(11) बकौल थान्वी देवबंद जमाअत का पेशवा हाफ़िज़ ज़ामिन थान्वी क़साईयों की दावत से बहुत खुश होता कि गोश्त अच्छा खाने को मिले गा।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 2 हिस्सा 1 मल 0,36 स 0,184)

(12) थान्वी कहते हैं कि लोग मुझको हदये में चीज़ें देते हैं इस के बजाये उसके दाम बेच कर दें कियोंकी हदये में भेजी हुई जीज़ को

मैं फ़ारोख़्त कर ता हूँ तो अच्छी कीमत नहीं उठती।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 2 हिस्सा 1 मल0,98 स0,222)

(13) एक शख्स ने थान्वी को लिखा कि मैं आपके लिये जूते का हदया भेज ना चाह ता हूँ जवाब में थान्वी ने लिखा जूता मत भेजो बादाम भेजो उसने बादाम भेज दिया थान्वी ने खाया।

(हवाला:1 हसनूल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 1 मल0,93 स0,98)

(हवाला:2 अशरफ़ुससवानेह जिल्द 2 स0,283)

(14) थान्वी ने मुहल्ले में ऐलान कर रखा था कि किसी के घर साग पका करे तो मेरे लिए भेज दिया करो।

(हवाला:1 हसनूल अजीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2किस्त,15 मल0,213 स0,63)

(हवाला:2 कमालाते अशरफ़िया (1995 ईस्वी)बाब 2 मल0 56 स0,330)

(15) थान्वी कहते हैं कि कढ़ाई की दाल बड़े मज़े की होती है जब किसी के यहाँ शादी में पकने की मुझे इत्तिला होती है तो मैं खुद मंगवा लेता हूँ।

(हवाला:1 हसनूल अजीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2,किस्त,15 मल0,213 स0,64)

(हवाला:2 कमालाते अशरफ़िया (1995 ईस्वी)बाब 2 मल0 56 स0,330)

(16) कस्बा थाना भवन के कसाईयों की मसजिद के इमाम मोल्वी अब्दुल रहीम गोश्त नहीं खाते थे उन को कोई कसाई गोश्त भेजता तो वापस कर दे ते थे, थान्वी ने मोल्वी अब्दुल रहीम से कहा कि अगर तुमहें कोई गोश्त दिया करे तो ले लिया करो वापस क्यों कर दे ते हो मुझे भेज दिया करो मैं खालिया करूँगा।

(हवाला:1 हसनूल अजीज़ जिल्द 2 हिस्सा 1, मल0,36 स0,185)

(17) थान्वी कहते हैं कि जब सामने खाना मौजूद हो और ख्वाहिश भी हो तो फिर हाथ रोकना बहुत दुशवार है ये बड़ा सख़्त मुजाहिदा है।

(हवाला:1 हसनूल अजीज़ जिल्द 2 हिस्सा 2,किस्त,15 मल0,410 स0,161)

(18) थान्वी कहते हैं कि ब निस्बत गाये के बकरी का गोश्त अच्छा मालूम होता है।

(हवाला:1 हसनूल अजीज़ जिल्द1 हिस्सा 2,मल0,221 स0,228)

(19) बकौल थानवी: मैं दरवाजे पर खड़ा होकर या रास्ते में चलते हुए खाने से परहेज नहीं करता, इस्लामी सल्तनत में मेरी शहादत मकबूल न होगी अदालत में जाने से बच जाऊँगा कोई गुनाह तो है नहीं।

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 2,किस्त,8 मल0,447 स0,233)

(20) एक शख्स ने थान्वी को गुड़ की दो भेलियाँ दीं थान्वी ने तेलीं और घर पर भेज दी लाने वाले ने कहा एक तुम्हारे लिए है एक तलबा के लिए थान्वी ने दोनों वापस कर दीं कहा कि अब न तालिबे इल्मों के लिए ली जायेगी न अपने लिए।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जिल्द 1 हिस्सा 3 किस्त,18 मल0,395 स0,32)

(21) थान्वी कहते हैं बावजूद इख्तिलाफे मस्लक लोगों से मैं ने बड़ी बड़ी रकमों ले लीं ऐसी वसूली को मैं जुरमाना समझता हूँ मुझे जुरमाना करना था कि वह जुरमाना अदा करें फिर उनसे कियों न लूँ।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जिल्द 1 हिस्सा 3 किस्त,18 मल0,516 स0,163)

(22) मोल्वी फख्र निजामी ने फरजी रोजे की हालत में बुढ़िया का दिया हुआ शर्बत पीलिया कहा कि दिल तोड़ ने से रोजा तोड़ ना आसान था मोल्वी फख्र निजामी के इस फेल का दिफा करते हुए थान्वी ने ब हवाला हाजी इमदादुल्लाह कहा कि फर्ज रोजा तोड़ना तो किसी की दिल शिकनी के खयाल से जाइज नहीं मगर मगलूबुल हाल थे उस वक्त उन पर कल्ब की हकीकत मुंकशिफ होगई और सोम (रोजह) की हकीकत मुंकशिफ नहीं थी।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जिल्द 1 हिस्सा 3 किस्त,18 मल0,429 स0,54)

(23) एक शख्स ने दस्तर खान पर सवाल जवाब शुरू किए थान्वी ने कहा कि ये जलसा उसका नहीं है कुव्वते फिकरिया दूसरी तरफ मुतवज्जह न करनी चाहिए नीज खाने का जल्सा बे तकल्लुफ होना चाहिए मेजबान को चाहिए कि नये आदमी को मेहमान की इजाजत ले कर साथ खाने बैठाये।

(हवाला:1 हसनूल अजीज जिल्द 2 हिस्सा 2 किस्त,13 स0,60)

(24) दावत के मुतअल्लिक थान्वी का उसूल कि मेजबान जिसको मेरे साथ खिलाना चाहता हो तो पहले मुझसे इजाजत ले क्योंकि जिस के साथ दिल खुला हुवा नहीं होता उसके साथ खाने में बे लुतफी हो जाती है लुत्फ नहीं आता है।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 2, किस्त, 13 स0, 123)

(25) सो कोई हदया भेजे और महसूल खुद न दे बल्कि थान्वी को देना पड़े तो थान्वी उसको वापस लौटा दे ते और कहते कि मेरा उसूल है कि जिस हदये में मेरा खर्च हो मैं नहीं लेता वह हदया किया जिसमें महसूल देना पड़े।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 3, किस्त, 14 स0, 12)

(26) सोते वक्त आधा सेर दूध पीने का थान्वी का रोज का मामूल था।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 4 हिस्सा 1, किस्त, 10 स0, 40)

(27) दावत कबूल करते वक्त थान्वी जी उमदा खाने की फरमाइश करते थे।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 4 हिस्सा 1, किस्त, 10 स0, 90)

(28) सफर में थान्वी से जुमा पढ़ने के मुतअल्लिक मशवेरा कहा कि जुमा पढ़ने चलेंगे क्योंकि आज सुबह खाना खा कर दिल खुश हुवा।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 4 हिस्सा 1, किस्त, 10 स0, 144)

(29) थान्वी काफिले से पहले बरहल गंज के लिए रवाना होजा ते हैं ताकि बरहल गंज वालों पर खाने का तकाजा हो।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 4 हिस्सा 1, किस्त, 10 स0, 108)

(30) आजादी के साथ खाने के लिए थान्वी ने कहा कि हमारे रुफका के सिवा यहाँ कोई मौजूद न हो चुनाँचे खाना आने के बाद दरवाजा बंद कर लिया गया।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 4 हिस्सा 1, किस्त, 10 स0, 197)

(31) एक दिन मोलवी कासिम नानोतवी छत्ता की मसजिद के इहाते में होले भुने खारहे थे दारुल उलूम देवबंद के मोहतमिम

नानोतवी के पास गए तो नानो तवी ने कहा आईये मौलाना खाईये मोल्वी रफी उद्दीन ने कहा कि हजरत मेरा तो रोजा है थोड़ी देर के बाद नानोतवी ने फिर कहा तो मेल्वी रफी उद्दीन फौरन बिला तअम्मुल खाने बैठ गए हालाँकी अस्र की नमाज हो चुकी थी और इफ्तार कावक्त भी करीब था।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत,373 स0,342)

(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत,373 स0,326)

(32) थान्वी कह ते हैं कि मैं घर जाकर हवा में खुशबू सूँघ कर बारहा बतला दिया करता हूँ कि आज क्या चीज पकी है।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 1 हिस्सा 3,किस्त,18 स0,26)

(33) थान्वी ने ब हवाला मोल्वी गुलाम गौस अली कहा कि ईमान की सलामती तो ये है कि दो नों वक्त रोटी मिल जाए और आकिबत बख़ैर ये है कि पाखाना खुल कर हो जाए।

(हवाला:1 फुयूजुल खलाइक(किस्त,8)मल0,82 स0,42)

(हवाला:2 अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 2किस्त,10 मल0,940 स0,526)

(34) अपने घर में खाने की चीजों के नाम बिबी से कहलवाने के बाद कोई चीज थान्वी ने पकाने को कहा फिर कहते हैं मैं ने फ़रमाइश नई की मैं ने इनतिखाब किया है।

(हवाला: अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 3किस्त,13 मल0,427 स0,303)

(35) थान्वी के उसताद ने अपने इनतिकालें के बाद खुवाब में अपने दामाद जो कानपुर में मुकीम थे कहा कि ये मुर्ग जो घर में फिर रहा है इसे ज़िबह कर के थान्वी को खिलादो, उनहों ने थान्वी से कहा थान्वी ने मुसकुराकर जवाब दिया कि मैं अब ज़रूर खाऊँगा ये तो मौलाना की तरफ़ से दावत है।

(हवाला:1 अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 3किस्त,14 मल0,616 स0,399)

(हवाला:2 अशरफुस्सवानेह जिल्द 1 स0,148)

(36) एक शख्स ने थान्वी को संतरे का हदया दिया जो थान्वी ने खाने केबाद कहा कि पेट में पत्थर अड़ गए फिर संतरे का हदया देने वाले के बारे में कहा कि पहले मुझसे पूछ लिया होता संतरे मेरे काम न आए दूसरों को तकसीम करना पड़ेगा और एहसान तो मुझपर

हुवा।

(हवाला: अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द 4किस्त,22 मल0,117 स0,136)

(37) थान्वी कहते हैं कि जो लोग पीठ के पीछे मुझे बुरा कहते हैं लेकिन जब सामने आते हैं तो 100, 100, रुपये दे जाते हैं ऐसों का हदया बहुत खुशी से ले लेता हूँ।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 4,किस्त,19 मल0,619 स0,108)

(38) सीप की कीमती तसबीह का तोहफ़ा चार दिन बाद एक दाना टूट गया, तसबीह वापस दे दी कहा इसके अवेज़ आपसे और चीज़ ले लूँगा।

(हवाला: अल इफ़ाज़ातुल योमिया(देवबंद)जिल्द3,किस्त,18 मल0276,स0,149)

(39) थानवी का कहना है कि हाजी इमदादुल्ला मुहाजिरे मक्की जब थाना भवन में तशरीफ़ रखते थे तो कुछ चने कुछ किशमिश मिली हुई रखते थे सुबह के वक़्त मौलाना शेख़ मोहम्मद साहिब और हाफ़िज़ मोहम्मद ज़ामिन साहिब और हज़रत हाजी जी साहिब साथ मिल कर खाते थे और आपस में ख़ूब छीना झपटी हुवा करती थी भागे भागे फिरते थे उस वक़्त मशाइख़ उस मसजिद को दुकाने मारिफ़त कहते थे और उन तीनों को अक़ताबे सलासा।

(हवाला: हिकायातुल अलिया हिकायत 178 स0,208)

(हवाला: अरवाहे सलासा हिकायत 178)

(40) मिठाई का हदया देने वाले को थान्वी ने कहा अगर आप मुझसे मश्वेरा करते तो मैं बताता कि किया चीज़ लाना चाहिए मिठाई मेरे काम की नहीं एहसान मुझ पर हुवा और खायें ऐरे ग़ैरे किया लुत्फ़ हुवा।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 3 हिस्सा 6,किस्त,13 स0,13)

(41) थान्वी खड़ाऊँ का मामूली हदया देने वाले को डाँटते हैं कि ये तो बच्चा को फुस्ताना हुवा क्या आप ने मुझको बच्चा समझ रखा है? आप मेरे साथ हँसी सी कर रहे हैं अगर कोई चीज़ भेजने को जी चाहे तो पहले दरयाफ़्त कर लो।

(हवाला: अशरफ़ुस्सवानेह जिल्द 2 स0,282)

(42) थानवी को जूते का हदया, जूता तंग है लिखा फिर दूसरा जोड़ा भेजा वह भी तंग थानवी ने लिखा कि बेहतर था पहले पैमाना मंगा लेते।

(हवाला: हसनूल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 1, किस्त, 12 स0, 35)

(43) वहाबी तबलीगी जमाअत के शैखुल इस्लाम और दारुल उलूम देवबंद के सदर मुदरिस मोल्वी हुसैन अहमद टाँडवी को इन्तिकाल के वक्त सरदह खाने की ख्वाहिश हुई देहली, सहारनपुर और मेरठ में सरदह की तलाश की न मिलने पर कराची और लाहोर से मंगवा कर खिलाया।

(हवाला: रोज नामा अलजमीअत (देहली) शैखुल इस्लाम न0 शुमारा

सनीचर मोरखा 15, फरवरी 1958 ई0 मुताबिक 25 रजब 1377 हिजरी स0 114)

(44) थानवी का कहना हदया का हक ये है कि जिस को हदया दिया जा रहा है उसको कोई बार न पड़े एक साहिब ने मुझको रेल से अमरुद भेजे उसमे मेरे आठ आने खर्च हुए मैंने लिख भेजा कि मेरे आठ आने खर्च हुए भेज दीजिये क्योंकि हदया मुअन्नस नहीं होती है उन्होंने ने भेज दिये।

(हवाला: सफर नामा लाहोर व लखनऊ मल0 31, स0 308)

(45) राँन्दीर वालों को थानवी ने कहा कि मुझसे आपके यहाँ का खाना नहीं खाया जाता आइंदा एक बावरची लाऊँगा जिसका खर्च आप लोगों को बरदाश्त करना होगा।

(हवाला: हसनूल अजीज जि0 2, हि0 3, किस्त 16, मल0 526, स0 4)

(46) थानवी ने कहा कि लोग मुझको जो हदया देते हैं उसी पर मेरी गुजर है।

(हवाला: हसनूल अजीज जि0 1, हि0 1, मल0 77, स0 81)

पेट के पुजारी बितारे वहाबी

हजरात, दावत व हदया के तअल्लुक से आपने इबारतें पढ़लीं यकीनन आप किसी नतीजे पर जरूर पहुँचे होंगे। मुंदरजा बाला इबारतें शिकम परवरी, पेटू होने की दलील हैं न तो सुन्नतों के

मुताबिक हदया व तोहफा वसूल करने का अमल है और न आदाबे दस्तरख्वान की खबर है, कुरआन के हलाल करदा को हलाल और हराम करदा को हराम समझने से भी कासिर और मुफलिसी का यह आलम की जिनदगी के शबो रोज का इनहिसार तहाइफ पर मबनी है।

सरकासरे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नतों को बगौर मुताला किये होते तो शायद ऐसा करने से बाज रहते। आदाबे जिंदगी से नावाकिफ हजरात का तरजे अमल खाने पीने का तरीका हदया व तहाइफ वसूल करने का निराला ढंग लम्बी लम्बी फरमाइशों कीमती तोहफों की निशानदही किया यही सुन्नत तरीका है?

इसके बावजूद बड़े तमतराक से तालीमात आम करने की तरगीब दी जा रही है अकाबरीने देवबंद की तालीमात कौलन व फेलन जो सादिर हुए हैं खुवाहिशाते नफ्स की तकमील के अलावा दूसरा किया है? क्या ऐसी ही तबलीग का हुक्म कुरआन व हदीस में आया है। मरजुलमौत में ककड़ी लखनऊ से जा रही है, मुरग़न गिजाएँ और मुर्ग खानों की तरबियत दी जा रही है। तआमे हराम से नफरत के बावजूद उम्दा खाना देखकर ऐसे हरीस की खाकर बाद में कै भी कर लेते हैं।

थानवी कहते हैं कि दावत व हदया में हलाल व हराम की जियादा तमीज़ नहीं करता हूँ जो भी आता है हड़प कर जाता हूँ अच्छी चीजों की फरमाइश की गरज से काफिले से पहले खाना हो जाते हैं उनहीं सुन्नतों को अमल में लाते हैं जिसमें ज्यादा फायेदा हो ताकि खाने पीने की ख्वाहिश मुकम्मल हो सके। कोई कसाइयों की दावत से सिर्फ इस गरज से खुश हो रहा है कि ज्यादा गोश्त खाने को मिलता है, साग की सब्जी की मरगूबियत का यह आलम कि पड़ोस में एलान था जिसके यहाँ साग की सब्जी पके वह हजरात जी के लिए पहुँचादे, बावजूद इख्तिलाफ मसलक मोटी मोटी रक़में

वसूल करके जुरमाना के नाम से याद किया जा रहा है, मोलवी रफी उद्दीन तो इफ्तार से कुछ वक़्फ़ा पहले खाने के चक्कर में रोज़ह तोड़ दिये हैं, थानवी साहिब खुशबू सूँघकर बावरची खाने के हालात बता देते थे कि क्या क्या तैयार हो रहा है। खड़े खड़े दरवाजों पर खाने पीने को भी अज रूए शरा अपने को आजाद बता रहे हैं यह है देवबंदियों के गुरु घंटालों की ज़िन्दगी का अमली नमूना। रब्बेक़दीर ने इरशाद फ़रमाया *من عمل صالحا من ذكر او انثى وهو مو من فلنحييه حية طيبة* (क़जुल इमान पा0 14 आयत 97) जो अच्छा काम करे मर्द हो या औरत और हो मुसलमान तो जरूर उसे हम अच्छी ज़िन्दगी जिलायेंगे।

इस आयते मुक़द्दसा में अच्छी ज़िन्दगी से मुतअल्लिक़ मुख़तलिफ़ अक़वाल हैं बाज़ के नज़दीक़ इबादात में लज़ज़त आना अच्छी ज़िन्दगी है बाज़ के नज़दीक़ क़नाअत, रज़ा बिलक़ज़ा अच्छी ज़िन्दगी है मोमिन ग़रीब भी हो तो आराम से है काफ़िर मालदार भी हो तक्लीफ़ में है इस्से दो मसअले मालूम होते हैं एक ये कि नेकियों का अच्छा नतीजा कभी दुन्या में मिलता है आख़िरत का बदला इसके अलावा है दूसरे ये कि ज़िन्दगी अल्लाह की आला नेमत है नेक आमाल के लिए ईमान की कैद है अब अगर कोई मुसलमान कुरआन शरीफ़ के हुक्म के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ार ना चाहे तो उस के लिए जरूरी है कि वह सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़िन्दगी को अपना शिआर बनाले क्योंकि आपकी ज़िन्दगी बनी नोअै इन्सानी के लिए बेहतरीन नमूना है।

खाने पीने के तअल्लुक़ से देखिये हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं सीधे हाथ से खाओ और सीधे हाथ से पिओ, सीधे हाथ से लो और सीधे हाथ से दो क्योंकि शैतान बायें हाथ से खाता है और उसी से पीता है और लेन देन भी उसी से करता है, सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बग़ैर छने आटे की मोटी मोटी रोटियाँ पसंद फ़रमा ते थे क्या मेरे आक़ाने कभी

खाने की फर्माइश की ? गरीब व अमीर शाह व गदा के तहाइफ और हृदयों को किस अन्दाज में कुबूल फरमाया सीरत की किताबका मुताला किजिए तो पता चले गा कि आकाए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किस सादगी के साथ जिन्दगी गुजारी और आपके पैरु कारों ने किस जज्बा व अखलाक के साथ आपकी सुन्नतों पर अमल किया है। किस कदर अखलाक सोज इबारतें किताबों में दर्ज कि गई हैं जिसे पढ़ने के बाद दिमाग फटने लगता है तखरीब व फसाद के लिए अपने मान्ने वालों के अंदर गजब का जज्बा पैदा किया है आज वहाबिया देवबंदिया अपने अकाबिरीन की तालीमात आम से आम करने के लिए वक्त, धन, दौलत, जिस्म व जान की बड़ी से बड़ी कुरबानियाँ पेश करने से भी दरेग नहीं करते फितना व शर जंगल की आग की तरह फैलाने में हद दरजा मुनहमिक हैं मुसल्मानों के सामने जो तबलीगी तरीका पेश किया जा रहा है जिस में सब से पहले तौहीद परस्ती और सुन्नतों पर अमल करने जैसे फारमूले शामिल होते हैं, खुफिया तौर पर दिल आजर जुमलों से फितना परवरी और तबीअत की शर पसंदी का अंदाजा लगाना मुशकिल नहीं है।

अफ़सोस सद अफ़सोस दुनिया भर के मुसलमानों में अपनी निजी तालीमात और तरजे अमल को नाफिज करने के लिए दौलत व सरवत का सहारा लेकर कितनी बारीकियों और खुफिया तदबीरों से वाहाबियत और देवबंदियत को आम किया जा रहा है अब जुरुरत इस बात की है कि उन की बे ढंगी और गलीज ज़बानें काट ली जायें ताकि बे ज़बान होकर शरारत से बाज आयें उन के नापाक मुँह में लगाम पहनाना चाहिये ताकि गुसताखियों के लिए खुल न सकें जी खोल कर उन की तज़लील और तकफीर की जाए ताकि फितनह को हवा न दे सकें जज़्ब ए ईमानी के साथ उनकी किताबों को पढ़िए और देखिए कितनी कारी ज़रबें इस्लाम व सुन्नत पर और जाते अंबिया पर लगाई गई हैं दबलीसी ज़हनियत का वह नंगा

मुजाहिरा किया है जिस पर खुदा की लानत, फरिशतों की लानत और तमाम इन्सानों की लानत है सुन्नतों के बयान करने में खुबासतों का सिलसिला ही चल पड़ा है हर लमहा, हर लैहजा और निगारशात में दज्जल व फरेब की ईमान सोज शकावतों का अमली मुजाहिरा है। अल्लाह तआला ऐसी तालीमात और ऐसे दज्जालों झूटों और के शर से अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्मत को महफूज रखे। आमीन।

अशरफ अली का नया कलमा

एक शख्स ने थानवी को खत लिखा और उस खत में यह लिखा कि आप से बैअत होने का मुझको ख्याल हुआ इसकी एक वजह एक ख्वाब भी है जो हस्बे ज़ेल है।

एक दफ़ा रामपुर रियासत में जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ तो वहाँ एक मस्जिद में एक मोल्वी साहिब जो तालिबे इल्म थे उनके पास ठहेरने का इत्तिफ़ाक़ हो गया और यह भी मालूम हुआ कि मोल्वी साहिब हुजूर (थानवी) से बैअत हैं इसलिए उनसे और भी मुहब्बत हो गई असना ए गुफ़्तगू में मालूम हुआ कि उनके पास थाना भवन से दो रिसाला अल इम्दाद और हसनुल अजीज़ भी माहवारी आते हैं बंदे ने उनके देखने के वास्ते दर ख्वास्त की तो उन मोल्वी साहिब तालिबे इल्म ने चंद रिसाले मुझको देखने के वास्ते दिये अलहमदु लिल्लाह जो लुत्फ़ उनसे उठाया बयान से बाहर है। एक रोज़ का ज़िक्र है हसनुल अजीज़ देख रहा था और दो पहर का वक्त था कि नींद ने ग़ल्बा किया और सो जाने का इरादा किया रिसाला हसनुल अजीज़ को एक तरफ़ रख दिया लेकिन जब बंदे ने दूसरी तरफ़ करवट बदली तो दिल में ख्याल आया कि किताब को पुश्त हो गई इसलिए रिसाला हसनुल अजीज़ को उठाकर अपने सर की जानिब रख लिया और सो गया कुछ अरसे के बाद ख्वाब देखता हूँ। कि कलेमा शरीफ़ "लाइलाहा इल्ललाह मोहम्मदुररसुल्लाह पढ़ता हूँ। लेकिन मोहम्मदुर रसूलअल्ललाह की जगह हुजूर (थानवी) का नाम लिया

हूँ। इतने में दिल के अंदर ख्याल पैदा हुआ कि मुझसे गलती हुई कलेमा शरीफ के पढ़ने में इस को सही पढ़ना चाहिए इस ख्याल से दोबारा कलेमा पढ़ता हूँ दिल पर तोबा है कि सही पढ़ा जाए लेकिन ज़बान से बे साख़्ता बजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नाम पर अशरफ़ अली निकल जाता है हालाँकि मुझको इस बात का इल्म है कि इस तरह दुरुस्त नहीं लेकिन बे इख़तियार ज़बान से यही निकलता है दो तीन बार जब यही सूरत हुई तो हुजूर (थानवी) को अपने सामने देखता हूँ और भी चंद शख्स हुजूर के पास थे लेकिन इतने में मेरी यह हालत हो गई कि मैं खड़ा खड़ा बवजा इसके की रिक्कत तारी हो गई ज़मीन पर गिर गया और निहायत जोर के साथ एक चीख मारी और मुझको मालूम होता था कि मेरे अन्दर कोई ताक़त बाकी नहीं रही इतने में बन्दा ख़्वाब से बेदार हो गया लेकिन बदन में बदस्तूर बे हिसी थी और वह असर न ताक़ती बवस्तूर था लेकिन हालते ख़्वाब और बेदारी में हुजूर (थानवी) का ही ख्याल था, लेकिन हालते बेदारी में कलेमा शरीफ की गलती का जब ख्याल आया तो इस बात का इरादा हुआ कि इस ख्याल को दिल से दूर किया जाए इस वास्ते कि फिर कोई ऐसी गलती न हो जाए बंदे ख्याल बंदा बैठ गया और फिर दूसरी करवट लेट कर कलेमा शरीफ के गलती के तदारुक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दुरुद शरीफ पढ़ता हूँ लेकिन फिर भी यह कहता हूँ अल्ला हुम्मा सल्ले अला सय्ये दिना व नबिइयेना व मौलाना अशरफ़ अली, हालाँकि अब बेदार हूँ ख़्वाब नहीं लेकिन बे इख़तियार हूँ मजबूर हूँ ज़बान अपने काबू में नहीं उस रोज़ ऐसा ही कुछ ख्याल रहा तो दूसरे रोज़ बेदारी में रिक्कत रही ख़ूब रोया और भी बहुत सी वजूहात हैं जो हुजूर के साथ बाइसे मुहब्बत हैं कहाँ तक अर्ज करूँ।

इस ख़्वाब के जवाब में थानवी ने लिखा कि इस वाक़ेआ में तसल्ली थी कि जिस की तरफ़ तुम रुजू करते हो वह बेऔनिही तआला मुत्तबे सुन्नत है। (24 / शव्वाल 1335 हिजरी)

(हवाला: रिसालतुल इमदाद माहे सफर 1336 हि० जि० 03, स० 34)

(2) थानवी का एतिराफ कि रिसाला अलइमदाद वाला ख्वाब का किस्सा ख्वाब तक सवाब समझता हूँ मैं मोतरिजीन पर न तो ऐतराज करता हूँ और न मुजाहेमत

(हवाला: हसनूल अजीज जि० 03, हि० 01, किस्त 12, स० 24)

(3) रिसाला अलइमदाद के ख्वाब के किस्से के मुतअल्लिक थानवी के हमख्याल लोगों ने थानवी को लिखा कि आप यह छपवा दो कि यह शैतानी वसवसा है क्योंकि हमको लोग परेशान करते हैं जवाब में थानवी ने लिखा कि तुम शायी करदो मुझको क्यों मजबूर करते हो। (हवाला: हसनूल अजीज जि० 03, हि० 01, किस्त 12, स० 31)

(4) रिसाला अलइमदाद के ख्वाब वाले किस्से के जिम्न में थानवी कहते हैं कि बाज ने लिखा कि ख्वाब देखने वाले को लिख दो कि तजदीदे निकाह करो मैंने लिखा कि ऐसा तो मैं नहीं कर सकता ख्वाब देखने वाला माजूर था।

(हवाला: हसनूल अजीज जि० 03, हि० 01, कि० 12, स० 31)

(5) थानवी को बाज लोगों ने यहाँ तक लिखा कि बैठे बैठ जो जी चाहे लिख देते हो हम मुसीबत में पड़ जाते हैं पीछा छुड़ाना दुशवार हो जाता है। (हवाला: हसनूल अजीज जि० 03, हि० 01, कि० 12, स० 29)

(6) रिसाला अलइमदाद के ख्वाब के किस्से के बाद थानवी का कहना कि मोतरिजीन ने वह वह एतिराजात किये कि तबीअत बंध गई दिल बुझ गया शुबह हो गया कि मुझ में अहलियत नहीं।

(हवाला: हसनूल अजीज जि० 03, हि० 01, किस्त 12, स० 23)

शुतरे बे मुहार

अशरफ अली थानवी के नए कलेमे से रसूल दुशमनी की एक लरजा खेज कहानी सामने आती है जाहिल मोल्वी ने गुमराह करने के लिए जिहालत का दूसरा दरवाजा खोला था आँखों के अंधे जर के बंदे पेट के पुजारी जनाब थानवी को चाहिए था कि खुद हलाकत से बचते और उनका कलेमा पढ़ने वाले शख्स को अजाबे इलाही से

बचाते लेकिन जब उन्हीं के मुत्तिबईन ने गुज़ारिश की कि आप ये छपवा दें कि ये शैतानी वसवसा है तो थानवी जी टाल देते हैं ख़्वाब में अशरफ़ अली का कलेमा पढ़ने वाले शख्स के बारे में जब थानवी से बाज़ हज़रात ने कहा आप उसको लिख दीजिए कि तोबा करे तो आँजनाब उसे माजूर करार देकर बरी फ़रमा रहे हैं ।

मज़हबे अहले सुन्नत के खिलाफ़ लाफ़ ज़नी और ज़हेर उगलने वाले हज़रात अशरफ़ अली के कलेमे को क्या रंग देते हैं और उसके खिलाफ़ आज तक क्या एकशन लिए हैं ? होना तो ये चाहिये था कि जब जब मोल्वी अशरफ़ अली थानवी की किताबें पढ़ी जातीं या उनके मुतअल्लिक़ बयानात होते तो कौम को इस कलेमे के ज़िम्न में आगाह किया जाता, मोहल्ले मोहल्ले घर घर भाई भाई के दरमियान मुनाफ़ेरत की आग जलाने वाले क्या अशरफ़ अली थानवी के कलेमे की तपिश से महफूज़ रह सकते हैं ? अपने कलेमे के तअल्लुक़ से जो मोल्वी अशरफ़ अली थानवी ने तावीलात पेश की हैं वह अपने इल्मी और फ़न्नी फुकाहत से नहीं बल्कि फ़न्नी नकाहत की वजह से जिसका ऐतराफ़ उनके हम अक़ीदा उलमा ने भी किया है । मज़हबी इख़तेलाफ़ के जज़्बे से बाहर निकल कर दयानत दारी से फ़ैसला करते हुए उलमा ए देवबंद को चाहिए था कि अशरफ़ अली थानवी की सख़्त गिरिफ़्त करते और उनके तिलसमे फ़रेब को तोड़ कर अच्छी तरह बेनकाब कर देते ताकि ऐहले इल्म व बसीरत को दोबारा उस जानिब तवज्जो करने की ज़रूरत न महसूस होती और वह खुद ही अवाम व ख़्वास की नज़रों से गिर जाते, मिरज़ा गुलाम अहमद कादयानी अपना कलेमा पढ़वा कर नबुव्वत का झूटा दावेदार बना और आज भी उसके मुत्तबेईन और मुरीदीन उसे नबी तसलीम कर रहे हैं और मिरज़ाई गुलाम अहमद कादयानी की नबुव्वत का ढँडोरा पीट रहे हैं बताना सिर्फ़ मक़सूद ये है कि अपने नए कलेमे की तिलावत पर इनतेहाई ख़ामोशी क्या माना रखती है क्या एक नये मज़हब की दाग़ बेल डालने की मतरादिफ़ नहीं है ? क्या शरीअते

मोहम्मदिया में इस की इजाजत है कि अपना कलेमा पढ़वाया जाए सच तो ये था कि सही निशाने कदम पर चल कर ऐसी गंदी हरकतों से इज्तिनाब बरतते हुए तोबा नामा शायी करते जिस कलेमे की बुनयाद पर इश्क का दावा है उस कलेमे की खुली तौहीन की गई जमाअते ऐहले सुन्नत के अफराद मजारात पर हिजरी दें आसार व तबरुकाते अंबिया से इस्तिफादा करें निशाने कदम का एहतिराम करें तो बिदअती हैं और अशरफ अली थानवी अपना कलेमा पढ़वायें तो हकीमुल उम्मत हैं ऐसे मुजरिम की सजा क्या होनी चाहिए ? मुजरिमाना जहनियत के हामिल अफराद खुद फैसला करें कि ऐसे लोग हकीमुल उम्मत हैं कि लईनुल उम्मत ? हम तो सिर्फ इतना अर्ज करेंगे कि थानवी ने जिस गुनाहगार ज़बान और कलम की तलवार कौमे मुस्लिम को ज़िबह करने के लिए इस्तेमाल किए थे उनके बिहीख्वाह इतनी महेरबानी जरूर करें कि गरीब मुसलमान और इस्लाम को उस नापाक मसले की तालीम को खिदमते दीन से ताबीर न करें और अभी सवेरा है तोबा करके दीने इस्लाम में मुकम्मल तौर पर दाखिल हो जायें और महबूबे रब्बुल आलमीन की बारगाह में अपनी ख़ताओं का एतिराफ़ इमाम अहमद रज़ा फ़ाजिले बरेलवी की ज़बान में करें कि

मैं मुजरिम हूँ आका मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जाबजा थाने वाले।

ईदैन का मुत्साफ़ह और मुआनेका

(1) सवाल: ईदैन में मुआनेका करना बग़ल गीर होना कैसा है ?

जवाब: ईदैन में मुआनेका करना बिदअत है।

(हवाला: 1 फ़तावा रशीदिया (जदीद) स0, 148)

(हवाला: 1 फ़तावा रशीदिया (कदीम) जिल्द 2 स0, 154)

(2) सवाल: मुआनेका करना बिलखुसूस ईदैन के रोज़ किस दरजे का गुनाह है, मकरूह है, या हराम ?

जवाब: मुआनेका व मुसाफ़ह व वजहे तख़सीस के कि उस रोज़

में उसको मौजिबे सुरूर और बाइसे मुवददत और अनाम से ज़ियादा मिस्ल ज़रूरी के जानते हैं, बिदअत है और मकरूहे तहरीमी और अलल इतलाक़ हर रोज़ मुसाफ़ह करना सुन्नत है ऐसा ही शराइत खुद यौमुल ईद के है और अला हाज़ा मुआनेका जैसा शराइत खुद दीगर अय्याम में है वैसाही यौमे ईद के है कोई तख़सीस अपनी राये से करना बिदअते ज़लाला है।

(हवाला: 1 फ़तावा रशीदिया (जदीद) स0, 148)

(हवाला: 2 फ़तावा रशीदिया (कदीम) जिल्द 2 स0, 83)

(3) बकौल गंगोही, ईद के दिन मुसाफ़ह और मुआनेका करना बिदअत और मकरूहे तहरीमा व हराम है।

(हवाला: तज्केरतुल रशीद जिल्द 1 स0, 181)

(4) बकौल मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ईद का मुसाफ़ह बिदअत है और मुआनेका और भी क़बीह है।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 1 किस्त 12 स0, 133)

(5) बकौल थान्वी मुसाफ़ह बाद ईदैन या बाद नमाज़े पंजगाना मकरूह व बिदअत है।

(हवाला: इमदादुल फ़तावा (देवबंद) जिल्द 1 स0, 708)

(6) मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ने कहा कि मुसाफ़ह मैं इबतेदाअन तो नहीं करता लेकिन दूसरे की दरख्वास्त पर कर भी लेता हूँ मौलाना गंगोही नहीं करते थे क्योंकि बिदअत है मैं मग़लूब हो जाता हूँ। (हवाला: कलिमतुल हक़ (थाना भवन) किस्त, 8 मल 0, 175 स0, 84)

सुन्नत को बिदअत “अकाबेरीने देवबंद”

मुदरजा बाला इबारतों में एक ऐसी सुन्नत से इन्हिराफ़ है जिस में इखुव्वत, मोहब्बत भाई चारगी की अलामत व निशान है और मोमिन का तुर्र ए इमतियाज़ है सरवरे दो जहाँ सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का कलिमा पढ़ने वाले नाम निहाद मुसलमान ग़ैर मुक़ल्लिदीन वहाबिया जहाँ खुदा और रसूल की शान में तौहीन व तनकीस करते हैं वहीं इस्लामी निशानियों को मिटाने में भी एड़ी चोटी का जोर सर्फ़ कर रहे हैं।

सलाम करना और उसके बाद मुसाफ़ह करना इस्लामी मुआशिरा की ऐसी अलामत है जो तहजीबी, मजहबी, सकाफ़ती पैगामात पर महमूल है मुसाफ़ह करने से सुन्नते रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर अमल होने के साथ ही बाहम उलफ़त व मोहब्बत का इज़हार व उन्स होता है और दिलों से कुदूरत और कीना ख़त्म हो जाते हैं कुरआन मजीद में सलाम के तअल्लुक से अल्लाह ने इरशाद फ़रमाया: "فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةٌ طَيِّبَةٌ"

फिर जब किसी के घर जाओ तो अपनों को सलाम करो मिलते वक़्त अच्छी दुआ अल्लाह के पास से मुबारक पाकीजा।
(कंजुल ईमान पारा 18 अन्नूर आयत 61)

घर में दाख़िल होते वक़्त घर वालों को सलाम करो अगर मकान ख़ाली हो तो यूँ कहो अस्सलामो अलन्नबी व रहमतुल्लाहे व बराकातु हू। मुल्ला अली क़ारी ने शरहे शिफ़ा में फ़रमाया कि मुसलमानों के ख़ाली घरों में हुजूर की रूह जलवा गर होती है इस लिए वहाँ हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सलाम किया जाता है।

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि सलाम फैलाओ मगर आक़ेबत ना अनदेश, इख़तेलाफ़ व इनतेशार फैलाते हैं कज फहमी व हदीस से ना वाकिफ़ियत की बुनयाद पर सलाम व मुसाफ़ह, मुआनेका में कौम को उलझा रहे हैं खुद राहे हिदायत पर नहीं और दूसरों को इस राह से अलग करने में लगे हैं।

बुख़ारी शरीफ़ जि0,2, स0,926 की हदीस है। हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रजियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मेरे हाथ को अपने दोनों हाथों में लेकर मुझे अत्तहिय्यात की तालीम दी।

अब बताइए मुसाफ़ह करना सुन्नत और हदीस से साबित रहा ईदैन में मुसाफ़ह व मुआनेका का मुआमेला तो बिद अत में किस नौईयत से दाख़िल हैं और उनसे तौहीदे इस्लाम पर कैसी ज़र्ब पड़ती है यह अक्ल के दुशमनों को साबित करना चाहिए अगर मुसाफ़ह

व मुआनेका बकौल थान्वी और गंगोही थोड़ी देर के लिए बिदअदत तसलीम कर लिया जाए तो आपस में अदावत व नफरत की ऐसी खलीज पैदा होजाएगी जिसका उबूर करना दुशवार होगा और उम्मत मुस्लिमा शायद एक साथ कभी जमा न हो सकें बिला शक व शुबह इफतेराक व इनशेकाक के फन के ईजाद का सेहरा अशरफ अली थान्वी और गंगोही के सर है और ये उनका काबिले तौसीफ हुनर है यही वह हुनर और फन्नी महारत है जिसने उन्हें उस गिरोह का मजहबी पेशवा बनादिया है : लिहाज्ज मुसलमानों को चाहिए कि उनसे हमेशा होशयार रहें उन की तबलीग न इस्लामी है और न उन की किताबें काबिले मुताला हैं बस यूँ समझो।

हलका बना बना कर ईमान लूटने को
वह देखो जा रहे हैं इब्लीस के सिपाही (नाजों फैजी गयावी)

मोहर्रम की अखील हिन्दू की पियाऊ वगैरा

(1) मोहर्रम में आशूरा वगैरा के रोज़ शहादत का बयान करना मआ अशआर ब रिवायते सहीहा या बाज जईफा भी नीज सबील लगाना और चंदा देना और शरबत व दूध बच्चों को पिलाना दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब: मोहर्रम में जिकरे शहादते हुसैन अलैहिस्सलाम करना अगरचे ब रिवायते सहीहा हो या सबील लगाना, शरबत पिलाना और शरबत में देना या दूध पिलाना सब ना दुरुस्त है और तशब्बो रवाफिज की वजह से हराम हैं।

(हवाला:1 फतावा रशीदया (जदीद) स0,139)

(हवाला:2 फतावा रशीदया (कदीम)जिल्द 3 स0,113)

(2) हिन्दू जो पियाऊ पानी की लगाते हैं सूदी रुपया सर्फ कर के मुसलमानों को उसका पानी पीना दुरुस्त है या नहीं?

जवाब: उस पियाऊ से पानी पीना मुजायेका नहीं।

(हवाला:1 फतावा रशीदया (जदीद) स0,576)

(हवाला:2 फतावा रशीदया (कदीम)जिल्द 3 स0 114)

(3) मोल्वी अशरफ अली थान्वी ने कहा कि अगर गियारहवी की

मिठाई आए तो लेकर कहीं दफन करदे और रद्द करने में अवाम के अंदर इश्तेआल का अंदेशा है।

(हवाला:1 कमालाते अशरफिया (1995इस्वी)बाब 1 स0,152 मल0,628)

(हवाला:2 हसनूल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 1 किस्त 12 स0,155)

(4) हिन्दू तिवाहार होली या दीवाली में अपने उसताद या हाकिम या नौकर को खीलें या पूरी या और कुछ खाना बतौर तोहफा भेजते हैं और उन चीजों का लेना और खाना उसताद हाकिम व नौकर मुसलमान को दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब: दुरुस्त है।

(हवाला:1 फतावा रशीदया (जदीद) स0,123)

(हवाला:2 फतावा रशीदया (कदीम)जिल्द 2 स0,123)

यजीद के मुतअल्लिक उमदा ख्याल

(1) मोल्वी रशीद अहमद गंगोही से सवाल कि यजीद आप की राय में काफिर है या फासिक ?

जवाब में गंगोही ने कहा कि किसी मुसलमान को काफिर कहना मुनासिब नहीं यजीद मोमिन था कत्ल के सबब फासिक हुआ।

(हवाला:1 फतावा रशीदया (1987ई0) स0,50)

(हवाला:2 फतावा रशीदया (1363हिजरी)जिल्द 1, स0,2)

(2) एक शख्स ने थानवी से पूछा कि यजीद पे लानत करना कैसा है जवाब में थानवी ने कहा कि उस को जाइज है जिस को यकीन हो कि यजीद से बेहतर हो कर मरूंगा। अर्ज किया कि यह मरने से पहले मालूम हो सकता है ? इस पर थानवी ने कहा तो बस मरने के बाद जाइज होगा।

(हवाला:हसनूल अजीज जिल्द 3,हिस्सा 1 किस्त 12 स0,137)

(हवाला:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जिलद 4,किस्त20मल0845 स0,456)

(3) एक शख्स ने थानवी से पूछा कि यजीद पे लानत करना कैसा है जवाब में थानवी ने कहा यह सवाल फुजूल है क्या खबर कि किसके साथ क्या मामिला हो।

(हवाला1:अलइफाजातुल योमिया (देवबंद)जिलद4,किस्त24,मल0291, स0,344)

(4) यजीद पे लानत करना कैसा है?पूछने वाले को थानवी का

कहना कि उस को जाइज है जिस को यकीन हो कि मैं यजीद से बदतर हो कर न मरूँगा वरना यजीद कहेगा कि क्या मुँह लेकर मुझ पर लानत की थी और कहना खातिमा किस हाल का पता नहीं।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जिलद 4, किस्त 22, मल 0181, स 0, 216)
(हवाला: गुआरिफे याकूबी स 0 69)

(5) बकौल थानवी एक साहिब ने मुझसे सवाल क्या कि यजीद पर लानत करना कैसा है ? मैंने कहा कि उस शख्स को जाइज है जिस को यह खबर और यकीन हो कि यजीद से अच्छी हालत में मरूँगा अगर कहीं उस से खराब हालत में कब्र में गये तो वह कहेगा कि मुझ को तो ऐसा ऐसा कहते थे अब तुम देखो किस हालत में हो कहने लगे तो यह कब मालूम होगा मैंने कहा मरने के बाद, कहने लगे तो कब्र में लानत किया करें मैंने कहा कि हाँ वहाँ कोई काम तो होगा नहीं बैठे हुए लानतुल्लाहि अलल यजीद पढ़ा करना यहाँ तो काम की बातों में लगे।

(हवाला: अलइफाजातुल योमिया (देवबंद) जिलद 2, किस्त 10, मल 0948, स 0, 533)

बिही खुवाहाते यजीदिइयत

किस निशाते तबा के साथ अपनी फिरऔ नियत और मोहब्बते एहलेबैत से बेजारी और यजीद की हिमायत की गई है जिसको पढ़ने के बाद इजहार की ज़रूरत नहीं है, जमाअतों और तहरीकों की मुखालिफ़त और मुदाफ़िअत के फ़ैस्ले का इन्हेराफ़ और इनहेसार उनके अंगराज व मकासिद से हुवा करते हैं वरना मक़सद ही फ़ौत हो जाते रशीद अहमद गंगोही एक तरफ़ दीवाली की पूरी कचौड़ी और तब्ररुकात हदय ए कुफ़ार व मुशारेकीन जाइज और दुरुस्त बतारहे हैं और दूसरे रुख़ पर अशरफ़ अली थानवी और खुद गंगोही मोहरम की सबीलें और नियाज व शरबत को बिदअत करार दे रहे हैं और ऐसी मजालिस में जहाँ जिकरे इमामे हुसैन रजियल्लाहो अन्हो होजाना भी नाजाइज व बिदअत है यजीद और यजीदियों के हिमाइतियों को सोचना चाहिए मैदाने करबो बला में साबित

कदमी से नाना जान की शरीअत को दागदार होने से बचाने वाले नौजवनाने जन्नत के सरदारों के तअल्लुक से कमीनगी व खुबासत का इजहार क्या माना रखता है दीवाली और उस जैसे तिवहारों के मौका पर हिन्दुओं के पक्वान से जौके तबा की तकमील करने वाले गौर करें किस कर्ब व मसाइब की वादियों से मजलूमाने करबला को गुजरना पड़ा था सय्यदह के लाल ने अजमते इस्लाम के लिए हर पेश कश को ठुकरादिया इस्लाम की पासबानी के लिए हालात की परवा किए बगैर वादि ए नैनवा में उतरजा ते हैं, पानी बंद किया गया भूका रखा गया यजीदी रोजाना एक न एक मुजाहिद को बेदरदी से जिबह करते रहे और रंज व गम में इजाफा करते रहे मगर पाये इस्तक़लाल को ज़रा भी लगज़िश न आई यजीदियों ने अपनी दरिन्दगी इस दरजे तक पहुँचा रखी थी कि लाशों पे घोड़े तक दौड़ा त ह ।

आज उनके नाम की सबीलों और शरबतों पर बिदअत के फ़तवे और जफ़ाकारों को फ़ासिक व फ़ाजिर कहने से भी कफ़फ़े लिसान दुनिया को आज भी इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हो जैसा साबिर व शाकिर की ज़रूरत है ताकि ईमान व ईक़ान की तलवारें बातिल परस्तों के सामने कुंद न होसकें इस्लाम का हक्क़ानी पैग़ाम जो करबो बला के रेग ज़ारों में चमनिस्ताने ज़हरा के शहज़ादे ने पेश क्या था दुशमनाने इस्लाम के यलग़ारों को रोकने के लिए खुवाबे ख़रगोश में मस्त अफ़राद के लिए ज़रूरी है मजालिस में वाज़ के ज़रीआ तबलीग़ व तक़रीर के ज़रीए सिराते मुसतकीम का पता बताया जाए ऐसी मजलिसों में शिरकत पर बिदअत का राग अलापने वाले अपने बवासीरी ज़हन व फ़िक़्र का इलाज करलें ।

आसमाँ व ज़मीँ और सूरज चाँद तारे सालाम कहते हैं
इब्ने हैदर तुमहें गुलिसताँ के सब नज़ारे सलाम कहते हैं

ऐहले हक़ ने तुमहारासाथ दिया सर दिया हाथ पर न हाथ दिया
करबला की ज़मीन पर बह कर खूँ के धारे सलाम कहते हैं

(कारी मोहम्मद लियाक़त रज़ा नूरी)

हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के वालि दैन करीमैन के ईमान के बारे में उलामा ए देवबंद का अकीदा

(1) गंगोही से सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के माँ बाप के मुतआल्लिक सवाल पूछा गया जवाब में गंगोही ने लिखा कि उनका इनतेकाल हालते कुफ़र में हुवा है। (माअजल्लाह)

(हवाला: 1 फ़तावा रशीदया (1987 ई0) स0,104)

(हवाला: 2 फ़तावा रशीदया (1363 हिजरी) जिल्द 3 स0,32)

(2) थान्वी ने कहा कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के वालेदैन करीमैन के बारे में गुफ्तगू करने को बहुत ख़तर नाक समझता हूँ और जाहिर है कि किसी के वालेदैन को ये कहना कि यह बदमआश काफ़िर थे उस से औलाद को तबई रन्ज होता है इस कायेदे से हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को भी रन्ज होता होगा।

(हवाला: अलकलामुल हसन मलफूज़ 12 स0,10)

(3) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वालेदैन के ईमान के मुतअल्लिक सवाल को थान्वी ने फुजूल बात कहा एक शख़्स ने थान्वी को लिखा कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के वालेदैन मोमिन थे या काफ़िर और जन्नत में जाएँ गें या दोज़ख़ में जवाब में थान्वी ने लिखा कि इस की तहकीक़ से तुमहें किया फ़ायेदा फिर कहा बहुत ऐसे ख़त आते हैं जिन में फुजूल बातें दरयाफ़्त की जाती हैं मैं सबका यही जवाब देता हूँ।

(हवाला: हसनुल अज़ीज़ जिल्द 3 हिस्सा 3 किस्त 14 स0,72)

उलामा ए देवबंद की स्त्रियाह बख़्शितियाँ

रसूले गिरामी वकार सल्लललाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमा तेहैं: لم ازل اقل من اصلاّب الطاهرين الى ارحام الطاهرات: मैं हमेश पाक पुशतों से पाक रहमों की तरफ़ मुन्तकिल होता रहा हूँ। (रुहुल मआनी जिल्द 2 स0,169)

हदीसे पाक की रोशनी में मालुम हुवा कि आपके वालिदे गिरामी

हज़रत अबदुल्लाह से लेकर सय्यदुना आदम अलैहिस्सलाम तक
आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तमाम आबा व अजदाद तय्यब
व ताहिर हैं उनकी पेशानियाँ कभी भी बुतों के सामने न झुकीं,
मोहकिके कीन उलमा के नजदीक रब तबारका व तआला ने सरकार
सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमी अजदाद व आबा ए किराम को
कुफ़र व शिर्क की जैसी नजासतों और फ़ेले हराम से हमेशा पाकीजा
रखा अल्लाह ने इरशाद फ़रमाय "انماالمشركون نجس" वेशक मुशरिक
सब के सब नजिस हैं तो नजिस सुल्ब और मुशरिका का रहम नूरे
मुस्तफ़ा का मुतहम्मिल कैरो हो सकता था जिन जिन पेशानियों और
सुल्बों और मादरे रहम में आपका नूरे मुबारक मुतमक्किन रहा वह
सब के सब तमाम अफ़आले कबीहा से मुसफ़्फ़ा और पाकीजा रहे।

يراك في الموحدين من نبى الى حتى اخرجك في هذه لحمة यानी अल्लाह तआला
आपको तौहीद परस्तों में एक नबी से दूसरे नबी की तरफ़ मुन्तकिल
होता देखता रहा यहाँ तक कि आपको इस उम्मत में पैदा फ़रमाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ान दानी वकार व अज़मत
पर बहुत से दलाइल व शवाहिद मौजूद हैं मगर जिस के नोके कलम
व ज़बाने बे लगाम पर शैतान बैठ कर उस वक़्त तक न उतरा हो
जब तक अंबिया व औलिया और शोहदा की हुरमतों का खून न बहा
लिया हो उन मज़मूम ख़सलत लोगों की दीदा दिलेरी खून बरसाती
आँखों से पढ़िए और खुद फ़ैस्ला कीजिये कि किया ऐसे अफ़राद
इत्तेबा के काबिल हैं ? हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मोहददिस देहलवी
रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं सरकार के वालेदैन को मोमिन न
मान्ना उलमा ए मुतक़द्देमीन का मसलक था लेकिन उलामा ए
मुतअख़्खेरीन ने तहकीक के साथ साबित किया है कि हुज़ूर के
वालेदैन बल्की तमाम आबा व अजदाद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम
तक सब के सब मोमिन हैं।

उन हज़रात के ईमान के सुबूत में तीन तरीक़े हैं (1) ये कि सरकार

के वालेदैन और आबा व अजदाद सब के सब मिल्लते इब्राहीमी पर थे इस वजह से गोमिन हुए (2) ये कि तमाम हजरात एलाने नुबुव्वत से पहले ही ऐसे जमाने में वफात पागए जो जमान ए फितरत कहलाता है और हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दावते ईमान उन लोगों तक पहुंची ही नहीं लिहाजा हरगिज उन लोगों को काफिर नहीं कह सकते हैं बल्कि सबको मोमिन ही कहा जाए गा (3) ये कि आका ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उन हजरात को जिन्दा फरमा कर कलेमा तय्याब की दौलत से सरफराज फरमा कर अपनी नुबुव्वत की तसदीक करवाई इसके अलावा तारीखी शवाहिद वाजेह और वाफिर हैं जहनी अय्याशयों की तमाम सड़कों को दुलहन की तरह सजा ने वाले हजरात अपने अनजाम का खयाल करें उस जाते गिरामी के वालेदैन को मआजअल्लाह जहन्नमी करार दे रहे हैं जिनसे शदीद किस्म की मोहब्बत किये बगैर ईमान बिल्लाह की दलील ही नहीं।

कुर आन तो ईमान बताता हे इन्हें
ईमान ये कहता है मेरी जान हैं ये।

रब तआला ऐसे अय्यार जहन वाले लोगों को हिदायत नसीब फरमाए
आमीन

अल्लाह तआला की शान के लायक न हों ऐसी मिसालें और कलेमात

(1) थान्वी ने कहा कि मुझे तवाफ के वक्त ऐसा मालूम होता था कि बादशाह तख्त पर जलवा अफरोज है और उसने अपने गिर्द तवाफ का हुक्म दिया है और सब तवाफ कर रहे हैं।

(हवाला: हसनूल अजीज जिल्द 2 हिस्सा 2 किस्त 5 मल 0,364 स 0,142)

(2) बकौल मोल्वी याकूब नानोतवी अल्लाह की तरफ से शरारत का इलाज जूता है।

(हवाला: हसनूल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 2 किस्त 13 स 0,167)

(3) थान्वी बहावाला मैलाना फजलुर्रहमान कहा कि अल्लाह का हिन्दी तरजुमा मन मोहन है।

(हवाला: हसनूल अजीज जिल्द 2 हिस्सा 2 किस्त 15 मल 0,301 स 0,104)

(4) मोल्वी कासिम नानोतवी ने अय्यामे तिफली में ख्वाब देखा कि गोया मैं अल्लाह की गोद में बैठा हवा हूँ।

(हवाला: सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,132)

(5) थान्वी का कहना कि जवाब की अहमियत नहीं बल्कि ये देखना चाहिए कि जवाब ठीक भी है या नहीं शैतान को सजदा करने पर पूछा गया तो उसने कहा ' خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَ مِنْ طِينٍ '

अल्लाह ने जवाब का जवाब न दिया शैतान ऐसा हाजिर जवाब था कि हक़ तआला को जवाब न आया। (नऊजु बिल्लाह)

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 4 हिस्सा 2 किस्त 11 स0,87)

(6) मोहर्रम में नियाज़ करने वालों पर थान्वी की बद गुमानी कि वह खुदा को पेनशिन याफ़ता हाकिम समझते हैं जिसको इख़तियार नहीं।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द 1 हिस्सा 3 किस्त 18 मल0,453 स0,80)

(7) अख़लाक़े मोहम्मदी तुम में नहीं ऐसा कहने वाले के जवाब में थान्वी ने कहा कि अख़लाक़े इलाहिया तो हैं।

(हवाला: अल इफ़ाजतुल योमिया जिल्द 1 किस्त 5 मल0,1003 स0,496)

(8) बकौल थान्वी एक शख़्स ने पूछा कि सूद क्यों हराम है मैं ने कहा इस वास्ते कि हक़ तआला ने इस को हराम किया है कहा कि हक़ तआला ने क्यों हराम क्या मैंने कहा मैं उस वक़्त मशवेरे में शरीक न था जो वजह पूछ लेता और अगर शरीक होता तब भी यही कहता जो अपा लोग हुक्कामे दुनिया के मशवेरों में रात दिन कहा करते हैं कि(हुजूर) की राय हो या शायद ये भी कहदेता कि मुसलमानों पर एक वक़्त इफ़लास का आने वाला है लिहाज़ा इस को हराम न कीजिए मगर मुझ से किसी ने पूछा ही नहीं।

(हवाला: आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,87)

तज़ाकीलै ज़ातै इलाहिया देवबंदी उल्लूमा

अपने हक़ में नुबुव्वत की ज़मीन ज़र खेज़ बना ने वाले अल्लाह का तर्जुमा हिन्दी में मन मोहन कर रहे हैं याकूब नानोतवी अल्लाह की

तरफ से शरारत करने वाले का इलाज जूता तजवीज कर रहे हैं रब्बे अजीम समी व बसीर सत्तार व जब्बार की शान में अपने हस्ब व नस्ब का पता बता रहे हैं कि मआज़अल्लाह, अल्लाह तआला शैतान का जवाब देने से कासिर व मजबूर और इबलीस लईन ने रब्बे कायेनात को ला जवाब करदिया यही थान्वी खुदा की शान में पेनशन याफ़ता हाकिम का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल कर रहे हैं दीन दारी के लिबादे में रब्बे कदीर की ज़ात को हदफ़ बनाना उसकी कहहारी व जब्बारी को दावत देने के सिवा और किया होसकता है इनसान इन ख़तर नाक अफ़आल का तसव्वुर भी नहीं कर सकता आज सादा लोह मुसलमान अपनी सादगी के तहेत उन जैसे हज़रात का तक़वा तहारत और उनकी नमाज़ों को देख कर मीठी मीठी बातें सुन कर उन के करीब होजा ते हैं फिर वह लोग इलहाद व ज़नदेका की ऊँची उड़ानों में अकाइद व ईमान को ऐसा ख़राब करदेते हैं कि ना इस्लाम के बुनियादी दस्तूर व उसूल की पासदारी व रिआयत बाकी रहती है और ना ही इस्लाम दुश्मनी का दिल से कोई खटका व ख़ौफ़ बाकी रहता है।

अल्लाह जल्ला जलालहू की शान में किस क़दर दिल ख़राश इबारतें पेश कि गई हैं ये इस्लाम की ख़िदमत हो रही है या इस्लाम के बेख़ व बुन को उखाड़ा जा रहा है सच बताइय्ये ऐसी इबारतें जिस में ख़ालिके अरज़ो समाँ की इनतेहाई दरजे की तौहीन की गई है पढ़ कर कलेजा का खून पानी न होजाए गा। इस्लाम के बड़े से बड़े दुश्मनों ने वह बात न कही जो मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी और उन के पैरु कार कह गए इस्लाम और तौहीद परस्ती का ढँडोरह पीटने वाले तबलची हज़रात ने तौहीद के तअल्लुक से क्या अकीदा अख़ज किया है उसकी ज़ात में उयूब के मुतलाशी जज़्ब ए इनसाफ़ से गौर करें खुदा की अज़मते शान पर जो हमला किया है वही सब का फ़ैस्ला करेगा उस की बारगाह में ऐसे लोग किस तरह हाज़री देंगे ? कुछ तो सोचा होता हाये रे ग़ैरते ईमानी तू कहाँ मरगई वह जो

शहे रग से जियादा करीब है उसी के मुतअल्लिक थाना भवन के मसखरों का इबलीसी जहनियत कार फरमा अलअमान वलहफीज

अपना मसलक कहना

(1) आशरफ अली थान्वी का शायी शुदा मसलक की मुखतसर और जरूरी शरा के उन्वान के तहेत लिखा है कि आगाज रबी उस्सानी सन्ने रवाँ(1339हिजरी) में एक एलान ब उन्वान मसाइले हाजिरा के मुतअल्लिक अशरफ अली थान्वी का मसलक शायी किया गया था।

(हवाला: अशरफुस्सवनेह जिल्द 3 स0,161)

(2) थान्वी कहते हैं कि मेरा मसलक तो खुला है।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 2 मल0,489स0,243)

(3) एक मोल्वी के सवाल के जवाब में थान्वी ने कहा कि किसी का कोई तर्ज हो मेरा तो ये मसलक है कि शरीअत को मसालेह पर मुकद्दम रखता हूँ मेरे यहाँ मसालेह पीस दिये जाते हैं क्योंकि मसालेह को जितना पीसा जाए सालन ज्यादा लजीज होता है।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 5 मल0,1174स0,541)

(4) थान्वी का कहना कि जो मेरा मसलक और तर्ज है उसकी इत्तेबा करो।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 2किस्त 7 मल0,394स0,210)

(5) थान्वी का कहना कि मैं अपने मसलक और तरजे इस्लाह को नहीं छोड़ सकता।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 2किस्त 11मल0,112स0,91)

(6) थान्वी कहते हैं कि अगर मेरा तर्ज और मसलक पसंद नहीं, मत आओ।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 3किस्त,16मल0,103 स0,65)

(7) थान्वी कहते हैं कि मेरा मसलक मौला ना देवबंदी (महमूद हसन) के मसलक से मुखतलिफ है।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 4 मल0,912स0,459)

(8) बकौल थान्वी गंगोही के पीर जादे हमारे खिलाफ मसलक रखते हैं।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 2किस्त 11 स0,59)

(9) एक शख्स ने थान्वी से कहा कि फलों शख्स से मेरी सिफारिश कर दीजिए जवाब में इनकार करते हुए थान्वी ने कहा कि ये मेरे मामूल और मसलक के खिलाफ है।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 1 मल0,77 स0,388)

(10) थान्वी ने कहा कि मेरा मसलक फना तजवीजात और तरके तअल्लुकात है।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 4 मल0,760स0,388)

(11) पहले आब्हा गाँव में जुमा होता था, गंगोही ने कहा कि आब्हा हमारा है और फिर भी हमारे मसलक के खिलाफ जुमा होता है चुनाँचे फिर वहाँ जुमा बंद हो गया।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 1किस्त 12 स0,98)

(12) थान्वी कहते हैं कि जो मेरे मसलक के मुखालिफ हैं वह मोल्वी शफी का रिसाला देखें।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 2किस्त 19 मल0,670स0,372)

(13) मसअला का हल बताने पर एक शख्स ने थान्वी को दो रुपया दिया थान्वी ने ये कह कर ले लिया कि ये तो मेरे मसलक से वाकिफ हैं।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 4किस्त 19 मल0,665स0,366)

(14) थान्वी का कहना कि रन्गून में हाजी मोहम्मद यूसुफ साहिब ने मेरे मसलक के मुतअल्लिक कहा कि इस की तमाम तालीम का खुलासा ये है कि यहाँ भी राहत से रहो और वहाँ भी वाकई मेरे तमाम मसलक और तालीम का खुलासा बयान कर दिया।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 4किस्त 19मल0,738स0,408)

(15) थान्वी कहते हैं कि हमारा मसलक यह है कि अंडा खाओ, मुरगी खाओ, मुरग़न खाने खाओ और काम करो।

(हवाला: हसनुल अजीज जिल्द 3 हिस्सा 3किस्त 14 स0,91)

(16) थान्वी कहते हैं कि मेरे हैदरा बादी मामूँ के मसलक में और मेरे मसलक में इखतेलाफ था लेकिन बावजूद इखतेलाफे मसलक

के उन्होंने ने अपने मुरीद को लिखा कि अशरफ़ अली का मस्लक हम से जुदा है, इसलिए उस से मत मिलना लेकिन गुस्ताखी भी न करना (हवाला:अल इफ़ाजतुल योमिया(देवबंद) जिल्द 4किस्त 19 मल0,750 स0,416)

लक़ब आला हज़रत का इस्तैमाल

(1) इमाम अहमद रज़ा मुहददिस बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के लक़ब आला हज़रत के मुतअल्लिक मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी ने कहा कि यह आला तो अना रब्बो कुमुल आला में का है जब उन के लिए लफ़्ज़ आला हज़रत बोला जाता है तो हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए कौनसा लफ़्ज़ बोला जाए गा यह है बे अदबी ए रसूल नीज़ थान्वी ने इमाम अहमद रज़ा के मुतअल्लिक कहा कि उनकी सूरत आलिमों की सी नहीं है, मजमूई हैसियत से भौंड मालूम होता है। (मआज़अल्लाह)

(हवाला: हसनूल अज़ीज़ जिल्द 4 हिस्सा 1किस्त 10 स0,189)

(2) मोल्वी क़सिम नानोतवी, मोल्वी रशीद अहमद गंगोही और मोल्वी अशरफ़ अली थान्वी के पीर व मुर्शिद हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की को उलमा ए देवबंद आला हज़रत कहते और लिखते थे देवबंदी मक़तब ए फ़िक्र की मुतअददिद किताबों में हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की को लक़ब आला हज़रत के साथ मुलक़क़ब क्या गया है जिसकी तफ़सील हसबे ज़ेल है।

(हवाला:1 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,40 पर 5 मरतबा)

(हवाला:2 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,41 पर 3 मरतबा)

(हवाला:3 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,42 पर 6 मरतबा)

(हवाला:4 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,43 पर 3 मरतबा)

(हवाला:5 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,44 पर 1 मरतबा)

(हवाला:6 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,45 पर 3 मरतबा)

(हवाला:7 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,46 पर 6 मरतबा)

(हवाला:8 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,47 पर 8 मरतबा)

(हवाला:9 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,48 पर 9 मरतबा)

(हवाला:10 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,49 पर 2 मरतबा)

(हवाला:11 तज़किरतुर्रशीद जिल्द 1 स0,50 पर 8 मरतबा)

136

- (हवाला:47 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,115 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:48 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,143 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:49 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,167 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:50 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,184 पर 4 मरतबा)
 (हवाला:51 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,185 पर 3 मरतबा)
 (हवाला:52 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,186 पर 3 मरतबा)
 (हवाला:53 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,187 पर 3 मरतबा)
 (हवाला:54 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,188 पर 4 मरतबा)
 (हवाला:55 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,189 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:56 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,249 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:57 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,282 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:58 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,311 पर 4 मरतबा)
 (हवाला:59 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,320 पर 3 मरतबा)
 (हवाला:60 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,326 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:61 तजकिरतुरशीद जिल्द 2 स0,120 पर 1 मरतबा)

- (हवाला:62 तजकिरतुल खलील (सहारनपुर)बारे दोम स0,74 पर 2 मरतबा)
 (हवाला:63 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,75पर 2 मरतबा)
 (हवाला:64 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,77 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:65 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,106 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:66 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,119 पर 4 मरतबा)
 (हवाला:67 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,124 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:68 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,279 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:69 तजकिरतुल खलील(सहारनपुर)1411हि0 स0,339 पर 2 मरतबा)

- (हवाला:70 आदाबे इफता व इसतिफता स0,98 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:71 आदाबे इफता व इसतिफता स0,114पर 3 मरतबा)
 (हवाला:72 आदाबे इफता व इसतिफता स0,117पर 1 मरतबा)
 (हवाला:73 आदाबे इफता व इसतिफता स0,126पर 1 मरतबा)
 (हवाला:74 सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,284 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:75 सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,285 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:76 सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,288 पर 1 मरतबा)
 (हवाला:77 सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,293 पर 2 मरतबा)
 (हवाला:78 सवानेह कास्मी जिल्द 1 स0,295 पर 2 मरतबा)

कुल मीजान

219 मरतबा

अध्याद जाल में फस गया

मुंदरजा बाला इबारतें खूब खूब पढ़िए मसलक के मुतअल्लिक जो बयानात अशरफ अली थानवी ने दिये हैं और मसलक की इशाअत के लिये जो जोरे बयानी और लफ्फाजी सर्फ किए हैं वही तालीमाते, गैर मुकल्लिदीन हैं अब रहा लकब आला हजरत का इस्तेमाल जिस जिम्न में मोल्वी अशरफ अली थानवी ने अपनी बचकाना फहेम व दानिश का इस्तेमाल किया है वह उन्हीं की इबारतों से वाजेह हो रही है न जाने कितने लोगों पर लफ्जे आला हजरत का इस्तेमाल होता चला आ रहा है मगर मोल्वी अशरफ अली थानवी ने सिर्फ जाते इमाम अहमद रजा मोहददसे बरेलवी ही को अपने तीर का निशाना बनाया: लिखते हैं कि ये आला तो 'अना रब्बो कोमुल आला' में का है जब उनके लिए लफ्जे आला हजरत बोला जाता है तो हुजूर सल्लललहो अलैहे वसल्लम के लिए कौनसा लफ्ज बोला जाएगा ये है बे अदबी ए रसूल नीज थानवी ने इमाम अहमद रजा के मुतअल्लिक कहा कि उनकी सूरत आलिमों की सी नहीं है, मजमूई हैसियत से भाँड मालूम होता है (मआजअल्लाह) रेन्डी नवाज मोल्वी अशरफ अली थानवी अपनी बात दूसरे पर डालने की उमदा महारत रखते हैं थाना भवन के उस भड़वे ने कितनी बार तवाइफों की आगोश में खेला होगा यह जमाअते वहाबिया के लोग बखूबी जानते होंगे इस जमाअत के तमाम भड़वों का पोस्ट मारटम रिपोर्ट आपके सामने मौजूद है आप मेरी तहरीर को कुछ भी नाम दे लें मगर ईमान व यकीन के साथ फैसला कीजिए कि जालिम ने इमाम अहमद रजा खाँ फाजिले बरेलवी को मुजस्सम भाँड बताकर किया अकलमन्दी का सुबूत दिया है ? पैकरे इश्के वफा की मुअत्तर व कैफ आवर जिंदगी के साथ कितना भूँडा मजाक किया है। खुद इन दरिंदों ने अपने पेशवाओं के मुतअल्लिक 219 मरतबा लफ्जे आला हजरत का

इस्तिमाल किया है जो हवाले के साथ ऊपर गुजर चुका है इन जालिमों ने अपने ही खून से होली खेली है।

अल्लामा अरशदुल कादरी रहमतुल्लाह अलैह रकम तराज हैं:

(थोड़ी सी तर्मीम माजेरत के साथ)

“आला हजरत जैसे अलफाज साहिबाने अलकाब की इज्जत व रिफात और मकामे उलया के इजहार के लिए है जिससे फी जमानिही असहाबे फज़ल व कमाल से मुतअल्लिक होता है अशरफ अली थानवी की मशामे जाँ किस क़दर मुक़नातीसी थी कि लफ्जे आला हजरत में अना रब्बोकोमुल आला की वू महसूस कर लेती है यकीनन उनके कौल में फिरऔनी दिमाग़ कार फ़रमा रहा वरना इतना सख़्त हमला हरगिज़ न करते दूसरी आँखों का तिनका देखने वालों को अपनी आँख की शहतीर नज़र नहीं आती ?

सरकार आला हजरत अपने दौर में बिला शुबह मुआरिफ़ व कमाल फ़जाइल व अख़लाक में अपने हमअस्र के दरमियान फौकियत व बर तरी रखते थे जिसकी बुनयाद पर लफ्जे आला हजरत इमाम अहमद रज़ा की ज़ात पर इस तरह मुंतबिक हो गया कि आज अवाम व ख़्वास ही नहीं बल्कि सारी दुनिया के लोगों की ज़बान पर चढ़ गया और हर हल्के में आला हजरत कहे बग़ैर शख़सियत की ताबीर ~~क~~कम्मल नहीं होती तारीख़ गवाह है कि हर दौर में यज़ीदी फ़ितने उठते हैं नमरूदियों और फिरऔनियों ने कुफ़र व निफ़ाक़ का नक्कारा बजाया है और हर दौर में उनकी सर कोबी के लिए हक़ परस्त उलमा व फुज़ला कमर बस्ता होकर मैदाने अमल में उतरे हैं उम्मत में बे एतमादी के हर उस सिक्के को खोटा साबित किया है जो उम्मत का शीराज़ा बिखेरने के लिए राइज किए गए ताकि दीन का सरमाया महफूज़ रह सके।

वहाबियत ने अंग्रेज़ों के साय ए करम में जन्म लिया था ये फ़ितना उस वक़्त क़दे आवर तनावर दरख़्त बन चुका था जब सरकार आला हजरत मसनदे इरशाद पर जलवा गर हुए थे पूरे मुल्क में वहबियत का फ़ितना फैल चुका था इमाम अहमद रज़ा पैकरे इश्के

वफा बनकर पूरी वहाबियत से बर सरे पैकार हो जाते हैं उनकी किताबों की रद में बेशुमार किताबें और रिसाइल तसनीफ़ फ़रमाते हैं सहीहुल अकीदा मुसलमान उस वक़्त वहाबी मज़हब के खिलाफ़ भरपूर अपनी बेजारी का मुज़ाहिरा करते हैं इमाम अहमद रज़ा ख़ान ने उठाये जाने वाले फ़ितने का सर कुचल कर रख दिया और फ़ितनों के मोज़िद और अलम्बरदार को फ़ना के घाट उतार दिए उनकी राख़ इस तरह उड़ गई कि कोई मुहक़म ए आसार ये भी न मालूम कर सका कि किस शमसान घाट में मदफून् हैं इमाम अहमद रज़ा दुनया ए सुन्नियत के पुर सोज़ चारा गर एक ग़मगुसार और फ़र्ज़ शनास रहनुमा और मुहाफ़िज़े दीन व मिल्लत की शक़ल में नज़र आते हैं जहाँ न मसलेहत है न सौदे बाज़ी, जाहो हश्म की तमन्ना न डालर व रियाल की हिर्स हों अगर है तो इश्क़े मुस्तफ़ा है पूरी जिन्दगी अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदह सराई से शाद काम रहे एक बे क़रार आशिक़े दिल फ़िगार की तरह अमले ततहीर कि मोहिम में सुबहो शाम मुस्तगरक़ रहे।

माद्दी व साइल व असबाब की परवा किए बग़ैर उम्मत की कश्ती को मौजे हवादिस से बचाकर साहिले मुराद तक पहुँचाते रहे उनके पास इश्को यकीन की कुव्वत, कादिरे मुतलक़ की ग़ैबी ताईद व नुसरत थी और रसूले कायेनात सल्लल्लाहो अलैहि वसेल्लम की रूहानी चारा गरी पर भर पूर एतेमाद था।

ख़ुदा दाद ज़ेहानत व फ़तानत इल्मे फुकाहत में महारते ताम्मह फ़िक्र व नज़र की गहराई इल्म व इदराक़ पर दसतरस के जलवे इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की तसनीफ़ात के हर हर वरक़ पर मानिंद सितारे जगमगा रहे हैं आला हज़रत जैसा सर शार आशिक़े रसूल जो महबूबे जाने जानों की खुश नूदी व रिज़ा के लिए फ़िर्कहाये बातिला से हमेशा नर्बुद आजमा रहे वहाबियों, देवबंदियों की मक्कारियाँ नित नए फ़ितनों से मुज़य्यन होकर सामने आती रहती हैं लिहाज़ा मुसलमानों को उन से इजतेनाब और दूरी इख़्तियार करनी चाहिए ताकि उनके फ़ितनों से महफूज़ रह सकें।

अल्लाह तबारक वतआला अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सदाके में इन जालिमों के शर से महफूज रखे। (आमीन)

नबी के ईमान से इन्कार

(1) मोल्वी अब्दुल शकूर काकोरवी ने अपनी किताब मुख्तसार सीरते नबवय्यह में लिखा है कि "وَجَدْتُكَ صَلَافِي" यानी और पाया उस परवर दिगार ने आप को राह से बे खबर पर हिदायत की उसने आपको।

इसी आयत से इस्तिदलाल कर के लिखा है कि

● लेकिन बावजूद इन मुहारिने अकलिया के मुहारिने शरईया से आप बिल कुल बेखबर थे मुहारिने शरईया की अरले उसूल यानी ईमान बिल्लाह की हकीकत भी आप न जानते थे।

● अखलाकी मुहारिन के तीन जुज हैं, तहजीबे अख्लाक, तदबीरे मन्जिल, सियाराते मुदन इन तीनों में से आप कतअन व असलन बे खबर थे जब आप ये भी न जानते थे कि किताबे इलाही क्या चीज है और ईमान किया चीज है तो और मुहारिन से आप को क्यों कर आगही होसकती थी।

● कभी कुछ ऐसी कलिमात आपकी ज़बान से सादिर नहीं हुए जिस से यह मालूम होता कि आप अपने लिए इस मरतब ए उज़्मा की उम्मीद रखते हैं जो चालीस वर्ष के बाद आप को इनयात हुवा।

(हवाला: मुख्तसार सीरते नबवय्यह, अन्नज्म लखनऊ जिल्द 10, स0, 22 (7 रबीउल अव्वल 1332 हि0)

(2) मोल्वी अशरफ अली थानवी ने कहा कि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए यह फरमाना कि ईमान की भी खबर न थी इस से बड़ा अंदेशा इस गलत फहमी का हो सकता है कि ईमान कोई मोहतम बिश्शान चीज नहीं जब नबी भी उस से एक ज़माने में बे खबर रह चुके हैं।

(हवाला: अल इफाजतुल योमिया (देवबंद) जिल्द 1 किस्त 2 मल0, 361 स0, 180)

(3) मोल्वी अशरफ अली थानवी ने कहा कि अगर बिल फर्ज आदम

अलैहिरसलाम से भी लगजिश न हो ती तब भी चूँकि माददा तो उस लगजिश का उन में था ही जिस से ब लुजूम आदी उन की औलाद में से जन्नत में कोई न कोई गड़ बड़ करता और उस को निकाला जाता, उस वक्त वह किसी का बेटा किसी का भाँजा किसी का पोता किसी का भतीजा किसी का भाई तो रोज़ाना जन्नत में कोहराम मचा रहता इस वजह से बाप ही आए।

(हवाला: अल इफ़ाज़तुल योमिया(देवबंद) जिल्द 1किस्त 2 मल0,391स0,195)

मीलाद व क़्याम पर एतयाज़

(1) मीलाद के मुतअल्लिक मोल्वी रशीद अहमद गंगोही ने लिखा है कि मौलूदे मुरव्वेज खुद बिदअत है और इस में क़्याम को सुन्नते मोअक्किदा जानना भी बिदअते जलाला है और फ़ख़रे आलम अलैहिरसलाम को मजलिस में हाज़िर जानना भी ग़ैर साबित है अगर ब इल्मिल्लाहि तआला जानता है तो शिर्क नहीं वरना शिर्क है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,166)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 1 स0,84)

(2) मौलूद शरीफ़ और उर्स कि जिस में कोई बात ख़िलाफ़े शरा न हो जैसे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब रहमतुल्लाह अलैह कहा करते थे आपके नज़दीक जाइज़ है नहीं और शाह साहिब वाक़ई मौलूद और उर्स करते थे या नहीं?

जवाब: अक़दे मजलिसे मौलूद अगरचे उस में कोई अम्र ग़ैर मशरू न हो मगर एहतेमाम व नज़ाइज़ में भी मौजूद है लिहाज़ा इस ज़माने में दुरुस्त नहीं।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,115)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 1 स0,85)

(3) मसला: इनइक़ादे मजलिसे मीलाद बेदूने क़्याम व रिवायाते सही दुरुस्त है या नहीं?

जवाब: इनइक़ादे मजलिसे मौलूद हरहाल में ना जाइज़ है।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0,130)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2 स0,150)

(4) महफिले मीलाद में जिस में रिवायाते सही पढ़ी जावें और लाफ़ व गजाफ़ और रिवायाते ममनूआ और काजिबा न हों शरीक होना कैसा है ?

जवाब:— नजाइज़ है ब सबब और वजूह के ।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0131)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2स0155)

(5) गंगोही लिखते हैं यह महफिल चूँकि फ़खरे आलम अलैहिस्सलाम और ज़मानए सहाबा रज़ियल्लाह अनहुम और जमानए ताबेईन और जमानए अइम्म ए मुजतहेदीन अलैहिर्रहमा में नहीं होती, इसका ईजाद बाद छः सौ साल के एक बादशाह ने किया उसको अकसर अहले तारीख़ फ़ासिक लिखते हैं। लिहाजा यह मजलिस बिदअते जलाला है। ज़्यादा दलील की हाजत नहीं अदमे जवाज़ के लिए यह दलील बस है कि किसी ने कुरुने ख़ैर में इस को नहीं क्या ।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0114)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द 2स0145)

(6)सवाल:— जिस उर्स में सिर्फ़ कुरआन शरीफ़ पढ़ा जावे और तक़सीमे शीरीनी हो शरीक होना जाइज़ है या नहीं?

जवाब:— किसी उर्स और मौलूद शरीफ़ में शरीक होना दुरुस्त नहीं और कोई उर्स और मौलूद दुरुस्त नहीं ।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0134)

(हवाला:2 फ़तावा रशीदया (क़दीम)जिल्द3,स0 94)

(7) सवाल:— मुरव्वेजा मजलिसे मीलाद बिदअत है या नहीं?

जवाब:— मजलिसे मुरव्वेजा बिदअत है और ब सबब ग़लत उमूरे मकरूहा के मकरूह तहरीमा है ।

(हवाला:1 फ़तावा रशीदया (जदीद) स0115)

(8) मजलिसे मीलाद में सलात व सलाम के लिए खड़े होने के तअल्लुक़ से मोलवी ख़लील अहमद अंबेठवी ने लिखा कि यह वजह है कि रूहे पाक अलैहिस्सलाम की आलमे अरवाह से आलमे शहादत में तशरीफ़ लाए उसकी ताज़ीम को क़्याम है तो यह भी महेज हिमाक़त है क्योंकि इस वजह से क़्याम करना वक़्ते वुकूए

विलादतें शरीफा के होना चाहिए अब हर रोज कौनसी विलादत मुकरर होती है, बस यह हर रोज इआदा विलादत का तो मिस्ले हुनूद के कि सांग कन्हय्या की विलादत का हर साल करते हैं या मिस्ले रवाफिज के नकले शहादतें अहले बैत हर साल बनाते हैं (मआजअल्लाह) सांग आपकी विलादत का टहरा और खुद यह हरकते कबीहा काबिले लोम व हराम व फिस्क है।

(हवाला: अलबरा हीने कातिआ (देवबंद) स0152)

(9) मजलिसे मौलूदे मुरब्बेजा बिदअत है बवजहे गलत उमूरे मकरुहा के मकरुहे तहरीमा है और क्याम भी बवजहे खुसूसियत के बिदअत है।

(हवाला: 1 फतावा रशीदया (जदीद) स0,167)

(हवाला: 2 फतावा रशीदया (कदीम) जिल्द 1 स0,99)

(10) मोलवी अशरफ अली थानवी ने मौलूद शरीफ का बयान के बाब के तहेत लिखा है कि बाज तो यूँ समझते हैं कि पैगुम्बर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम इस महफिल में तशरीफ लाते हैं और इस वास्ते बीच में पैदाइश के बयान के वक्त खड़े हो जाते हैं इस बात पर शरा में कोई दलील नहीं और जो बात शरा में साबित न हो उसका यकीन करना गुनाह है।

(हवाला: 1 हिकायातुल औलिया हिकायत 276, स0 287)

(हवाला: 2 अरवाहे सलासा हिकायत 276, स0 268)

(हवाला: 3 हसनूल अजीज जिल्द 1, हिस्सा 4, किस्त 19, मल 0, 588, स0, 42)

(हवाला: 4 हसनूल अजीज जिल्द 1, हिस्सा 2, किस्त 17, मल 0, 281, स0, 265)

(हवाला: 5 सवानेह कासमी जि 0, 1, स0, 476)

(11) मोलवी अशरफ अली थानवी दौराने क्याम कानपुर दुनयवी फायेदा के लिए तकिय्या के मिलाद शरीफ में शरीक भी होते थे और सलात व सलाम में खड़े भी होते थे इस बात का इक़्रार करते हुए थानवी ने अपने एक ख़त में गंगोही को लिखा जो हसबे ज़ेल है। मैंने देखा कि वहाँ बिदूने शिरकत इन मजालिस के किसी तरह क्याम मुमकिन नहीं, जरा इनकार करने से वहाबी कह दिया, दरप ए तजलील व तौहीन ज़बानी व जिसमानी के होगए और हीला व बहाना हर वक़्त मुमकिन नहीं और यह तो मुमकिन है और करता भी

हूँ कि फी सद नव्वे मौके पर उज़र कर दिया और दस जगह शिरकत करली इस खत में आगे थानवी ने लिखा कि बहेर हाल वहाँ बिदूने शिरकत क़्याम करना करीब बमुहाल देखा और मंजूर था वहाँ रहना क्योंकि दुनियवी मुनफ़ेअत भी है कि मदरसे से तनख़्वाह मिलती है।

(हवाला1: तजकिरतुलरशीद (सहारनपुर) जि0,1स0,118)

(हवाला2: आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,100)

(12) मोलवी अशरफ़ अली थानवी के कौल के मुताबिक़ हाजी इमदादुल्लाह मीलाद व क़्याम करते थे इसलिए शरअन गुंजाइश है।

(हवाला1: तजकिरतुलरशीद (सहारनपुर) जि0,1स0,118)

(हवाला2: आदाबे इफ़ता व इसतिफ़ता स0,101)

(13) बकौल थानवी हाजी इमदादुल्लाह मौलूद शरीफ़ में जाने के बावजूद बिदअती नहीं थे वह मुहक्किक् थे।

(हवाला: हसनूल अजीज़ जिल्द1, हिस्सा4, किस्त19, मल0,593, स0,49)

(14) हाजी इमदादुल्लाह को मक्के में मीलाद का बुलावा आया उस वक़्त गंगोही हाजी इमदादुल्लाह के पास मौजूद थे हाजी साहिब ने गंगोही को अपने साथ मीलाद में चलने को कहा तो गंगोही ने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि मैं हिन्दुस्तान में मीलाद को मना करता हूँ इसलिए यहाँ पर शरीक नहीं हो सकता।

(हवाला1: हसनूल अजीज़ जिल्द1, हिस्सा4, किस्त19, मल0,593, स0,49)

(हवाला2: हसनूल अजीज़ जिल्द3, हिस्सा1, किस्त12, स0,33)

(हवाला3: हसनूल अजीज़ जिल्द1, हिस्सा2, किस्त17, मल0,281, स0,266)

(हवाला4: हिकायातुल औलिया हिकायत366, स0,321)

(हवाला5: अरवाहे सलासा हिकायत326, स0,303)

(15) एक मरतबा एक शख्स ने मेरठ (यू पी) में मोलवी कासिम नानोतवी से पूछा कि मोलवी अब्दुस्समी साहिब तो मौलूद शरीफ़ करते हैं आप क्यों नहीं करते जवाब में नानोतवी ने कहा कि भाई हुज़ूर सरकारे कायेनात से उन्हें ज़्यादा मुहब्बत मालूम होती है इसलिए करते हैं मुझे भी अल्लाह तआला मुहब्बत नसीब करे।

(हवाला1: हसनूल अजीज़ जिल्द1, हिस्सा4, किस्त19, मल0,582, स0,31)

(हवाला2: सवानेह कासमी जि0,1, स0,471)

(16) बकौल थानवी एक मरतबा मैं मौलूद में चला गया और यह समझा कि वहाँ क्याम न होगा मगर वहाँ भी क्याम हुआ, और मैं बराबर वहाँ भी बैठा रहा मगर किसी ने गजंद न पहुँचाई आखिर जब नरमी आई तो क्याम करने लगा लेकिन कभी करता था और कभी नहीं।

(हवाला: हसनूल अजीज जि0,2,किस्त16,हिस्सा3,मल0,540,स0,11)

(17) शाह इसहाक देहली में एक अमीर के यहाँ और बम्बई में अपने शागिर्द अबदुर्रहमान के यहाँ मीलाद शरीफ में शरीक हुए।

(हवाला:1 हिकायातुल औलिया हिकायत96,स0,131)

(हवाला:2 अरवाहे सलासा हिकायत96,स0,112)

बुल हवस सुन मालोज़र की दोस्ती अच्छी नहीं

उन के दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
(अल्लामा अख्तर रज़ा खाँ अजहरी बरेलवी)

अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के बारे में इरशाद फरमाया: لقد جاءكم رسول من انفسكم عزيز عليه ما عنتم

حريص عليكم بالسوء منين روف رحيم

तरजुमा: बेशक तुम्हारे पास तशरीफ लाए तुम्में से वह रसूल जिनपर तुम्हारा मशक्कत में पड़ना गिराँ है। तुम्हारी भलाई के लिए निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाले महेरबान (कंजुल ईमान पा0 11,अत्तोबा आयत 128) आयते करीमा से मालूम हुआ कि बाज़ सख़ी बुलाकर देते हैं बाज़ आकर जैसे कुंवा और बादल हुजूर आकर देने वाले दाता हैं जैसा कि जाआ से मालूम हुआ, हुजूर सारे इनसानों के नबी हैं हर मोमिन के दिल व जान में जलवह गर हैं, हुजूर निहायत शानदार नबी हैं हुजूर को अपनी उम्मत से वह तअल्लुक है जो रूह को जिस्म से होता है कि उसके हर अजू की तकलीफ से ख़बरदार होती है जैसा कि अनफुसेकुम से मालूम हुआ, और हुजूर अल्लाह तआला की सिफ़ात के मजहरे अतम हैं हुजूर नफ़ीस तरीन जमाअत में तशरीफ लाये कि अरबी कुरैशी मुत्तलबी हाशमी हैं सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सरकार के तमाम आबा व अजदाद मोमिन हैं उनकी उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़जल, आप के माँ बाप तमाम नबियों के

माँ बाप से अफजल, उनका मदीना तमाम नवियों के शहरों से
 अफजल विलादत मक्का में रिहाइश मदीना में मगर तशरीफ आवरी
 हर मुसलमान के सीने में जैसे सूरज रहता है वीथे आसमान पर
 मगर सारी दुनिया को अपनी किरनों से भर देता है, याद रहे कि
 हुजूर के विसाल से आप की विलादत यानी जुहूर खत्म हुआ
 तशरीफ आवरी खत्म न हुई। आका सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम
 अपनी उम्मत के दुख दर्द से बा खबर हैं और दस्तगीरी फरमा रहे हैं
 कुरआन मजीद से यह बात साबित हो रही है कि अल्लाह तआला ने
 अपने महबूब सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का मीलाद मनाया है
 लिहाजा हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम का मीलाद मनाना
 सुन्नते इलाहिया है गुजिश्ता अम्बिया ने भी सरकार की मीलाद
 ख्वानी की है और रब्बे करीम ने आपकी तशरीफ आवरी का जिक्र
 फरमाया: **لَقَدْ مِّنَ اللَّهِ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ**
 तर्जुमा: बेशक अल्लाह का बड़ा इहसान हुआ मुसलमानों पर कि
 उनमें से एक रसूल भेजा
 (कंजुल ईमान सूर आले इमरान आयत 164)

هو الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ
 तर्जुमा: वही है जिसने अपना रसूल हिदायत और सच्चे दीन के साथ
 भेजा कि उसे सब दीनों पर गालिब करे।

(कंजुल ईमान अत्तोबा आयत 33)
 और भी बहुत सी ऐसी आयतें कुरआन में मौजूद हैं जिसके जरीए से
 मालूम होता है कि सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मीलाद
 मनाना जाइज़ व मुसतहसन के साथ रब की पाकीजा सुन्नत भी है
 मीलाद व क़्याम के मुतअल्लिक उलमा ए देवबंद ने जो जारेहाना
 खय्या इख्तियार किया है वह आका व गुलाम नबी और उम्मती से
 बहुत दूरी का इलाका रखता है सईद और नेक बख्त और
 सलीमुत्तबा हजरात से यह तो मुमकिन ही नहीं कि वह दाना ए
 सुबुल फख़रे रसूल मालिके इन्स व जाँ रहमते आलमियां सल्लल्लाहो
 अलैहे वसल्लम की शाने अक़दस में कोई तनकीस व

तनकीद गवारा करे, मुल्ला रशीद अहमद गंगोही ने मीलाद व क्याम को बिदअते जलाला बताया है और लिखते हैं कि कुरुने खैर में किसी ने इसको नहीं क्या इसलिए यह बिदअत व हराम है।

मोलवी अब्दुशकूर काकोरवी ने सीधा हमला इल्मे नबी सल्लललाहो अलैहे वसल्लम पर किया है लिखता है कि मुहसिने अकलिया के मुहासिने शरइया से आप बिल्कुल बे खबर थे, मुहासिने शरइया की असले उसूल यानी ईमान बिल्लाह की हकीकत भी आप न जानते थे (मआजअल्लाह) नबी को ईमान से खाली बताकर इस जालिम ने किस क़दर जुर्म किया है। अपनी सुवर जैसी थूथनी को देखकर जाते अम्बिया पर हमला करना चाहिये और वह भी जो जाने ईमान रूहे ईमान जिसकी मुहब्बत व ताजीम के बगैर ईमान का तसव्वुर ही मुमकिन नहीं अंग्रेजी तसल्लुत से कब्बल मुसलमान जियारते कुबूर ईसाले सवाब मीलाद व क्याम का एहतमाम बड़े ही फखरो इम्बिसात के साथ किया करते थे मगर वहाबियों के कमांडर इन चीफ मोलवी इसमाईल देहलवी ने जब अंग्रेजों की शह पर इनतिशार व मुनाफिरत की बीज सियाह बख्तों की खुशनूदी के लिए डालनी शुरू की तो उसे यह जमीन जरखेज मालूम हुई और मुसलमानों के इत्तिहाद का शीराजा बिखेर के रखदिया मगर इमाम अहमद रज़ा फ़ाजिले बरेलवी ने उन सारी ज़मीनों को बंजर बना दिया जो कौमों को गुमराह करने के लिए उस्तुवार की गयी थी। और सरकारे अबद करार सल्लललाहो अलैहे वसल्ल से वालेहाना मुहब्बत का ऐसा परचम लहराया कि आज भी उसी परचम तले महफिले मीलाद व क्याम का एहतमाम बड़े ही तुज्क व एहतेशाम से होता है और इनशाह अल्लाह सुबहे क्यामत तक होता रहेगा और ऐसा क्यों न होता रसूले गिरामी वकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ात वाला सिफात ही मुसलमानों के लिए मरकज़े इत्तिहाद है।

कुरआन तो ईमान बताता है उन्हें

ईमान यह कहता है मेरी जान है यह

वहाबियों ने इक़तेदार की मण्डी में ज़मीर फरोशी की बुनियाद

पर जो खिदमत खबीसा हासिल की थी सिर्फ और सिर्फ इश्क़े रसूल की शमा बुझाने के लिए आप इन लोगों की किताबों का मुताला कीजिए तो पता चलेगा कि अल्लाह व रसूल, सिहाबए किराम औलिया ए इज़ाम के खिलाफ गुस्ता खाना लब व लहजा के तीर व नशतर किस कदर चलाए गये हैं।

अहले बिदअत का लकब अहले सुन्नत को दिया गया मसलके हक्क़ह पर शिर्क व बिदअत का लेबिल लगाया गया। दज्जल व फरेब की यह सारी दास्तानें जो वहाबियों से अन्जाम पज़ीर हुई पढ़ने के बाद भी आज वहाबिया उन्हें अपना इमाम तसलीम कर रही है मगर

टूटती कलियों के मातम में हवा रोती रही

फूल के चहरे पे लिखी है कहानी रात की

तेरे जलवों से अंधेरों में उजाले फैले

तेरी आमद से गुलिस्तां में बहार आई है

शमअे रिसालत ने जिस वक्त अपने कुदूमे मैमनते लुजूम से इस खाकदाने गीती को मुनव्वर किया तो आप की मीलाद ख़्वानी में तीन दिन तक काब ए मुअज़्जमा खुशियों से हिलता रहा, आप के जलाल व कमाल की हैबत से किसरा का शाही महल ज़मीन बोस हो गया, फ़ारस के अतिश कदा की आग जो हजार वर्ष से जल रही थी वह बुझ गयी। कहेत ज़दा ज़मीन पर दरया ए रहमत की घटाएं इस कदर छा गयीं कि पहाड़ व जंगल पूरा खित्ता बारिश से सैराब होकर लाला ज़ार बन गये चमन लहलहा उठे हर तरफ हरयाली छा गयी और मुर्दा ज़मीनों में जान आ गई। इनसाफ से बताओ आपकी विलादत शरीफ़ से बढ़कर कौन सा जश्न और कौन सी मजलिस का इनइकाद हो सकता है जिसकी याद में महफिले मीलाद व क़्याम का एहतमाम करके अपने रब की सबसे बड़ी नेमत का चरचा किया जाए। अबू लहब लईने अज़ली ने अपनी बाँदी सुवैबा को आज़ाद करके नबीए करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की मीलाद ख़्वानी की थी जिसकी वजह से हर पीर की शब में अज़ाबे इलाही में तख़फ़ीफ़ हो जाती है जिन उँगलियों से इशारा करके सुवैबा

को आजाद किया था उन उँगलियों को चूसने से उसे गूना राहत व करार नसीब हो जाता है। अबू लहब जैसे काफिर को जिस की कुरआन में मजम्मत की गई है सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत पर खुशी मनाने की बुनियाद पर उसका बदला जहन्नम में अता किया गया तो भला सुन्नी सहीहुल अकीदा मुसलमान के मीलाद व क्याम के एहतमाम पर आप की मुहब्बत में इमकान भर खर्च करने पर उसको कितना अज़र मिलेगा ? रब्बे करीम इतना अज़र देगा कि अपने फज़ले अमीम से जन्नत में दाखिल फरमा देगा। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादते शरीफा के मौका पर सय्यदा आमिना रजियल्लाह अनहा के दरवाजे पर खड़े होकर मलायेका ने सलात व सलाम अर्ज किया। मलऊन शैतान रंज व ग़म में भागा भागा फिरा। शैतान के चेले मलायेका से क्यों नहीं पूछते कि हालते क्याम में सलाम का नज़राना क्यों पेश किया। आज भी नजदी वहाबी अपने देवता शैतान के नक्शे क़दम पर चलते हुए जिकरे मीलाद व क्याम से रोकते हैं। सीनों में जलन पैदा हो जाती है और महफिलों से राहे फरार इख्तियार करने की कोशिश करते हैं और जब फंस जाते हैं तो क्याम की सूरत में मजबूरन नबी की मीलाद कर लेते हैं जैसा कि अशरफ अली थानवी ने ब्यान दिया कि मसलेहतन दुनिया दारी की गर्ज से मीलाद व क्याम की मजलिसों में शरीक हो जाता हूँ कि लोग वहाबी कहना न शुरू कर दें।

ताजीम भी करता है नजदी तो मरे दिल से

सरकारे दो आलम का जब जिक्र मैं करता हूँ

होती है जलन पैदा नजदी तेरे सीने में

वहाबियों देवबंदियों के कारखाने में कौन सी बिदअत की मशीन लगी है जहाँ से हर जाइज़ काम पर बिदअत का फतवा सादिर होता रहता है, बिदअत के माना है नये काम का ईजाद करना, बिदअत हर वह अफ़आल हैं जो बग़ैर गुजरी मिसाल के किया जावे और शरा में बिदअत उस एतेकाद या अमल को कहते हैं जो कि ऐहदे रिसालत के बाद ईजाद हुआ हो लेकिन बिदअत की दो किस्म है बिदअते

हसना, बिदअते सय्यह, बिदअते हसना हर उस नये काम को कहते हैं जिसके ज़रिए किसी सुन्नत में तज़ाद न पैदा हो या उसके खिलाफ न हो जैसे महफिले मीलाद व क़्याम, ख़ूबसूरत आलीशान मस्जिदों की तामीर, मसाजिद में मिनारे और सुतून की तामीर, जलस ए सीरतुन्नबी, जुलूसे ईदे मीलादुन्नबी तरावीह की बा कायेदा जमाअत का एहतमाम, نعمت البدعة هذه यह तो बहुत अच्छी बिदअत है।

और बिदअते सय्यह उस बिदअत को कहते हैं जिसका टकराओ दीन से हो या सुन्नत के खिलाफ़ हो या सुन्नत को मिटाने के लिए हो जैसे जुमा व ईदैन में उर्दू में खुतबा पढ़ना, अन्दुरुने मस्जिद अज़ान देना वगैरा जिसके जिम्न में सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं।

जो शख्स हमारे इस दीन में कोई ऐसी बात निकाले जो दीन में से नहीं है तो वह मरदूद है इस से मुराद वह है जो कि दीन के खिलाफ़ हो या दीन को बदलने वाली हो। देवबंदी वहाबी आकाइद से अपना रिश्ता जोड़ने वाले हज़रात बतायें कि मीलाद व क़्याम, सलात व सलाम या बादे नमाज़ मुसाफ़ह या ईदैन के मुआनेका में कौनसी बिदअते सय्यह पाई जाती है। (हर बिदअत गुमराही है) की कुल्लियत हर बिदअत पर महमूल करने वाले आयाते कुरआनिया और अहादीसे नबविय्या के मफ़ाहीम व मतालिब पंर ग़ौर तो किये होते अगर हर बिदअत ज़लाला है तो मौजूदा कुरआने मजीद भी पढ़ना बिदअत है और (मआज़अल्लाह) मज़हबे इस्लाम के खिलाफ़ है क्योंकि ऐहदे रिसालते मआब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम में जो कुरआन था न तो वह एक जिल्द में था न उसमें तीस पारे थे न रुकू और न उसके हुरूफ़ पर ऐराब लगे हुए थे यह सब बिदअती काम सरकार सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद वकू पज़ीर हुए हैं इसी तरह बहुत से उमूर ऐहदे रिसालत के बाद अन्जाम दिये गए हैं बिदअत से बचने का एक ही रास्ता है कि वह मस्जिदें बनाई जायें जो सरकार के ज़माने में थीं वही कुरआन लाया जाए

जैसा सरकार के जमाने में था मगर ऐसा कभी नहीं हो सकता
मुसलमान महफिले मीलाद मनाए विलादते रसूल पर खुशियाँ मनायें
तो बिदअत है और मजहबे इस्लाम के खिलाफ है हैरत है बुगजे नबी
पर लानत है इस गन्दी जहानियत पर।

वह जो न थे तो कुछ न था वह जो न हों तो कुछ न हो
जान है वह जहान की जान है तो जहान है।

सिराजुल क़दरी बहराइची
खतीब व इमाम, मुसाफिर खाना मस्जिद,
पाक मोडिया इस्ट्रीट 33
बोहरी मो0 मुंबई 3 मोब0 09870742302



मआखिज

कंजुल ईमान फी तरजेमतिल कुर आन इमाम अहमद रजा कादरी
बरेलवी।

तफसीरे खजाइनुल इरफान..... सदरुलअफाजिल सय्यद नईमुद्दीन

मुरादाबादी

मजामीने मीलादे मुस्तफा..... गुलाम मुस्तफा नकशबन्दी मसऊदी

देवबंद से बरेली..... अल्लामा कौकब नुरानी ओकाइवी

शरीअत..... (मोल्वी पालन हक्कानी की किताब
शरीअत या जिहालत का रद) अल्लामा
अरशदुल कादरी।

मुसविदात..... अल्लामा अब्दुल सत्तार हमदानी
मसरुफ पोरबंदर।

माहनामा आला हजरत(बरेली)..... सितम्बर 1986 ई0

माहनामा आला हजरत(बरेली)..... नवम्बर 1999 ई0

माहनामा आला हजरत(बरेली)..... फरवरी 2000 ई0

माहनामा कंजुल ईमान(देहली)..... फरवरी 2001 ई0

~~हमदानी~~..... ~~मुजिमा अदालत में~~

किया आपने

इस्लामी हीरे

(सुन्नी कोइज)का मुताला किया?

तकरीबन छः हजार सवाल व जवाब पर
मुश्तमिल जिस का हर घर में होना जरूरी है।

हृदय ए तशककुर

जिस तरह कौम व मजहब की पहचान, ज़बान, तहजीब, तमददुन से होती है ठीक उसी तरह मोमिन की पहचान उसके तक़्वा व तहारत व सिदक़ गोई और अकीदगी व ईमान की पुख़्तगी से होती है इसके रसूल की चिंगारी व शमअे नुबुव्वत की ज़िया बार किरनों से जिनके दिल मुनव्वर होते हैं वही आशिके रसूल मोमिने सादिक़ कहलाते हैं वरना नमाज़, रोज़ा, हज व ज़कात सदकात व ख़ैरात तसबीह व मुसल्ला से मुज़य्यन दूर दराज़ करया करया शहेर शहेर सय्याही करने से कुछ भी हासिल नहीं होता सिर्फ़ मुरग़गन गिजाये कोरमा कोफ़ता से शिकम परवरी होती है साफ़ व शफ़फ़ाफ़ दराज़ पैराहन व जबीने सियाह और लम्बी मिस्वाक तवील सजदे शीरी कलामी, अज़हान व ईक़ान क़ल्ब व जिगर वहांबियत, नजदियत, नेचरियत का मलम्मा साज़ी तो कर सकते हैं मगर सरवरे दो जहाँ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से दीवान्गी, वारफ़तगी और सच्ची अकीदत का रास्ता हमवार नहीं कर सकते शाह व गदा अमीर व ग़रीब बादशाह व रिआया, मुफ़लिस व नादार, बेकस व मजबूर जिसके दरबारे गोहर बार में कास ए गदाई लिए कह रहे हों।

ऐ शहे अर्ब व अजम कि खड़े हैं मुन्तज़िरे करम
वह गदा कि तूने अता किया है जिन्हें दिमागे सिकन्दरी

उस ज़ात के तअल्लुक़ से यह कहना कि मआजअल्लाह मजबूरे महेज़ हैं। या मर कर मिट्टी में मिल गए हैं या उन्हें कुछ भी इख़्तियारात हासिल नहीं किया यह मोमिन की अलामत है ?

मुजरिम अदालत में हमने हत्तल मक़दूर उन सफ़ाकों के काले करतूतों को उजागर करने की कोशिश की है जिसका पहला एडीशन शायी होते ही ख़तों के जरये और फ़ोन पर मुबारक बादी के पैग़ाम आना शुरू होगए आपके ज़ौके तलब की वजह से बहुत ही क़लील अरसे में किताबें ख़त्म हो गईं। लिहाज़ा हम दूसरा एडीशन आप के

मैं गुस्ताखे बसूल था

मैं अपनी जिन्दगी के उस सुहाने वक़्त को कभी नहीं भूल सकता जब मौलाना सिराजुल कादरी बहराइची की "मुजरिम अदालत में" नामी किताब के मुताला ने मेरे बातिल अक्कीदे के शीश महेल को रेजह रेजह कर दिया और मेरा दिल नूरे इरफ़ान से मुनव्वर हो गया - वाक़ेआ कुछ इस तरह है कि एक बुक इस्टाल पर जब मेरी नज़र इस किताब पर पड़ी जिसके टाइटल पर शातिमाने रसूल जन्जीर पहने हुए गुंबदे रज़ा से बंधे हुए थे।

किताब ख़रीद कर मुताले की मेज़ पर लाया और वरक़ गरदानी शुरू की जूँ जूँ आगे बढ़ता रहा वहाबियों, देवबंदियों के काले करतूत और सियाह चहरे से पर्दा उठता रहा और आतिशे ग़ज़ब भड़कता रहा बादहू मेरी आँखों से अश्क़ रवाँ होगा कि मैं कितना बद नसीब था जो अभी तक अंधेरो में भटकता रहा अंबिया व औलिया की शान में गुस्ताखियाँ करता रहा बहेरहाल "मुजरिम अदालत में" किताब के अन्दर दिये हुए हवाला जात को वहाबी धर्म की रुखा ए ज़माना किताबों में देखने के बाद सुन्नी सहीहुल अक्कीदा मसलके आला हज़रत का सिपाही और दावते इस्लामी का नुबल्लिग़ बनने का शरफ़ हासिल हो गया परवर दिगारे आलम अपने हबीब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सद्के व तुफ़ैल में ता जिन्दगी इस राहे हक़ पर साबित क़दम रखे और "मुजरिम अदालत में" किताब को मक़बूले ख़ास व आम बनाए और मौलाना सिराजुल कादरी बहराइची को मजीद दीन व सुन्नियत की तबलीग़ व इशाअत की तौफ़ीक़ बख़शे (आमीन)

मोहम्मद अशफ़ाक़ रज़वी अत्तारी
बिन मोहम्मद हफ़ीज़ उर्फ़ बाबू करया चौक
नासिक रोड महाराष्ट्र मोब 0,9326165489

तकरीज

हजरत अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद अशरफ रजा

कादरी मिसबाही मुफ्ती व काजी इदारा शरईया महाराष्ट्र

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिलआलमीन, सल्लल्लाहो तआला अला सय्येदुना मोहम्मदिव्व
आला आलेही व असहाबेही व बारिक वसल्लिम।

हक व बातिल और नूर व जुल्मत के दरमियान हमेशा मअरका आराइ रही है
चौदहवीं सदी में अंग्रजों की नुसरत व शैह पर वहाबियों की तमाम शाखों (गैर
मुकल्लिद, देवबंदी, नदवी, तबलीगी, मौदूदी) ने कुरआन व हदीस के नाम पर इक्कारे
जरूरियाते दीन मसलन अल्लाह व रसूल अज्जा वजल व सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लिम
की तनकीस व तौहीन शुरू कर दी तो हजराते उलमा ए ऐहलेसुन्नत व जमाअत
बिलखुसूस आलाहजरत सय्येदुना इमाम अहमद रजा कादरी और उनके खुल्फा व
मुतअल्लिकीन ने हिमायते दीनो सुन्नियत के लिए सर फरोश मुजाहिदों की तरह मैदाने
अमल में आगे उनके एहककाके हक व इबताले बातिल की धमक से ऐवाने बातिल
लरज उठा हकाइक का सामना करने से वह बराबर कतराते रहे मगर दरे पर्दा अपने
बुजुरगों के अकाइद व नजरियात और सेरो अखलाक को मुतजाद तौर पर शाय्या करते
रहे, पासबाने मिल्लत अल्लामा मुशताक अहमद निजामी व रईसुलकलम अल्लामा
अरशदुलकादरी रहमतुल्लाहि अलैहिमा ने खून के आँसू व जलजलह वगैरह में उनकी
खूब खूब नकाब कुशाई फरमाई है मनाजिरे ऐहलेसुन्नत अल्लामा अब्दुरसत्तार
हमदानी भी अपनी तहरीर व तकरीर में उनकी खूब खबर ले रहे हैं जैसा कि फाजिले
जलील हजरत मौलाना काजी सिराजुलकादरी बहराइची मददाजिल्लुहुलआली ने इल्मी
दयानत व कल्मी सदाक़्त का बरमला ऐतराफ किया, हजरत मौलाना सिराजुलकादरी
हिमायते दीन व सुन्नियत में मदरसा महफिल इमामत व खिताबत बज़्म व अन्जुमन
तहरीर व तकरीर का कोई मौका हाथ से जाने नहीं देते तरदीदे वहाबिया में सीमाब की
तरह मुतहरिक व फुआल रहते हैं मौला तआला अपने फज्लो करम से उन्की इस
तरतीब यानी **मुजरिम अदालत में** को उनके फौजो फलाह का जरिअह बनाए और
हम सबको खैर की तौफीक अता फरमाए। आमीन

मोहम्मद अशरफ रजा कादरी

11 जमादिल उल्ला 1424 हिज 12 जुलाई

2003 ई०शं०ह

लेखक की दूसरी किताबें

- इस्लामी हीरे (सुन्नी कुइज़)
- गुस्ताख कलम
- अनवारे कुरआनी
- कब्र से जन्नत तक
- माँ का आँचल
- तोहफा-ए-रमज़ान
- तोहफा-ए-निकाह
- असहाबे कहफ
- पयामे रहमत
- असली सय्यदा बीबी की कहानी
- असली दस बीबीयों की कहानी
- मुजरिम अदालत में
- लोहाबे देहने मुस्तफा ﷺ
- दशते कर्बला ✓

GHAZI KITAB GHAR

Gangwal Bazar, Distt. Bahraech (U.P.)